राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता
फ़िल्म निर्देशक
अतनु बिस्वास
द्वारा रचित
एक मूल पटकथा
पर आधारित
नायिका
अतनु बिस्वास
करन

मोंटाज फ़िल्म एंड टेलीविज़न अकादमी

प्रस्तुति

नायिका

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म निर्देशक अतनु बिस्वास द्वारा

रचित

एक मूल पटकथा पर आधारित

अतनु बिस्वास

और

करन निम्बार्क

द्वारा लिखित एक उपन्यास

मेरी प्यारी दीदी 'स्मृति गोपालन',
'कविता + सुनील शर्मा'

और

"संघर्ष के उन सभी सहयात्रियों को समर्पित"

जिन्होंने शोहरत की ख़ातिर,
मुंबई तक मीलों दूर की यात्रा तय की ।
कई सालो से अपने घर-परिवार से दूर,
किराए के मकान में रहे ।
रूखी सूखी ज़िंदगी जी और अनगिनत मुसीबतों
के बाद भी एक काल्पनिक शोहरत के इंतजार में
कभी भी घर वापस नहीं लौटे...
लेकिन
हमारा नायक बिभूति घर वापस लौटता है...
क्यों ?

अनुक्रमाणिका

१. एक नायिका की मौत

रोज़ की तरह घड़ी की सुइयां तो अपनी रफ़्तार पर थीं पर यहाँ, महानगर पोलिस थाने में, ५ फ़ुट १० इंच लम्बे, सुडौल शरीर पर तंग खाखी वर्दी पहने इंस्पेक्टर शिंदे, एक ही घूँट में कप की चाय को हलक में उतारता हैं और पूछताछ कमरे की ओर बढ़ता है | साथ ही साथ हवलदार जाधव, जिसका पेट कंगारू के बच्चे की तरह कमीज़ से बाहर आ रहा है, वो भी हो लेता है |एक काला-सा कमरा जहाँ अँधेरा काजल को भी मात दे दे | उसपर, उस कालिख में चुभती सी रोशनी में एक आदमी बैठा है जिसके चेहरे पर रोशनी ऐसे गिर रही है जैसे सफेद नाग | कटी-फ़टी जीन्स और भुजाएँ दिखाती टी-शर्ट, बालों में सुनहरा सा रंग लगाए, पूछताछ कमरे के बीचोंबीच, बिना हाथ वाली लकड़े की कुर्सी पर बैठे उस २८ साल के शख्स का नाम है आदी कोहली | शिंदे ने अपनी आँखों की पुतलियों को बड़ा करते हुए पूछा,
"तो तू एक अच्छा इंसान है"
"बिलकुल मैं एक अच्छा इंसान हूँ | आप किसी को भी पूछ लीजिए..."
आदी जैसे कि इंस्पेक्टर शिंदे को अहसास कराना चाहता था कि वो एक अच्छा इंसान है, पर इंस्पेक्टर सिर्फ़ प्रशिक्षण यानि कि ट्रेनिंग लेकर नहीं बल्कि अनुभव लेकर बना जाता है |शिंदे, आदी की जन्मकुंडली पहले ही निकाल चुका था | शिंदे पलटवार करता है

कि आदी ने सूरत शहर में जो करतूत की हैं वो उससे वाक़िफ़ है | आदी भी तुरंत अपनी सफाई देता है कि यह तो बड़ी पुरानी बात है | अब तो वैसे भी आदी ने वो सारे धंधे बंद कर दिए हैं | शिंदे को यह बात तो हज़म होने से रही |

"तो फिर रिचा सिंह के हीरे की अंगूठी और बैंक पासबुक तेरे घर में क्या कर रही थी ?"

आदी, शिंदे को भरोसा दिलाने की एक और कोशिश करता है,

"सर, मैं ही तो उसका सारा कामकाज देखता था | तो ज़ाहिर सी बात है कि..."

शिंदे तपाक से बात काटते हुए,

"और जब रिचा सिंह ने तुझे काम से बेदखल कर दिया तो तूने उसको ही दुनिया से बेदखल कर दिया ?"

पोलिस थाने आकर तो सच भी कभी कभी घबराता होगा फिर आदी तो... आदी, शिंदे के सामने पिछली रात की घटना का सारा सच बताने की कोशिश करता है कि उसने पिछली रात बेहिसाब पी रखी थी और वो भला रिचा को क्यों मारेगा ? शिंदे, आदी पर पूरी बात बताने का ज़ोर डालता है | तब आदी बताता है कि,

"उस रात मैंने बहुत ज़्यादा पी हुई थी | क़रीबन रात को १ बजा होगा, क्योंकि जब मैं बिल्डिंग में पहुँचा तो बिल्डिंग के बाहरी गेट पर ताला लगा हुआ था और सिर्फ़ एक ही लिफ़्ट चालू थी| दरअसल जब ६ महीनों पहले हमारे बिल्डिंग से ५० लाख के हीरे चोरी हुए थे तब से चौकीदार रात को १२:३० के बाद बिल्डिंग के गेट पर ताला लगा देता है और सिर्फ़ एक ही लिफ़्ट चालू रखता है | मुझे देखते ही चौकीदार ने गेट खोला | सर मैंने तो इतनी पी रखी थी कि मुझे तो पता ही नहीं चला कि कब मैं ९वीं
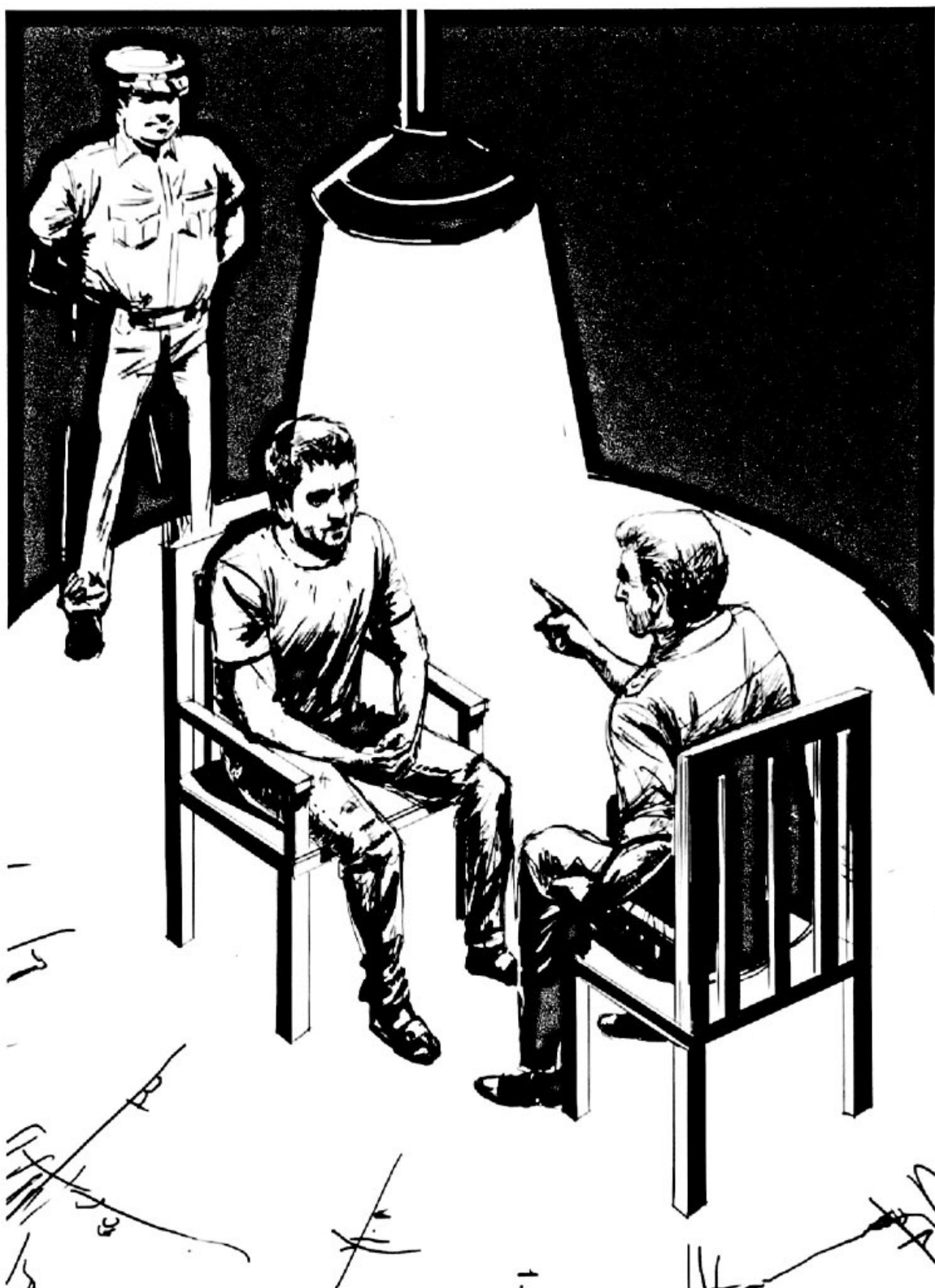
इंस्पेक्टर शिंदे कहाँ मानने वाला था। फिर एक सवाल झड़ दिया घूरती आँखों के साथ, "याद नहीं हैं या याद नहीं करना चाहता?"

मंज़िल पर पहुँच गया | लिफ़्ट से बाहर आकर फ़्लैट की चाबी निकाली और दरवाज़ा खोलकर अंदर गया | मैं सीधा हमारे यानि कि रिचा सिंह के कमरे में गया और मैंने देखा कि रिचा तो पलंग पर सो रही थी | मैं इतना थका हुआ महसूस कर रहा था कि मैंने तो कपड़े भी नहीं बदले और रिचा के बाजु में ही सो गया | बस सर, यही सच है और इससे ज़्यादा मुझे कुछ भी याद नहीं |"

इंस्पेक्टर शिंदे कहाँ मानने वाला था | फिर एक सवाल झड़ दिया घूरती आँखों के साथ,

"याद नहीं है या याद नहीं करना चाहता ?"

आदी कहता है,

"मुझे तो सिर्फ़ इतना ही याद है, जब मैं सुबह उठा तो देखा कि रिचा तो मेरे बाजु में मरी पड़ी है | विश्वास कीजिए सर, यही सच है |"

शिंदे के होठों पर एक सवालिया मुस्कान,

"अच्छा ! तो यह बता कि वो मरी कैसे ? किसने मारा उसे ?"

आदी के ललाट पर पानी की बूँदे जमा हो रही हैं |

"पता नहीं सर..."

शिंदे व्यंग्य कसते हुए,

"बिलकुल सही है | आपको कैसे पता होगा ? आपने तो ज़रूरत से ज़्यादा पी रखी थी |"

जाधव पीछे ही खड़ा कंगारू के बच्चे यानि कि अपने पेट को सहला रहा है | शिंदे, जाधव से,

"आत मधे टाक रे ह्याला | अभी इसको बराबर याद दिलाना पड़ेगा|"

शिंदे दहाड़ने के बाद पूछताछ कमरे से बाहर चला जाता है और

जाधव, आदी को हवालात में डाल देता है |
समय अपनी चाल चलता रहता है और अब अँधेरे पूछताछ कमरे से निकल कर समय आ पहुचा है भारत सरकार की एक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी के कैंटिन में | कैंटीन भी इतना आलिशान कि कोई छोटा-मोटा ऑफिस भी इतना आलिशान, इतना बड़ा नहीं होगा | यहाँ व्यवस्थित और तौर तरीके से जीने वाले लोगों की भीड़ है | सुबह का समय होने के कारण कुछ एक मेजो पर दो-चार लोग बैठे हैं | पूरी ऑफिस में शायद यही एक जगह होगी जहाँ साँस तो अपनी मर्ज़ी से ली जा सकती है | आगे बढ़ने से पहले उसका भी ज़िक्र कर लें जिसका ज़िक्र बारबार होता रहा है और आगे भी होगा - रिचा सिंह | धरती पर अगर आज के युग की अप्सरा की कल्पना की जाए तो वो होगी रिचा सिंह, ख़ूबसूरती ऐसी मादक कि पुरुष बिना पीए ही बहक जाए और स्त्रियाँ; उन्हें तो ठंड में भी १०४ का पारा चढ़ जाए | कामुक अदायें, ज़िंदादिल स्वभाव, पब में बियर गटकना और ज़िंदगी के हर लम्हे को जीना | यही तो थी रिचा सिंह, जिसका सिर्फ़ एक ही सपना, एक ही लक्ष्य, एक ही जुनून था, वो था फ़िल्म नायिका बनना और जिसे पूरा करने के लिए वो कुछ भी कर सकती थी | किसी भी हद तक जा सकती थी | यहाँ तक कि किसी की भावनाओं के साथ खेल भी सकती थी |
कैंटीन में ही एक मेज पर विराजमान है बिभूतिभूषण नाग, क़रीबन २७ साल का एक नौजवान, साधारण सा चेहरा, हल्के रंग की कमीज़, तरीके से सँवारे हुए बाल और इस जवानी पर भी अनुभव का मुखौटा, एक गंभीर आवरण सा | बिभूति एक बहुत ही नेकदिल इंसान है और जिसका फ़ायदा अक्सर कई लोग उठाते हैं | ईमानदारी और मासूमियत दोनों का साथ ऐसे व्यक्तियों को न चाहते हुए भी

किसी ना किसी परेशानी में डाल ही देता है | बिभूति की क़ाबिलीयत और उसके गुणों के बावजूद उसके दोस्तों को, उसके करीबियों को यही लगता है कि वो आज की दुनिया के लिए नहीं बना है | आज की दुनिया में ज़रूरी है, थोड़ी सी चालाकी | बिभूति के सामने एक कुर्सी पर बैठे हुए शिंदे ने चाय का कप नीचे रखते हुए पूछा,
"तो बिभूति मुम्बई में कब से रहते हो ?"
"लगभग पाँच साल से"
शिंदे ने फिर पूछा,
"और इस कंपनी में कब से काम कर रहे हो ?"
बिभूति ने स्पष्ट किया कि मुम्बई में यह उसकी पहली नौकरी है और तब से इसी कंपनी में है |
"और क्या काम करते हो तुम ?"
बिभूति समझ जाता है कि अब इंस्पेक्टर को हर सवाल का जवाब विस्तार से देना होगा | बिभूति बताता है कि यह एक दवा निर्माता कंपनी है और बिभूति का काम दवाईयों के दस्तावेज़ का हिन्दी में अनुवाद करना है | इसके अलावा कंपनी की मासिक पत्रिका जिसमे नई दवाईयों और अनुसंधान के विषय में छपता है, बिभूति उसका संपादक भी है | बिभूति को लगा कि इंस्पेक्टर को अब तो काफ़ी कुछ जानकारी दे दी है, अब तो शायद वो चला जाए, पर शिंदे का तो काम ही है लोगों का इतिहास खंगालना |
"यहाँ मुम्बई में किसके साथ रहते हो ? घर परिवार है ?"
बिभूति कहता है,
"नहीं, मैं यहाँ अकेला ही रहता हूँ | घर तो खड़गपुर में है |"
खड़गपुर का नाम सुनते ही शिंदे अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाते हुए,
"खड़गपुर... कुछ तो ख़ास बात है... कोई कॉलेज है शायद ?"

बिभूति तपाक से कहता है,
"आई आई टी, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के लिए प्रसिद्ध है |"
"अच्छा... और परिवार में कौन-कौन हैं तुम्हारे ?"
बिभूति, शिंदे को बताता है कि वो अपने माता-पिता की इकलौती संतान है |
"और तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?"
"जी, वहाँ खड़गपुर में हमारी दवाईयों की दुकान है |"
शिंदे के पूछने पर बिभूति ने बताया कि तीन साल बी. फार्मा करने के बाद हिन्दी साहित्य से एम. ए. कर रहा है | शिंदे, बिभूति को घूरते हुए पूछता है,
"तीन साल ? जहाँ तक मैं जानता हूँ बी. फार्मा. तो ४ साल की पढ़ाई है ?"
बिभूति ने शिंदे के शक़ का निवारण किया |
"जी बिलकुल ४ साल की ही है पर मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी | मैं तो बस पिताजी के कहने पर कर रहा था | मुझे तो शुरू से ही हिन्दी साहित्य सीखना था |"
कैंटीन से काफ़ी सारे लोग जा चुके हैं | शिंदे बैरे को आवाज़ लगाता है और बिभूति से पूछता है,
"आप और चाय लेंगे ?"
बिभूति सिर्फ़ ना में सिर हिलाता है | फिर शिंदे बिभूति से,
"तुम हिन्दी में वो क्या करते हो ? अनुवाद | तुम हिन्दी में अनुवाद करने वाले और रिचा सिंह एक मशहूर नायिका | रिचा सिंह के हाल ही के फ़ोन कॉल्स देखकर लगता है कि उसकी सबसे ज़्यादा बातचीत तुम्हारे साथ ही होती थी | यह माज़रा क्या है ?"

बिभूति को अब तक पुलिस पूछताछ की समझ हो गयी थी कि जब तक पुलिसवाला ना चाहे छुट्टी नहीं मिलेगी | बिभूति ने अब अपने काम की चिंता करना छोड़ दिया और कुर्सी पर आराम से बैठ कर एक लम्बी सी साँस लेने के बाद बोला,

“क़रीबन डेढ़ साल से जानता हूँ रिचाजी को और आप हमारी पहली मुलाक़ात को एक अनोखा संयोग ही कहेंगे |”

शिंदे की दूसरी चाय आ चुकी है और चाय के कप से पहली चुस्की लेकर बिभूति को उत्सुकता से देखता है | बिभूति शिंदे को शुरुआत से सबकुछ बताता है |

*

ऑफिस के बाथरूम में एक साधारण सा दिखने वाला नौजवान; बिभूति मुँह धो रहा है | ऑफिस के बाकी कर्मचारी घर जाने की तैयारी कर रहें हैं | बिभूति की मेज को देखकर ऐसा लगता है कि घर से ज़्यादा समय वो यही व्यतीत करता होगा | ढ़ेर सारी किताबों के अलावा छोटी भूख के लिए कुछ ग्लूकोस बिस्किट्स भी रखे हैं| बिभूति का एक सहकर्मी दिनेश गुप्ता, जिसकी उम्र लगभग ३३ वर्ष, बालो में से झांकती सफेदी, आँखों में जैसे अंगार और शरीर में ढीलापन; वो बिभूति की मेज के पास ही चहलकदमी कर रहा है और अपने मोबाइल फ़ोन पर किसी को समझाने की आख़िरी कोशिश कर रहा है | फ़ोन काटते ही दिनेश गुप्ता के दिमाग में उसकी समस्या का समाधान आता है और वो दौड़ते हुए सीधा ऑफिस के बाथरूम में जहाँ बिभूति पहले से ही मौजूद है वहाँ पहुँचता है,

“अरे बिभूति मेरे दोस्त ! तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?”

बिभूति जवाब देता है कि कोई बाथरूम में क्या करने आएगा ? दिनेश उतावलेपन से कहता है,
"ख़ैर तुम्हारी छोड़ो और मेरी बात सुनो | यार, आज मोहन पंजाब बार में पीने का कार्यक्रम था और रमेश साला दगा दे गया | तुम्हें तो पता ही है कि मुझे अकेले बैठ कर पीने में मज़ा ही नहीं आता तो तुम चलो ना साथ ? इतनी शानदार मिन्नत कोई नहीं करेगा?"
बिभूति जैसे साफ़ दिल लोगों के साथ हमेशा से यह परेशानी रही है कि वो किसी का दिल नहीं दुखा सकते | किसी ने थोड़े से हाथ जोड़ लिए, थोड़ी सी मिन्नतें कर ली कि फिर चाहे पहाड़ जैसा काम क्यों ना छोड़ना पड़े, मिन्नत करनेवाले की बात तो माननी ही पड़ेगी और अब बिभूति को भी दिनेश गुप्ता के साथ जाना ही पड़ेगा | बिभूति, शिंदे को बताता है कि पर यह तो डेढ़ साल पहले की बात है क्योंकि अब बिभूति ने सीख लिया है कि,
"अगर हाँ कहने का मन ना हो तो कभी हाँ मत कहो |"
शिंदे आगे पूछता है,
"फिर क्या हुआ ?"
बिभूति आगे बताने लगता है | उस रात दोनों मोहन पंजाब बार में पहुँचते हैं | दिनेश अपनी रम की प्यास बुझाने में तल्लीन हो जाता है | बार को अगर ग़ौर से देखा जाए तो इंद्र की आधुनिक सभा का कोई दृश्य सा लगता है | चारों ओर मंद-मंद मुस्कुराती रोशनियाँ | मुस्कुराते हुए मेहमानों का स्वागत करती हुई युवतियाँ, जो ज़रूरत से ज़्यादा सजे-धजे चमकदार लिबास में खड़ी हैं | ऐसा लगता है जैसे शराब से ज़्यादा नशा तो वे ही हवा में फैला रही हों| जिस भी मेज पर, जिस भी कोने में बैठ जाओ, वहाँ वातानुकूलित हवा का अहसास आप तक पहुँच ही जाएगा |

वातावरण ऐसा कि कभी शराब की महक, कभी सिगरेट की, कभी किसी लड़की के इत्र की, तो कभी पकवानों की | सबकुछ मिलाजुला सा, सबकुछ मिलावटी सा | एक कोने में बने मंच पर संगीत के साथ खिलवाड़ करते चंद युवा, जिन्हें आजकल डीजे के नाम से जाना जाता है | जहाँ बिभूति बेमन से सिर्फ़ एक शीतपेय यानि कि कोल्ड्रिंक से किसी तरह ऐसे माहौल में वक़्त काट रहा है वही दिनेश बड़े मज़े से रम, चिकन टिक्का, लोलीपोप के मज़े उड़ा रहा है | पर जब खर्चे का पर्चा यानि कि बिल आता है तब दिनेश तुरंत अपना बटुआ निकालता है | पर बटुए में देखते ही,
"अरे यार ! बड़ी गड़बड़ हो गई | मेरे पास तो सिर्फ़ यह सौ रूपये ही हैं | मुझपर थोड़ी मेहरबानी कर दो और यह बिल चुका दो | कल तुम्हें लौटा दूंगा |"
बिभूति बैरे को बिल के पैसे अदा करता है | दोनों बार से बाहर आकर किसी रिक्शा या टैक्सी का इंतजार करते हैं | बिभूति अपनी कलाई घड़ी में देखता है, रात के ११:३० बजे हैं | तभी एक खाली रिक्शा आता है जिसमे बिभूति, मदमस्त दिनेश को बिठाकर रवाना करता है | कुछ ही दूरी पर बस स्टॉप है | बिभूति बस स्टॉप की तरफ़ बढ़ता है | बस स्टॉप की तरफ़ चलते हुए बिभूति देखता है कि बस स्टॉप पर एक लड़की जो कि वेस्टर्न कपड़ो में खड़ी है | बिभूति भी चुपचाप वहाँ जाकर ऐसे खड़ा हो जाता है जैसे उस लड़की को देखा ही नहीं, तभी वो लड़की बिभूति से कहती है,
"क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं ?"
"कैसी मदद ?"
बिभूति के पूछने पर लड़की बताती है कि उसका नाम रिचा सिंह

है और उसका पर्स चोरी हो गया है | उसके पास घर जाने तक के पैसे नहीं हैं | बस, उसे घर पहुँचने में मदद चाहिए | बिभूति मुस्कुराकर कहता है,
“कोई बात नहीं | पर, सबसे पहले आपको पुलिस में शिक़ायत दर्ज करवानी चाहिए |”
इस पर रिचा तपाक से कहती है,
“नहीं, नहीं | देर रात पुलिस के पास बिलकुल नहीं | एकबार पहले भी पुलिस का चक्कर झेल चुकी हूँ |”
बिभूति उसकी परेशानी समझ जाता है |
“ठीक है, पर आप रहती कहाँ हैं ?”
रिचा बताती है कि वो अंधेरी में रहती है | बिभूति बताता है कि वो गोरेगांव रहता है, तो वो दोनों एक टैक्सी कर लेते हैं | ताकि बिभूति, रिचा को उसके घर, अंधेरी छोड़ते हुए वहाँ से गोरेगांव निकल जायेगा | दोनों टैक्सी में बैठते हैं | रास्ता ज़्यादा लंबा नहीं था पर टैक्सी में बातें कुछ ज़्यादा ही लंबी हो गई | टैक्सी रिचा के बिल्डिंग के बाहर पहुँचती है और रिचा टैक्सी से बाहर उतरती है,
“मैं यहाँ दो लडकियों के साथ रहती हूँ और उन्हें रात को किसी भी मर्द का आना पसंद नहीं है, वर्ना मैं आपको ऊपर ज़रूर बुलाती|”
“कोई बात नहीं | आज आ जाता तो शायद दुबारा आने की वजह ना बचती | आपसे दुबारा मिलकर और भी ख़ुशी होगी |”
रिचा मुस्कुराते हुए बताती है कि उसे बिभूति के पैसे भी चुकाने हैं| बिभूति का मोबाइल नंबर तो ले ही लिया है सो वो जल्द ही बिभूति को फ़ोन करेगी | बिभूति तुरंत कहता है,
“आप पैसों की चिंता छोड़िए | ऐसा समझिए कि मेरी ओर से छोटी

सी ट्रीट थी और हाँ, मुझे आपके फ़ोन का इंतजार रहेगा |"
रिचा, बिभूति को मुस्कुराते हुए विदा करती है और टैक्सी हवा में बातें करती हुई वहाँ से अदृश्य हो जाती है | शिंदे अपनी गर्दन को एक विशेष अंदाज़ में मरोड़कर कहता है,
"बड़ी दिलचस्प कहानी है | मौक़ा पाते ही लड़की से दोस्ती कर ली| वो भी एक फ़िल्म नायिका से !"
बिभूति स्पष्ट करता है कि डेढ़ साल पहले रिचा कोई फ़िल्म नायिका नहीं थी | सिर्फ़ एक स्ट्रग्लिंग एक्ट्रेस थी |
"फिर भी, थी तो इतनी ही ख़ूबसूरत ? तुमने फिर उसे फ़ोन किया होगा ?"
बिभूति बताता है कि उसने नहीं बल्कि ख़ुद रिचा ने ही बिभूति को फ़ोन भी किया और घर पर भी बुलाया था | रिचा चाहती थी कि रिचा ने जो पटकथाएँ लिखी हैं, बिभूति उन पटकथाओं को रिचा के दोस्त, आदी के लैपटॉप में हिन्दी में टाइप कर दे | शिंदे बिभूति की ओर झुकते हुए पूछता है,
"ऐसी क्या ख़ास बात है तुम्हारे अंदर कि रिचा सिंह को तुम्हीं से टाइपिंग करवानी पड़ी ?"
बिभूति समझ गया कि शिंदे, रिचा और उसके बीच किसी रिश्ते को तलाश कर रहा है | बिभूति कहता है,
"एक दिन रिचाजी ने मुझे उनके घर बुलाया और अपनी पटकथाएँ दिखाईं | कोई फ़िल्म निर्माता हैं, आसिम मल्लिक, जिनके साथ शायद रिचाजी की फ़िल्म बनाने के बारे में बात हुई थी | आसिमजी चाहते थे कि रिचाजी वो पटकथाएँ हिन्दी में टाइप करके उन्हें दे दे, पर रिचाजी को तो हिन्दी टाइपिंग ही नहीं आती थी | आप तो समझ ही सकते हैं कि किसी और से या बाहर से टाइप करवाना

भी एक जोखिम ही था | पटकथा चोरी हो जाने का जोखिम | शायद रिचाजी को मुझपर भरोसा था इसीलिए वो मुझसे टाइप करवाना चाहती थी |"

शिंदे कैंटीन के दरवाज़े की ओर देखकर,

"अच्छा... फिर तो तुम रिचा सिंह के बहुत क़रीबी हो गये होंगे ? वो अपने काम में कैसी थी ? मतलब अभिनय और लेखन में ?"

बिभूति अपनी कलाई घड़ी में देखता है,

"रिचाजी बतौर नायिका और लेखिका काफ़ी परिपक्व और प्रतिभाशाली थीं | कभी सोचा नहीं था कि वो इतनी जल्दी दुनिया को अलविदा कह देंगी | सर, मुझे ऑफिस के ज़रूरी काम से कहीं जाना है | अगर आपकी पूछताछ पूरी हो गई हो तो मैं इजाज़त चाहूँगा..."

शिंदे सिर हिलाते हुए,

"हाँ, फ़िलहाल तुम जा सकते हो | वैसे भी अब मैं मि. दिनेश से बात करूँगा |"

बिभूति अचरज से,

"कौन ?"

"आपका सहकर्मी, दिनेश गुप्ता से |"

बिभूति के मन में कंपन सा होता है पर वो हल्का सा मुस्कुराता है और शिंदे से हाथ मिलाकर कैंटीन से बाहर चला जाता है | शिंदे चाय के कप में ऐसे देखता है जैसे उसमे कोई राज़ छिपा हो |

२. क़ातिल की तलाश

एक अतिआधुनिक सभागृह जिसे कांफ्रेंस रूम भी कहते है, उसमे दिग्गज जैसे दिखने वाले लोग, डॉ. रामकृष्णन राव और साथ में बिभूति भी मौजूद है | रामकृष्णन ४५ के क़रीब, ललाट पर तेज, आवाज़ में जोश और कपाल पर बचे खुचे बाल | डॉ. राव पर्दे यानि कि प्रोजेक्टर स्क्रीन पर कोई फ़िल्म दिखा रहे हैं, जिसके ज़रिए डॉ. राव शीतनिद्रा यानि कि हाइबरनेशन के विषय में बात कर रहे हैं | डॉ. राव बताते हैं कि शीतनिद्रा की शोध में वो एक चमत्कारिक सफलता के बहुत क़रीब हैं |

"शीतनिद्रा, जिससे हम अंतरिक्ष यात्रियों को निष्क्रिय परंतु जीवित अवस्था में ग्रहों की अंतरिक्ष यात्रा पर भेज सकेंगे | हम बहुत ही शीघ्र मानवीय परीक्षण प्रारंभ करने की एक योजना बना रहे हैं | हम कार्यकर्ताओं को शीतनिद्रा में भेज देंगे जिससे वो कई महीनों तक सो सकते हैं | इसके लिए हमने रासायनिक नमक और बर्फ़ से एक विशेष प्रकार का मिश्रण तैयार किया है जो इंजेक्शन की सहायता से शरीर के भीतर पहुँचाया जा सकता है | यह मिश्रण मेटाबॉलिज़्म को धीमा करके शरीर को शीतनिद्रा में ले जायेगा | जो व्यक्ति शीतनिद्रा की अवस्था में होगा उसके शरीर को नसों या रक्तवाहिनियों के माध्यम से भोजन दिया जायेगा | उस व्यक्ति की शारीरिक क्रियाएं सामान्य ही रहेंगी, जैसे बाल और नाख़ून बढ़ना, वृद्ध होना | ठीक जैसा कि समूर्च्छा यानि कि कोमा में गए

व्यक्ति के साथ होता है | एक समस्या होगी, वो यह कि मानव मल से निपटना होगा | आपको बता दूँ कि भालुओं के साथ यह मल वाली समस्या नहीं होती |"
फिर डॉ. राव प्रोजेक्टर स्क्रीन पर शीतनिद्रा से संबंधित चित्र दिखाते हैं | जहाँ एक तरफ़ बिभूति इस जटिल विषय को समझने में व्यस्त है वही दूसरी तरफ़ शिंदे कैंटीन में, दिनेश गुप्ता से बिभूति का चरित्र समझने में व्यस्त है | शिंदे कड़क आवाज़ में पूछता है,
"बिभूतिभूषण नाग के विषय में जो कुछ भी जानते हो सब सच सच बताओ ? सब कुछ मतलब सबकुछ ?"
दिनेश बिंदास किस्म का व्यक्ति है, वो अपने बिंदास अंदाज़ में कहता है,
"बिभूति तो हीरा है हीरा | आजकल ऐसा आदमी ढूंढने से भी नहीं मिलता | पता नहीं, इतना समझदार इंसान कैसे इस कंपनी में इन बेवकुफो के बीच फंस गया ? सच पूछो तो पूरी कंपनी में बस एक बिभूति ही है, जिसको मैं पसंद करता हूँ |"
डॉ. रामकृष्णन राव आगे बताते हैं,
"आणविक जीव वैज्ञानिक मार्क्स रोथ ने चूहों पर टॉक्सिक हाइड्रोजन सल्फाइड गैस छोड़ने के बाद उनमे एक रासायनिक प्रतिक्रिया प्राप्त की | एक छिपी हुई शीतनिद्रा, जो लगभग सभी मामलों में मिलती है | मानव शीतनिद्रा को एक बड़ी सफलता तब मिली, जब जापान में पार्टी से लौटते समय एक ३५ वर्षीय कारोबारी मित्सुका उचिकोसी का बर्फीले पहाड़ रोक्को पर पैर फिसला और वही गिरकर बेहोश हो गए | सिर पर आघात लगने के कारण वो बेहोश हो गए थे | २४ दिनों तक बिना भोजन पानी के शीत हवाओं में वो बेहोश ही पड़े रहें | जब वो पहाड़ पर मिले तब उन्हें तो मृत

समझ लिया गया था | बाद में, जब उन्हें कोबे सिटी जनरल हॉस्पिटल लाया गया तब एक आश्चर्यजनक घटना घटी | उन्हें होश आ गया | यह उन डॉक्टरो के लिए भी हैरान कर देने वाली बात थी जो उचिकोसी के गंभीर हाइपोथर्मिया और रक्त हानी का ईलाज कर रहें थे | क्योंकि, उचिकोसी बिना किसी मस्तिष्क की चोट के पूरी तरह से स्वस्थ हो चुके थे | उनका ईलाज कर रहें डॉक्टरो का कहना था कि उचिकोसी एक प्रकार की शीतनिद्रा में चले गए थे और इसी कारण से वो इतने दिनों भूखे-प्यासे और बर्फीले पहाड़ में रहने के बावजूद भी बच गए | अगर ग़ौर करें तो ऐसी तमाम घटनाए प्रकृति के एक ऐसे रहस्य की ओर इशारा करती हैं जो अब तक दुनिया के समक्ष नहीं आ सका है | देखा जाए तो इन लोगों की जान बची हैं तो निष्क्रिय अवस्था में जाने के कारण |"

डॉ. राव की आवाज़ में उत्साह हैं | वो आगे बताते हैं,

"अगर हम मानवीय परीक्षण करने में सफल होते हैं तो हम इसका बेहतरीन प्रयोग कर सकेंगे | जैसे गंभीर या घायल लोगों को अस्थायी शीतनिद्रा में भेजकर उनका ईलाज करना | मैं बहुत खुश हूँ कि भारत में इस विषय पर अनुसंधान चल रहा है और भारत सरकार चाहती है कि मैं भारत लौटकर इस अनुसंधान मैं आपका साथ दूँ | अपने देश, अपने घर लौटना मेरे लिए भी गर्व और खुशी की बात होगी |"

भारतीय दल के लिए यह एक महत्वपूर्ण समाचार है | सभागृह में मौजूद सभी सदस्य तथा बिभूति तालियों से डॉ. राव की बात का समर्थन और स्वागत करते हैं |

*

बिभूति अपने दो कमरों वाले किराए के फ्लैट में लौटता है, तभी उसके मोबाइल पर उसके बचपन की दोस्त राधिका का खडगपुर से फ़ोन आता है | दोनों बातें करते हैं | राधिका अपनी चिंता व्यक्त करती है कि बिभूति अक्सर देर रात घर लौटता है |
"खाना खाया तुमने ?"
बिभूति बताता है कि वो बाहर से खाकर आया है |
"मैंने तुम्हारी फ़िल्म देखी | बहुत अच्छी लगी | मैं यह सोच रहीं थी कि..."
बिभूति राधिका की बात बीच में ही काटते हुए,
"मेरी एक बात तुम समझ लो कि मैंने सिर्फ़ रिचाजी की पटकथा को हिन्दी में टाइप किया है | मैं किसी भी तरह इस फ़िल्म से जुड़ा नहीं हूँ |"
राधिका माफी माँगती है | बिभूति उसे समझाता हैं कि वो यह जानता है कि राधिका उसे भी रिचा सिंह की तरह मशहूर होते हुए देखना चाहती है पर बिभूति के अनुसार हर इंसान की क़िस्मत में मशहूर होना नहीं लिखा होता | बिभूति कहता है,
"मैं बहुत थक गया हूँ | हम कल बात करते हैं | गुड नाईट |"
और बिभूति फ़ोन रख देता है |

*

इंस्पेक्टर शिंदे चाय का ग्लास अपनी मेज पर रखते हुए हवलदार जाधव को आवाज़ लगता है,
"काय रे जाधव, वो रिचा सिंह की बिल्डिंग के सीसीटीवी फुटेज से कुछ मिला ?"

“सर उस रात को उनके बिल्डिंग में रात ८ से सुबह ६ बजे तक सीसीटीवी बंद था |”

“सीसीटीवी बंद था मतलब ?”

“सर मैंने नोटिस किया है कि हर महीने ४-५ दिन उनका सीसीटीवी रात को बंद रहता है |”

इंस्पेक्टर शिंदे अपनी कुर्सी से उठकर मेज के कोने के पास आकर खड़ा होता है |

“क्या ? नाईटवॉचमेन कौन है ? लेकर आ उसको |”

जाधव हाँ में सिर हिलाकर वहाँ से तुरंत चला जाता है और शिंदे, रिचा सिंह की फाइल में खो जाता है | थोड़ी ही देर में जाधव, रिचा सिंह की बिल्डिंग के चौकीदार मगनलाल दुबे को पुलिस थाने लेकर आता है | इंस्पेक्टर शिंदे, मगनलाल से पूछताछ शुरू करता है | मगनलाल ख़ुद को बेक़सूर बताता है और प्रार्थना करता है कि उसे छोड़ दे | शिंदे अब थोडा सा गरम हो जाता है,

“सच सच बता दे मगनलाल ? तू उस रात कहाँ मगन हो गया था जो सीसीटीवी पूरी रात बंद रहा ?”

“साहब यहाँ आप मार रहे हो और अगर सच बोलूंगा तो वहाँ वो मार-मार के मुझे नौकरी से निकाल देंगे | मैं तो वही करता हूँ जो मुझे बोला जाता है |”

“क्या मतलब ?”

मगनलाल डरते डरते कहता है,

“साहब सोसाइटी के सेक्रेटरी और ट्रेजरर जब भी बोलते हैं तो मैं रात को सीसीटीवी बंद कर देता हूँ |”

“पर सीसीटीवी क्यों बंद करने को बोलते हैं तुझे ?”

मगनलाल दबी ज़ुबान से राज़ की बात बताता है,

"कभी-कभी उनके ख़ास तरह के गेस्ट आते हैं तो वो नहीं चाहते कि उनके बीवी-बच्चों को पता चलें, इसीलिए..."
इतना सुनते ही शिंदे मराठी में बोल पड़ता है,
"तिचा माईला... सब सोसाइटी में यही चालू है आजकल |"
शिंदे, मगनलाल के सिर पर हाथ मारते हुए,
"चल निकल, तेरा काम हो गया ?"
और मगनलाल सिर पर पाँव रखकर वहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाता है |

*

पुलिस का काम किसी बंजारे से कम नहीं है, जो तब तक दर-दर भटकता है जब तक सही ठिकाना नहीं मिल जाता | ठीक वैसे ही पुलिसवाले भी तब तक कई लोगों से यहाँ वहाँ मिलते रहते हैं जब तक असली अपराधी सलाखों के पीछे नहीं पहुँच जाता | इसी कड़ी में इंस्पेक्टर शिंदे आ पहुचा है राजू पंजाबी बियर बार में, बार के मालिक राजू पंजाबी से मिलने | यह वही बार है जहाँ आदी कोहली हमेशा देर रात तक शराब पीता है और रिचा सिंह की हत्या वाली रात भी आदी यही पर शराब पी रहा था | राजू बताता है कि आदी उसका बड़ा पुराना ग्राहक है | उसके साथ तो बार में काम करनेवाले सभी बैरो की और मेरी भी दोस्ती हो गई है | शिंदे के पूछने पर राजू बताता है कि रिचा सिंह की हत्या वाली रात भी आदी यहाँ लगभग १२:३० बजे तक बैठा था | राजू आगे यह भी खुलासा करता है कि आदी को बारबार रिचाजी का फ़ोन भी आ रहा था क्योंकि आदी, रिचाजी का नाम ले रहा था |

“सर, उस रात आदी इतना गुस्से में था कि उसने तो रिचाजी को यहाँ तक कह दिया था कि अगर एक और बार मुझे फ़ोन किया तो मैं तेरा खून कर दूंगा | उस रात आदी ने इतनी ज़्यादा पी ली थी कि वो ठीक से खड़ा तक नहीं हो पा रहा था इसीलिए हमें भी आदी की इतनी चिंता हो रहीं थी कि उसे बाइक से जाने से रोका और रिक्शे में बिठाया था |”
शिंदे के क़दम अब आगे का रूख करते हैं और पहुँचते हैं एक ऐसी दुनिया में जहाँ सब असली होकर भी नकली ही हैं | शिंदे, रिचा सिंह की एक दोस्त और फ़िल्म डांसर अमृता शर्मा के पास जाता है जहाँ वो शूटिंग कर रही है | अमृता शर्मा, यही कोई लगभग २५ या २६ के आस पास, गेहुआ रंग, शरीर के हर अंग में ऐसी कसावट जैसे कोई संगमरमर की मूरत हो | कपड़े कुछ ऐसे कि अंग-अंग पानी की तरह बाहर छलकने को मजबूर | शिंदे अमृता से आदी और रिचा के बारे में जानना चाहता है | अमृता कहती है,
“आदी हमेशा शराब पीने के बाद बहुत भावुक हो जाता है और अपना दिल हल्का करने के लिए उसे कोई न कोई चाहिए होता है जिससे वो बात कर सकें | इसीलिए उसने मुझे उस रात पौने एक बजे फ़ोन किया था | बड़ा गुस्से में था वो और रिचा की शिक़ायत कर रहा था कि रिचा ने उसकी सारी योजना ख़राब कर दी |”
शिंदे पूछता है,
“कौन सी योजना ?”
अमृता बताती है कि उसे यह तो नहीं पता कि उन दोनों की या आदी की क्या योजना थी पर यह जानने के लिए कि रिचा कहाँ

शिंदे, रिचा सिंह की एक दोस्त और फ़िल्म डांसर अमृता शर्मा के पास जाता हैं जहाँ वो शूटिंग कर रही है।

है, बाद में अमृता ने रिचा को फ़ोन किया था | फ़ोन करने पर अमृता को पता चला कि रिचा उस रात घर पर ही थी और फ़ोन रखने से पहले उसने अमृता को बताया था कि आदी घर आ गया है |

“सर मैंने सिर्फ़ इतना ही सुना कि वो आदी को बुला रही थी - आदी डार्लिंग और इसके बाद रिचा ने फ़ोन काट दिया था |”

शिंदे इस बात की पुष्टि करना चाहता है कि वो फ़िल्म नायिका रिचा सिंह की ही बात कर रही है | वो अमृता को रिचा की एक तस्वीर दिखाता है जिसे अमृता पहचान लेती है और बताती है कि वो इसी रिचा की बात कर रही है | शिंदे तस्वीर को हाथ में हिलाता हुआ वहाँ से चला जाता है और अमृता भी अपनी शूटिंग में व्यस्त हो जाती है |

३. अदालत

कुछ ही दिनों में प्राथमिक पूछताछ का सिलसिला अदालत में पहुँच जाता है | सरकारी वकील कुलकर्णी, एक अनुभवी व्यक्तित्व, सफ़ेद-काले कपड़ो में, उम्र ४६ के क़रीब, ललाट पर थोड़े बहुत बाल हैं, वो रिचा सिंह, आदी कोहली और अमृता शर्मा के प्रत्येक फ़ोन कॉल की जानकारी अदालत में पेश करते हैं | बिभूति भी यहाँ मौजूद है| कुलकर्णी, न्यायाधीश यानि कि जज के सामने अपनी बात रखते हैं कि प्रस्तुत फ़ोन कॉल्स के दस्तावेज से यह साबित हो जाता है कि राजू पंजाबी और अमृता सिंह ने जो सच बताया उसके आधार पर पुलिस को कोई शक़ नहीं है कि रिचा सिंह की हत्या आदी कोहली ने ही की है |

बिभूति को उन पलों की याद आती है जब वो रिचा के साथ अपनी पसंदीदा जगह समंदर किनारे चट्टान पर बैठा करता था और रिचा अक्सर बिभूति से कहा करती थी,
“तुम अगर खड़गपुर जाकर अपनी बाकी की फार्मेसी की पढ़ाई पूरी कर दो तो तुम्हारे पिताजी भी कितने खुश होंगे |”
बिभूति, रिचा को समझाता था कि उसकी खुशी फार्मेसी करके पूरी ज़िंदगी दवाई की दूकान में बैठने में नहीं है बल्कि कुछ अलग हासिल करने में है |

बिभूति का ध्यान टूटता है जब कुलकर्णी की तेज आवाज़ उसके कानों में पड़ती है | कुलकर्णी, आसिम मल्लिक से सवाल कर रहें हैं जो कि इस वक़्त कठघरे में खड़े हैं | आसिम मल्लिक ३० वर्ष के क़रीब एक खानदानी रईस नौजवान हैं | उनके माथे पर तेज देखते ही बनता है | उसपर उनके हमेशा बन ठन के रहना, कीमती कपड़े और चेहरे पर रुबाब | कुलकर्णी, आसिम को एक तस्वीर दिखाते हैं और उसके बारे में पूछते हैं तब आसिम बताते हैं कि यह तस्वीर रिचा सिंह की है | कुलकर्णी अगला सवाल करते हैं,
"मल्लिक फ़िल्मस ने रिचा सिंह को ३ फिल्मो के लिए बतौर नायिका और लेखिका साइन किया था जिसके लिए रिचा सिंह को कॉन्ट्रैक्ट के मुताबिक ६ लाख रुपये मिले थे | कॉन्ट्रैक्ट ३ साल का है यानि की हर साल एक फ़िल्म | जहाँ तक सभी जानते हैं कि रिचा सिंह की पहली फ़िल्म 'तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी' पर्दे पर आ चुकी है और बहुत ही अच्छा प्रदर्शन भी किया है |"
आसिम सिर्फ़ हाँ में सिर हिलाते हैं,
"जी |"
वकील कब कौन सा सवाल करेगा यह कोई नहीं कह सकता और कौन सा वकील, कौन सा सवाल कैसे करेगा यह भी कोई नहीं कह सकता है | कुलकर्णी बड़ी चालाकी से आसिम से पूछते हैं,
"वैसे पेशे से तो मैं वकील हूँ और फिल्मो का कोई ख़ास ज्ञान नहीं है फिर भी मैं सोच रहा था कि जहाँ आज फ़िल्म बनाना भी एक बड़ा व्यवसाय और जोखिम दोनों ही है तो ऐसे में किसी नए कलाकार को इतना बड़ा मौका देना वो भी एक साथ ३ फिल्मो का कॉन्ट्रैक्ट, मेरा मतलब, फ़िल्म जगत में आप तो इतने कच्चे

खिलाड़ी नहीं लगते ?
आसिम, कुलकर्णी के तीखे कटाक्ष को भांप जाते हैं और उसे उत्तर देते हैं,
"पर मैं फ़िल्म जगत में नया नहीं हूँ, बल्कि हम तो ५० सालो से फिल्में बना रहे हैं | जब मेरे दादाजी ने मल्लिक फ़िल्मस के नाम से फ़िल्म निर्माण का काम शुरू किया था तब से | जैसे जोहरी को हीरे की परख होती है ठीक वैसे ही मुझे कलाकार की पहचान है | एक ही मुलाक़ात में मुझे रिचा की प्रतिभा का अंदाजा हो गया था| मैंने उसकी पटकथा भी पढी और पटकथा की असली कॉपी भी ख़ुद देखी थी | मैंने रिचा के अंदर लिखने का जुनून देखा था और मैं एक फ़िल्म निर्माता हूँ तो पैसे कमाने का, अच्छी फ़िल्म बनाने का मौका कैसे खो सकता था ? यह पटकथा दरअसल तीन भागो में है | इसीलिए मैंने आगे के दोनों भागो के अधिकार भी ले लिए और बदले में पहली फ़िल्म के लिए रिचा को ६ लाख रुपये एडवांस, दूसरी फ़िल्म के ८ और तीसरी फ़िल्म के लिए १० लाख रुपये मंजूर किये थे | कुल मिलाकर हुए २४ लाख, हालाँकि वो आज जीवित नहीं है और सीधी सी बात है कि अगली दो फिल्मो में वो बतौर नायिका तो नहीं होंगी पर कॉन्ट्रैक्ट के मुताबिक १८ लाख रुपये रिचा के माता पिता को ज़रूर दिए जायेंगे |"
रिचा सिंह के माता-पिता जो आज अदालत की कार्यवाही में मौजूद हैं | कुलकर्णी कहते हैं,
"बहुत अच्छा निर्णय लिया है आपने और मेरी शुभकामनाए आपके साथ हैं | ख़ैर, अब मैं आदी कोहली से पूछताछ करना चाहूँगा | आप शायद जानते होंगे ?"
"हाँ, वो रिचा का एजेंट या मैनेजर जो भी कह लो, उसीने मुझे

कुछ ही दिनों में प्राथमिक पूछताछ का सिलसिला अदालत में पहुँच जाता है।

रिचा से मिलवाया था और तन्हाई का प्रस्ताव भी वही लेकर आया था |"
"ठीक है, अब आप जा सकते हैं |"
आसिम कठघरे से बाहर आ जाते हैं और एक हवलदार आदी को कठघरे में लाकर खड़ा करता है | कुलकर्णी, आदी को भी रिचा सिंह की एक तस्वीर दिखाते हुए पूछते हैं कि क्या आदी इस लड़की को पहचानता है ? आदी भी हाँ में जवाब देते हुए,
"यह रिचा की, मेरा मतलब रिचा सिंह की तस्वीर है |"
अब कुलकर्णी अपने सवालात आदी के सामने रखते हैं,
"रिचा सिंह को तुम कब से जानते हो ?"
"मैं रिचा को पिछले तीन सालो से जानता हूँ |"
कुलकर्णी अब जज की ओर मुड़कर उन्हें कुछ जानकारी देते हैं,
"माय लार्ड, रिचा सिंह के बैंक अकाउंट में ६ लाख रूपये आते ही आदी कोहली ने वो पैसे ख़ुद के बैंक अकाउंट में ट्रान्सफर करवा दिए |"
कुलकर्णी अब आदी की ओर मुड़कर,
"क्या तुम अदालत को इसका कारण बता सकते हो ?"
आदी को गुस्सा तो बहुत आ रहा है पर वो ख़ुद को काबू में रखते हुए कहता है,
"क्योंकि रिचा को मुझपर पूरा भरोसा था | मैं ही उनका सारा कामकाज और पैसे सम्भालता था |"
कुलकर्णी के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कान आती है,
"पर यह मेरे सवाल का जवाब नहीं है | मैं बताऊँ ? बड़ी साधारण सी बात है कि इतने सारे पैसे देख कर तुम्हारी नियत खराब हो गई और तुम यह सारे पैसे हडप कर जाना चाहते थे, पर जब रिचा

सिंह को तुम्हारी यह घिनौनी सच्चाई पता चली तो उन्होंने तुम्हें काम से बेदखल कर दिया और शायद वो पुलिस के पास भी जाने वाली थी लेकिन उससे पहले ही तुमने शराब के नशे में रिचा सिंह की हत्या करके उन्हें हमेशा के लिए सुला दिया |"
आदी बौखला उठता है |
"हत्या ? कैसी हत्या ? मैं क्यों मारूंगा रिचा को ? मैं तो जब चाहे रिचा से अपनी ज़रूरत के हिसाब से पैसे ले सकता था |"
कुलकर्णी अपना एक हाथ कठघरे के किनारे पर रखकर आदी से कहते हैं,
"हत्या वाले दिन सुबह-सुबह जब रिचा सिंह बैंक में गई तब उन्हें जैसे ही पता चला कि ६,१५,००० में से सिर्फ़ १५,००० ही शेष बचे हैं तो इसकी शिक़ायत उन्होंने बैंक मैनेजर से की थी, क्योंकि उन्हें तो इस गोलमाल की कोई जानकारी ही नहीं थी | मि. आदी कोहली, जॉइंट अकाउंट होने का बहुत अच्छा फ़ायदा उठाया तुमने |"
आदी कोहली इस आरोप से इंकार करते हुए,
"यह झूठ है | माना कि मैंने पैसे अपने अकाउंट में ज़रूर ट्रान्सफर किये थे पर इन पैसों से मैं रिचा के लिए ही एक कार खरीद रहा था | असल में, मैं यह कार रिचा को तोहफे में देना चाहता था और जब रिचा को इस बात का पता चला तो उसका सारा गुस्सा भी उतर गया था | मैं रिचा से बेइंतहा प्यार करता था | मैं क्यों मारूंगा उसे | आप लोग मेरी बात समझने की कोशिश कीजिए |"
कुलकर्णी कहते हैं,
"चलिए, आपकी सारी बात सच हैं, सही है | अगर वाकई ऐसी ही बात थी तो एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि कार के कागजात आपके नाम पर क्यों है ?"

आदी तपाक से सफ़ाई देता है,
"जब रिचा को कार चलानी ही नहीं आती थी तो उनके नाम पर कागज़ बनाने का क्या मतलब था ?"
सारा कमरा हँसी और ठहाको से गूंज उठता है | कुलकर्णी पूरे कमरे में निगाहें दौडाते हैं और फिर आदी से पूछते हैं,
"पैसे रिचा सिंह के, कार रिचा सिंह के लिए, पर कार के कागजात रिचा सिंह के बजाए तुमने अपने नाम पर बनवाये ? ऐसा क्यों?"
आदी का गुस्सा फूट पड़ता है और बेकाबू हो जाता है |
"अरे, रिचा के कौन से पैसे ? बार बार रिचा के पैसे, रिचा के पैसे कहना बंद करो | उसके पास कोई पैसे-वैसे नहीं थे | वो तो बहुत गरीब घर से थी | मैंने, मैंने यहाँ मुम्बई में उसका ख्याल रखा | उसकी पटकथा बिकवाई | सब मेरे कारण हुआ | मेरी मेहनत का नतीजा है | इसीलिए उन पैसों पर मेरा भी बराबर का हक है |"
कुलकर्णी शांत लहजे में कहते हैं,
"हो सकता है जो तुम कह रहें हो सही हो पर फिर भी पटकथा की लेखिका तो रिचा सिंह ही थी, दिमाग तो उन्ही का था, फिर पैसों पर एकमात्र अधिकार सिर्फ़ उनका ही होगा, तुम्हारा नहीं |"
आदी मुँह बिगाड़ते हुए,
"पहली बात यह कि यह पटकथा उसकी थी ही नहीं और ना ही उसने लिखी थी | यह तो वहाँ बैठे उस आदमी ने लिखी है |"
आदी जैसे ही बिभूति की तरफ़ इशारा करता है सबकी नज़रें बिभूति पर जाकर ठहर जाती हैं | कुलकर्णी फिर भी स्पष्ट करना चाहते हैं इसीलिए पूछते हैं,
"किसकी बात कर रहे हो ?"
आदी हाथ से बिभूति की ओर इशारा करके बताता है,

"वो वहाँ बैठे बिभूतिभूषण नाग की |"

*

बिभूति गवाह के कठघरे में खड़ा है | वो शांत भाव से कहता है,
"मैं कोई लेखक नहीं हूँ | मैं सिर्फ़ हिन्दी में टाइपिंग करना जानता हूँ | मैंने रिचाजी की पटकथा को आदी के लैपटॉप में हिन्दी में टाइप करके दिया था | मुझे नहीं पता आदी झूठ क्यों कह रहे हैं?"
आदी की आँखे अंगारों में बदल रही हैं और वो ख़ुद को बड़ा बेबस-सा महसूस कर रहा है | आदतन वो अदालत में भी बिभूति की बात को बीच में काट देता है,
"क्यों झूठ बोल रहा है बे बिभूति ? सच बता इन सबको ?"
अदालत के कमरें में मौजूद लोगों के लिए आदी एक हास्य का पात्र बन चुका है | जज आदी को आगे से ऐसी हरकत न करने के लिए सावधान करते हैं |
बिभूति आगे बताता है,
"भला मैं क्यों झूठ बोलूंगा ? मेरा रिचाजी के साथ कोई व्यक्तिगत रिश्ता नहीं था | वैसे भी वो अपनी निजी बातें ना ही मुझे या ना ही कभी किसी और को बताती थी | उनके क़रीबी दोस्तों को भी शायद पता नहीं था कि वो एक अच्छी लेखिका भी थी |"
बिभूति जज की ओर देखकर,

"मुझे ऐसा लगता है कि रिचाजी में आत्मविश्वास की कमी थी शायद इसी वजह से अपने लेखन की प्रतिभा के विषय में उन्होंने किसी को नहीं बताया था |"

इतना कहते-कहते बिभूति की आँखें भर आई हैं | कमरें में सन्नाटा सा छा गया है | तभी आदी अचानक इस सन्नाटे में चीख पड़ता है,

"अव्वल दर्जे का झूठा हैं तू | सबसे झूठ बोल रहा है..."

लोग आदी को नज़रअंदाज़ कर देते हैं | बिभूति, कुलकर्णी की ओर देखकर आगे कहता है,

"आदी ने ही तो पटकथा को रजिस्टर करवाने में रिचाजी की मदद की थी, क्योंकि आसिमजी सिर्फ़ रजिस्टर की हुई पटकथा पर ही पैसा लगाना चाहते थे |"

जज आदी से कहते हैं,

"कार रिचा सिंह के नाम पर होनी चाहिए थी पर तुमने अपने नाम पर की | और अब जब पटकथा रिचा सिंह के नाम से रजिस्टर है तो तुम कह रहे हो कि यह रिचा सिंह की पटकथा नहीं है | तुम अदालत में खड़े हो, कम से कम एक सच तो स्वीकार करो |"

आदी जज की बात सुनकर शांत हो जाता है | कोर्ट कचहरी के मामले कहाँ एक दिन में निपटाए जाते हैं | आज की अदालत अगली सुनवाई तक स्थगित हो जाती है |

४. फ़िल्मी पार्टी

आसिम इस कचहरी की दुनिया से निकल कर एक जगमगाती चकाचौंध की दुनिया में पहुँचते हैं | गोवा के सबसे आलिशान पाँच सितारा होटल में, जहाँ दोपहर में एक पत्रकार वार्ता और शाम को एक छोटी-सी पार्टी का आयोजन किया गया है | दरअसल, रिचा सिंह की पटकथा पर कम लागत में बनी फ़िल्म (जिसमे रिचा सिंह ने भी बतौर नायिका काम किया था) ने काफ़ी अच्छा प्रदर्शन किया है, लगभग १०० करोड़ का व्यवसाय किया है, जिससे आसिम बड़े खुश हैं | इस पत्रकार वार्ता का आयोजन रिचा सिंह को श्रद्धांजलि देने और उसके माता-पिता को कॉन्ट्रैक्ट के बकाया १८ लाख रुपये देने के लिए किया गया है | इन औपचारिकताओं के बाद आसिम को इंतजार है शाम को सजने वाली पार्टी का |
आख़िरकार, वो वक़्त, वो लम्हा, वो शाम भी आ जाती है जिसका आसिम को बेसब्री से इंतजार था | आसिम, उनके फ़िल्म यूनिट के सारे सदस्य, कुछ फ़िल्म जगत के मित्र और पत्रकार सभी पार्टी का मज़ा ले रहे हैं | तभी फ़िल्म निर्देशक़ जयकुमार ददलानी, आसिम की तरफ़ आता है | ददलानी फ़िल्म जगत के कामयाब निर्देशकों में से एक हैं | हालाँकि ददलानी के चेहरे के भोलेपन को देखकर अंदाजा लगाना मुश्किल है कि ४० वर्ष का यह शख्स फ़िल्म बनाने जैसा रचनात्मक काम भी करता होगा | किसी छोटे बच्चे

सी मासूमियत, स्वस्थ शरीर, होठों पर मुस्कान और आँखों में हमेशा एक विचार, एक कल्पना दौड़ती हुई | ललाट की पट्टी भी साधारण और छोटे-छोटे बाल | वो पार्टी में जीन्स पर हल्के रंग की कमीज़ पहने हुए हैं | ददलानी के साथ एक लड़की भी है, डोरोथी | ददलानी, आसिम से डोरोथी का परिचय करवाता है | डोरोथी २७ वर्ष की एक ख़ूबसूरत जवान लड़की है जो फ़िल्म जगत में क़दम ज़माने की कोशिश कर रही है | डोरोथी ने पार्टी में बहुत ही आकर्षक कपड़े पहने हैं जिसमे से उसका ख़ूबसूरत बदन भी साफ़-साफ़ झलक रहा है | आसिम, डोरोथी की और ड्रिंक का ग्लास बढ़ाते हैं | पार्टी में आई दूसरी महिलाए और लडकिया भी बहुत खुश और उत्साहित दिख रही हैं जिसकी सिर्फ़ एक ही वजह है और वो है आज के दौर के सबसे सफल, अमीर और साथ ही कुंवारे नौजवान आसिम मल्लिक की मौजूदगी | आसिम पार्टी में हर मेहमान से, हर किसी से बहुत ही शालीनता से मिलते हैं और देखते ही देखते वो पार्टी का मुख्य आकर्षण बन जाते हैं | सभी इस शाम का लुत्फ़ उठा रहे हैं | जयकुमार की पत्नी शीला, ३५ के पार होने के बावजूद शरीर को २५ सा बनाए हुए हैं और हमेशा चेहरे पर ढ़ेर सारा पोता गया रंग जैसे कोई रंगीन परत सी जमा दी हो | शीला, आसिम के पास ही रहना चाहती है और इसीलिए वो आसिम के आस- पास रहने का कोई मौक़ा नहीं छोड़ती | जैसे-जैसे शाम ढलती जा रही है और शराब शीला को पी रही है वैसे-वैसे शीला अपना होश खो रही है | वो आसिम से कुछ ज़्यादा ही सटकर या चिपक कर खड़ी है | अब आसिम जैसे रंगीन मिजाज वाले व्यक्ति को वैसे तो शीला के स्पर्श से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए बल्कि आसिम, शीला के स्पर्श का आनंद भी ले रहे हैं पर

शीला के पति और उनके निर्देशक़ जयकुमार की मौजूदगी में शीला का इतना क़रीब होना खल सा रहा है | शीला को तो वैसे भी अपने आस-पास की दुनिया का कोई होश ही नहीं है | असल बात तो यह है कि वो अपना ऊल्लू सीधा करना चाहती है | पहले तो वो आसिम के सामने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी का रोना रोती है जिससे आसिम की यानी कि एक पुरुष की हमदर्दी हासिल कर सकें और इतिहास गवाह हैं कि इस हमदर्दी के चक्कर में कई पुरुषो ने ख़ुद को ही दर्द के दरिया में धकेल दिया है, पर जब कोई ख़ास बात बनती नज़र नहीं आती तब वो आसिम से कहती है कि,

"आपकी फ़िल्म तन्हाई बहुत अच्छी लगी | पर मैं उस..."

हद से ज़्यादा शराब पीने के बाद खड़े रहने का भी होश नहीं रहता तो बात करना तो बड़ी बात है |

"उस रिचा को निजी तौर पर जानती हूँ | मुझे नहीं लगता कि यह पटकथा उसने लिखी होगी | आप एक बार मुझे पढ़िए |"

आसिम, शीला को हैरानी से देखते हैं |

"मेरा मतलब मेरी लिखी हुई पटकथा को पढ़िए | आप रिचा-विचा सबको भूल जायेंगे |"

जयकुमार, जो कब से शीला पर नज़र रखे हुए था, शीला के पास आता है | उसकी हालत और हरकतों को देखते हुए उसको बहला-फुसलाकर आसिम से दूर ले जाता है | आसिम अब राहत की साँस लेते हैं |

*

शहर और सारी चकाचौंध से दूर, गलियारों से दूर, बिभूति के खड़गपुर वाले घर में राधिका, बिभूति की माँ के पास बैठी है और

अपना दिल हल्का कर रही है | भारत की नैसर्गिक सरलता और सुंदरता को ख़ुद में समेटती, २५ वर्षीय युवती राधिका, जो समझदार है, घरेलु है | उसे आज के आधुनिक दुनिया का ज्ञान भी है | सबसे बड़ी बात, दिल की बहुत अच्छी है | दिल और बाहर की दुनिया के साथ सामंजस्य बिठाये हुए है | कुछ दिनों पहले राधिका और बिभूति की किसी बात पर नौक-झोंक हो गई थी और तो और बिभूति ने राधिका को गुस्से में काफ़ी कुछ कह दिया था | बिभूति की माँ राधिका को समझाती है,

"किसी भी रिश्ते की नींव हैं विश्वास और धैर्य | एकदूजे को जानने की कोशिश करो | बिभूति को क्या पसंद है क्या नहीं यह भी जानना बहुत ज़रूरी है |"

बिभूति की माँ राधिका को आश्वासन देती है कि वो इस बारे में बिभूति से बात करेगी और राधिका से कहती हैं,

"चलो, बिभूति को फ़ोन लगाओ | अभी |"

*

पलंग पर तकिये के नीचे मोबाइल फ़ोन की घंटिया गूंजनी शुरू हो जाती हैं | वही, तकिये की विपरीत दिशा में आदी, आधी पतलून जैसा, जिसे कुछ लोग बरमूडा भी कहते हैं, बरमूडा पहने हुए पेट के बल लेटा है और शराब के सेवन में डूबा है | रिचा सिंह रसोई में ऑमलेट बना रही है | आदी का मोबाइल दुबारा बजता है | आदी बड़ी तकलीफ के साथ उल्टा घूमकर फ़ोन उठाता है और सामने वाले की बात बड़े ग़ौर से सुनता है | फिर,

अचानक से बोल पड़ता है,

"आप बिलकुल भी चिंता ना करें और मैं अभी वहाँ पहुँच कर सब कुछ ठीक कर दूंगा |"

आदी फ़ोन रखते ही सीधे आसिम के ऑफिस पहुँचता है | आसिम का ऑफिस इतना आलिशान है कि तारीफ में क्या बयाँ करें और क्या नहीं | आसिम अपनी मुख्य कुर्सी पर बैठे हुए हैं, वही सामने बिभूति भी बैठा है | लगभग रात के ८:३० बज चुके हैं इसीलिए आसिम को छोड़कर उनके ऑफिस में काम करनेवाले सभी लोग जा चुके हैं | आदी भी बिभूति के पास बैठ जाता है | आदी के बैठते ही आसिम बिना समय गवाय बताते हैं कि उनके सामने बैठे हुए शख्स का नाम बिभूतिभूषण है और बिभूति के अनुसार आसिम मल्लिक की आनेवाली फ़िल्म तन्हाई का असली लेखक रिचा सिंह नहीं बल्कि बिभूति है | इतना सुनना था कि आदी, बिभूति के साथ लड़ने झगड़ने पर उतारू हो जाता है, पर यह कोई आदी के शराब पीने का अड्डा तो है नहीं जो आसिम उसे ऐसा करने देते | वो आदी को शांति से बात करने और शालीनता से व्यवहाँर करने की सलाह देते हैं | आदी, आसिम को बताता है कि बिभूति कोई लेखक नहीं है, वो तो एक साधारण-सा आदमी है और किसी दवाई की कंपनी में काम करता है | इस पर बिभूति सफाई देता है,

"नौकरी करने वाला लेखक क्यों नहीं हो सकता है ?"

पर आदी कहाँ माननेवाला था बल्कि वो बिभूति से और भी बदतमीजी के साथ व्यवहाँर करता है | इस बार आसिम अपना रुतबा दिखाते हुए आदी को शांती से बात करने के लिए ज़ोर डालते हैं और तब आदी, आसिम से माफी माँगता है और कुछ देर के लिए शांत हो जाता है | आदी, आसिम को आगे बताता है कि डेढ़

साल पहले एक रात को जब रिचा घर लौट रही थी तब उसका पर्स चोरी हो गया था और तब संयोग से बिभूति उसे मिल गया और बिभूति ने रिचा को घर तक पहुँचने में मदद की थी | लेखक बड़े भावुक होते हैं और क्योंकि रिचा भी एक लेखक थी इसीलिए वो बिभूति से बड़े अच्छे से पेश आई थी | आदी, बिभूति की ओर नफ़रत भरी निगाहों से देखता है और आसिम की ओर देखकर कहता है,

"मुझे तो यह बिभूति शुरू से ही पसंद नहीं था | इतने साल इंडस्ट्री में निकाले हैं | मुझे तो इसकी भोली सूरत के पीछे की गंदी नियत पर पहले से ही शक़ हो गया था | रिचा को भी बाद में महसूस हुआ कि यह बेवजह हमारे घर के आस-पास घूमता रहता है | रिचा को भी इसका बारबार फ़ोन करना बिलकुल पसंद नहीं था |"

आसिम, बिभूति की ओर सवाल भरी नज़रों से देखते हैं | आदी आगे बताता है कि इसने किसी तरह रिचा को अपने विश्वास में ले ही लिया और इस बात के लिए भी मना ही लिया कि रिचा ने हाथ से जो पटकथाएँ लिखी थी उसे ये हिन्दी में टाइप कर देगा क्योंकि इसे हिन्दी टाइपिंग आती है |

"मैंने तो रिचा को लाख समझाया कि मैं रोमन में टाइप कर देता हूँ | आजकल रोमन भी चलती है, पर रिचा को भी देवनागरी में ही टाइप करके चाहिए थी | इसीलिए मुझे अपना लैपटॉप बिभूति को देना पडा और इसे मौका मिल गया साजिश रचने का |"

बिभूति को यह सब सुनकर बहुत बुरा लग रहा है | वो इस बात का विरोध भी करता है कि आदी झूठ बोल रहा है | आदी, बिभूति को धमकाने लगता है कि अगर बिभूति बीच में बोला तो अंजाम अच्छा नहीं होगा | आसिम एक और बार दोनों को शांत करते हैं|

इस बार तो आदी, बिभूति पर एक बहुत ही गंभीर और घिनौना आरोप भी लगाता है,
"जब टाइपिंग ख़त्म हो गई तो रिचा ने इसको पैसे देने चाहे पर इसकी बेशर्मी और हिम्मत तो देखो, यह रिचा के साथ हमबिस्तर होना चाहता था | जब रिचा ने इसको साफ़ साफ़ मना किया तब भी इसने रिचा को जबरदस्ती चूमने की कोशिश की | किसी तरह रिचा अपनी इज़्ज़त बचा के भागी थी इसके चंगुल से | इसने रिचा की मदद सिर्फ़ अपने गंदे इरादों को पूरा करने के लिए की थी |"
आसिम, आदी को सुनते हुए बिभूति को देख कर सच का अंदाजा लगाने की कोशिश कर रहे हैं | बिभूति यह सब सुनकर अंदर ही अंदर घुटन महसूस कर रहा है | आदी आगे कहता है कि,
"जब रिचा इसके हाथ ना लगी तो इसके अहंकार को धक्का लगा और शायद अपने अपमान का बदला लेने के लिए इसने रिचा का भविष्य, उसके लेखिका बनने का सपना बर्बाद करने की ठानी | एक शादीशुदा इंसान ऐसा घिनौना काम भी कर सकता है ?"
बिभूति और आदी में दुबारा कहासुनी शुरू हो जाती है |
"तुम ऐसा झूठ क्यों बोल रहे हो कि मैं शादीशुदा हूँ ?"
"क्यों, यह सच नहीं है कि तुम्हारे गाँव की लड़की है वो... राधिका, उसके साथ तुम्हारी शादी होने वाली है |"
फिर आदी, आसिम की ओर देखकर,
"इनके जैसे मर्द पत्नियों को गाँव में रखते हैं और यहाँ शहरों में आकर ख़ूबसूरत लडकियों का शिकार करते हैं, उन्हें अपने जाल में फंसाते हैं |"
इनकी बातों के बीच में अचानक आसिम के मोबाइल फ़ोन की घंटी बजती है | आसिम फ़ोन उठाकर कहते हैं,

"एक ज़रूरी मीटिंग मैं हूँ, बस थोड़ी देर में निकलता हूँ |"
आसिम अपना फ़ोन रख देते हैं और बिभूति अपने ऊपर लगाए आरोपों से इंकार करता है और अपनी सफाई देता है, "पहली बात, खड़गपुर कोई गाँव नहीं बल्कि एक प्रसिद्ध जगह है और दूसरी बात कि राधिका सिर्फ़ मेरी एक दोस्त है, पत्नी नहीं है |"
आदी अपनी बात पर ज़ोर देकर कहता है,
"पर तुम्हारे ही माँ-बाप राधिका के साथ तुम्हारी शादी करवाना चाहते हैं |"
बिभूति ने रिचा को अपना ख़ास दोस्त समझा था | बहुत भरोसा किया था उसपर और अपनी निजी बातें रिचा को बताई थी पर रिचा ने आदी जैसे घटिया इंसान को यह सब बता दिया और आदी भी यह बातें यहाँ बारबार उछाल रहा है | इन सबसे बिभूति के दिल को बहुत ठेस पहुँचती है और दिल को पहुँची ठेस आँखों में उतर आती है | आसिम अपने ऑफिस में और ज़्यादा नौटंकी नहीं चाहते सो वो दोनों के आपसी झगड़े से तंग आकर कहते हैं,
"यहाँ-वहाँ की बातें बंद कीजिए | बिभुतिजी, मेरी फ़िल्म तन्हाई अगले १५ दिनों में पर्दे पर आ जाएगी और आज अचानक आप कहीं से, नींद से जागकर मेरे पास आते हो यह बताने के लिए कि इस पटकथा के असली लेखक आप हैं ? इसका क्या मतलब है ? कोई सबूत तो होगा आपके पास ? आपके हाथ से लिखी
हुई कोई पटकथा या कुछ और ?"
आदी बीच में बोलने ही जा रहा था कि आसिम उसे इशारे से चुप कराते हैं | बिभूति मायूस होकर कहता है कि,
"सारे सबूत, सबकुछ था मेरे पास, पर इसने बड़ी चालाकी से वो सब मिटा दिए |"

आसिम, बिभूति को एक पल के लिए ग़ौर से देखते हैं, फिर कहते हैं,
“मैं नहीं जानता कि आप मेरे बारें में या इस फ़िल्म जगत के बारें में कितना कुछ जानते हैं | मेरी एक ख़ास पहचान है इस फ़िल्म जगत में | इस फ़िल्म को शुरू करने से पहले मैंने ख़ुद रिचा के घर जाकर उसके हाथों से लिखी हुई पटकथा पढी थी | फिर भी, अगर आपके पास इससे ज़्यादा या कोई भी ठोस सबूत हो तो मैं ज़रूर देखूंगा | फ़िलहाल मुझे पहले से ही बहुत देर हो चुकी है तो अब मुझे जाना होगा | गुडनाईट बिभूतिजी ?”
बिभूति बेबस, बूत जैसा बना बैठा है, तभी आदी चिल्लाता है,
“सुना नहीं आसिमजी ने क्या कहा ? अब जाओ यहाँ से और हाँ रिचा के मामलो में दखल अंदाजी बंद कर दो |”
बिभूति न चाहते हुए भी, भारी मन से, खाली हाथ लौटने के लिए खड़ा होता है और ऑफिस के बाहर चला जाता है पर जाते-जाते वो आदी के मुँह से स्वयं के लिए अपमानजनक बातें भी सुनता हैं जो कि आदी, आसिम से कर रहा है,
“आप बिभूति की भोली सूरत पर न जाईए | बहुत बड़े चालबाज़ और धोखेबाज़ होते हैं ऐसे लोग |”
कुछ देर बाद आसिम अपना ऑफिस बंद करके वाहनतल यानि कि कार पार्किंग वाली जगह पर पहुँचते हैं | आसिम को चलते-चलते दूर से ही, कार पार्किंग वाली जगह पर अँधेरे में एक परछाई सी नज़र आती है | जैसे ही आसिम कार के नजदीक पहुँचते हैं वो देखते हैं कि बिभूति पहले से ही वहाँ मौजूद है | मन में एक आशंका सी होती है पर आसिम, बिभूति के सामने वो ज़ाहिर नहीं होने देते |

"बिभूतिजी आप यहाँ ?"
बिभूति, आसिम से विनंती करता है कि उसे कुछ ज़रूरी बात करनी है | आसिम अपना लैपटॉप कार में रखते हुए,
"मेरी मंगेतर मेरा इंतज़ार कर रही है और मुझे पहले से ही बहुत देर हो चुकी है | मैं उससे ७ बजे मिलने वाला था पर आप दोनों के चक्कर में..."
बिभूति तुरंत अपनी बात बताता है,
"मैं सिर्फ़ २ मिनटों में ही यह साबित कर दूंगा कि इस पटकथा का असली लेखक मैं ही हूँ |"
आसिम को अब बिभूति की बातों में दिलचस्पी होने लगती है,
"ठीक है, पर जल्दी बताओ |"
"आपने 'तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी' की पूरी पटकथा तो ज़रूर पढी होगी ?"
आसिम हामी भरते हैं | बिभूति आगे कहता है,
"तन्हाई जो कि तीन हिस्सों की एक पटकथा है और इसके पहले हिस्से 'लोनली इन अ क्राउडेड सिटी' में पटकथा के नायक को एक विष दिया जाता है |"
"तो इससे क्या साबित हुआ ?"
तब बिभूति समझाता है,
"पटकथा के पहले हिस्से में विष के प्रतिरोधक के बारें में नहीं बताया है जबकि उस प्रतिरोधक की चर्चा आख़िरी यानी कि तीसरे हिस्से 'तन्हाई - द फाइनल चैप्टर' में हुई है पर वो पटकथा अभी अधूरी है क्योंकि उसके विषय में अभी तक पूरा नहीं लिखा गया है और जो कि सिर्फ़ मुझे पता है | तो इससे यह तो साबित हो गया कि मैं ही इस पटकथा का असली लेखक हूँ |"

आसिम, बिभूति को संदेह भरी नजरो से देखते हैं | बिभूति अपनी बात को स्पष्ट करता है,
“देखिए, बात यह है कि मैं जिस कंपनी में काम करता हूँ वो मानव शीतनिद्रा यानी कि हाइबरनेशन पर अनुसंधान कर रही है, जो कि अभी प्रथम चरण में है इसीलिए अभी तक उसके बारे में कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है | आप भी समझ सकते हैं कि मैं औपचारिक तौर पर आपको कुछ नहीं बता सकता | लेकिन, इससे आप सहमत होंगे कि तन्हाई का असली लेखक मैं ही हूँ |”
आसिम कोई साधारण फ़िल्म निर्माता नहीं हैं | उन्होंने तुरंत कोई निर्णय नहीं सुनाया और बोले,
“बेहतर होगा कि हम कल सुबह १० बजे इस मुद्दे पर बात करें क्योंकि फ़िलहाल मैं पूरी तौर पर आश्वस्त नहीं हूँ |”
बिभूति उत्सुकतावश आसिम को धन्यवाद देता है और सुबह ठीक १० बजे आसिम के ऑफिस आकर उनसे मिलने का वादा करके वहाँ से चला जाता है | बिभूति के जाते ही आसिम का मोबाइल फ़ोन बजने लगता है |

*

मोबाइल फ़ोन के कंपन से आसिम का ध्यान टूटता है और वो पार्टी में चारों और एक निगाह दौडाते हैं, फिर अपना मोबाइल फ़ोन उठाकर बात करते हैं | यह आसिम की मंगेतर डॉली का फ़ोन है | डॉली को देखने पर ऐसा लगता है जैसे किसी ख़ूबसूरत सी विदेशी गुडिया में जान फूंक दी गयी हो | अच्छे खानपान का असर इंसान पर यक़ीनन पड़ता है, तभी तो इतनी सुंदरता और इतना निर्मल चेहरा | हालाँकि, डॉली सिर्फ़ एक गुडिया सी ख़ूबसूरत लड़की नहीं

है वो एक बेहद समझदार और दुनियादारी को जानने वाली लड़की भी है और सबसे अहम बात कि एक बहुत बड़े फ़िल्म निवेशक़ की इकलौती बेटी है | डॉली मुम्बई में ही पली-बढी हैं और फ़िलहाल वो अपने आलिशान कमरे में मखमली पलंग पर लेटी हुई, आसिम से मोबाइल पर बात कर रही है |
"कैसा चल रहा है वहाँ सब ?"
"यहाँ सब बहुत अच्छा है बल्कि तुम्हें भी यहाँ मेरे साथ होना चाहिए था |"
"जानती हूँ, पर शायद घरवालो को शादी के पहले एकसाथ गोवा आना अच्छा नहीं लगता और वैसे भी अगले महीने ही तो शादी है ना | कहीं भूले तो नहीं तुम ? तुमने मुझे वादा किया हैं ना कि दिन में कम से कम तीन बार फ़ोन भी करोगे और हम शादी के बाद हनीमून के लिए स्विट्ज़रलैंड भी जायेंगे ?"
लडकियों का दिल कैसे जीतना है यह आसिम को अच्छी तरह पता है |
"मुझे सब याद है मेरी मल्लिका |"
दोनों कुछ और देर तक बातें करते हैं | सभी लोग पार्टी का जमकर मज़ा ले रहे हैं | कहीं खाना-पीना, कहीं संगीत, कहीं थिरकना | आसिम अपनी कुर्सी से उठकर डोरोथी, जो कि एक कोने में अकेली बैठी हुई है, उसके पास जाते हैं | डोरोथी भी आसिम को देखते ही एक ख़ास अदा से गर्दन को एक और झुकाकर मुस्कुराती है जिससे आसिम का हौसला और बढ़ जाता है | तभी बैरा आसिम का ग्लास जो कि आसिम अपनी मेज पर ही भूल आए थे, उन्हें लाकर देता है,
"सर, आपका ग्लास वहाँ भूल आए थे"

आसिम जहाँ पहले बैठे थे वहाँ देखते हैं तो शीला उनकी मेज के पास बैठी हुई हैं और वहाँ से भी आसिम को ही देख रही है | आसिम, शीला को नजरअंदाज़ करके बैरे को ग्लास रखने का इशारा करते हैं और पास बैठी डोरोथी से उसकी फरमाईश पूछते हैं तब डोरोथी प्रोंस और जिंजर डंपलिंग्स की इच्छा ज़ाहिर करती है | बैरा, आसिम का इशारा पाते ही हामी में सिर हिलाकर वहाँ से चला जाता है | डोरोथी लगातार पीये जा रही है | आसिम भी अपनी ग्लास जो कि अभी-अभी बैरा देकर गया है, उससे एक घूँट लेते हैं | उन्हें बड़ा अजीब सा महसूस होता है पर फिर भी एक बड़े घूँट में पूरा ग्लास खाली कर देते हैं | फिर, बैरे को इशारे से बुला कर एक और नए पेग की फरमाईश करते हैं |
डोरोथी, आसिम से कहती है,
"मैं भी बॉलीवुड में अपनी जगह बनाना चाहती हूँ | मैं मुम्बई भी आई थी और एक कास्टिंग कोऑर्डिनेटर आदी से भी मिली थी पर इतना आसान नहीं है बॉलीवुड में काम मिलना |"
आसिम सिर्फ़ हामी में अपना सिर हिलाते हैं | डोरोथी आगे कहती है,
"ददलानीजी बता रहे थे कि आप बहुत अच्छे इंसान हैं, बहुत मददगार भी हैं | सभी को मौक़ा देते हो | काश ! रिचा से पहले मैं आपसे मिली होती |"
आसिम कहते हैं,
"रिचा से मुझे आदी ने ही मिलवाया था |"
डोरोथी यह जानने की कोशिश कर रही है कि आसिम उसे कैसे काम दे सकते हैं ?
"क्या रिचा बहुत प्रतिभाशाली थी ?"

"हाँ, वो बड़ी प्रतिभाशाली और मेहनती थी |"
आसिम के शब्दकोष में मेहनत का मतलब कुछ और ही है | आसिम की आँखों के सामने वो अंतरंग पल आ जाते हैं जो उन्होंने रिचा के साथ होटल के कमरे में बिताये थे | औरत के पास छठी इन्द्रिय होती है जिससे वो आदमी के मन को, उसकी नियत को भांप लेती है और अगर औरत डोरोथी जैसी हो तो एक ही पल में समझ जाए | डोरोथी कहती है,
"मैं भी बहुत मेहनती हूँ, चाहे जितनी मेहनत करा लो |"
आसिम, डोरोथी के इशारे को समझ जाते हैं,
"अच्छा ! जब अगली बार मुम्बई आओ तो ज़रूर मिलना |" डोरोथी मोहक अदा के साथ ताना मारती है,
"क्या वाकई में मेरे मुम्बई आकर मिलने तक का लंबा इंतजार कर सकते हो ?"
आसिम पार्टी में चारों ओर एक निगाह दौडाते हैं | सब अपने आप में मशगुल हैं, एक शीला को छोड़कर जो टकटकी लगाए बस आसिम की ओर ही देख रहीं है | आसिम, शीला को नज़रअंदाज़ करते हुए डोरोथी से कहते हैं,
"पहले तो यहाँ से चलते हैं | मैं यहाँ कुछ लोगों से दूर रहना चाहता हूँ |"
डोरोथी, आसिम की आँखों में देखते हुए अपनी जुल्फें खोलती है और वहाँ से उठकर पार्टी में सबसे नजरें बचाकर होटल की तरफ़ चलने लगती है |

आसिम, डोरोथी के इशारे को समझ जाते हैं, "अच्छा ! जब अगली बार मुम्बई आओ तो ज़रूर मिलना।"
डोरोथी मोहक अदा के साथ ताना मारती है, "क्या वाकई में मेरे मुम्बई आकर मिलने तक का लंबा इंतजार कर सकते हो ?"

५. षड्यंत्र

बहती शराब और पिघलते हुस्न की रात कब सुबह में बदल गई पता ही नहीं चला | मोबाइल फ़ोन की तेज आवाज़ से आसिम की नींद टूटती है, जो इस वक़्त होटल के ही आलिशान कमरें में सोये हुए हैं | वो किसी तरह फ़ोन उठाते हैं और सामने से आने वाली आवाज़ को सुनते हैं,

"कहाँ हो तुम रातभर से ? मेरा फ़ोन क्यों नहीं उठा रहे ?"

आसिम मज़ाकिया अंदाज़ में डॉली से कहते हैं,

"कल रात से एक ख़ूबसूरत सी दोस्त के साथ था |"

डॉली मुम्बई में अपने कमरें में सुबह का नाश्ता कर रही है | डॉली को लगता है कि आसिम केवल मज़ाक कर रहे हैं, वो भी ऐसे ही नाराज़गी जताते हुए कहती है,

"शराब पी है तुमने ?"

"ज़्यादा नहीं सिर्फ़ दो-चार पेग | वैसे, ऐसी क्या बात हो गई कि इतनी सुबह-सुबह फ़ोन कर दिया ?"

डॉली जवाब में कहती है,

"घड़ी पर नज़र दौड़ाईए जनाब, सुबह के दस बज चुके हैं और तुम्हें तो पता हैं ना जब तक तुम्हें कॉल ना कर लू मेरा दिन अच्छा नहीं जाता |"

आसिम मोबाइल में समय देखकर कहते हैं,

"ओह ! गुड मोर्निंग डिअर | सुनो न, मैं थोड़ी देर बाद फ़ोन करता हूँ |"
आसिम की नींद पूरी नहीं हुई है इसीलिए वो फ़ोन रख देते हैं | वो मोबाइल रखकर सोने ही जाते हैं कि उन्हें बिस्तर पर कोई चीज़ महसूस होती है | वो अपनी पीठ के नीचे हाथ घुमाकर देखते हैं तो उन्हें कोई विजिटिंग कार्ड जैसा कुछ मिलता है | वो कार्ड को पलटकर देखते हैं और नाम देखकर मुस्कुराते हैं | यह डोरोथी का कार्ड है जो पिछली रात की गर्म यादों के बाद यहाँ छोड़ गई थी | आसिम ने ऐसी कितनी ही गर्म यादों को थंडा समझ कर भुला दिया होगा इसीलिए वो कार्ड को कागज का टुकड़ा समझकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर पलंग के नीचे फैंक देते हैं और मेहनत की थकान मिटाने के लिए फिर से सो जाते हैं |

*

वादानुसार बिभूति सुबह ठीक १० बजे आसिम के ऑफिस पहुँच जाता है | स्वागत कक्ष यानी कि रिसेप्शन पर बैठी हुई एक ख़ूबसूरत सी लड़की को बताता है कि आसिमजी ने मिलने के लिए बुलाया है | लड़की इंटरकॉम पर किसी से बात करती है फिर बिभूति को बताती है की आसिम सर आज ऑफिस नहीं आयेंगे, पर बिभूति उसे बताता है की उसकी आसिमजी से पिछली रात बात हुई थी और क्योंकि ख़ुद आसिमजी ने ही बिभूति को मिलने बुलाया है इसीलिए बिभूति उनके आने का इंतज़ार करेगा और वो लड़की का कोई जवाब सुने बिना ही वहाँ रखे सोफे पर बैठकर एक घंटे तक प्रतिक्षा करता रहता है | काफ़ी देर होने पर भी जब बिभूति वहाँ से नहीं जाता तब एक चपरासी अंदर से आता हैं और

बिभूति से कहता है,
“बिभुतिभाशन आप ही हैं ?”
बिभूति उसे स्पष्ट करता है,
“बिभुतिभाशन नहीं, बिभूतिभूषण”
चपरासी को कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसने बिभूति का नाम गलत लिया है, वो सिर्फ़ बिभूति को सुचित करता है,
“सर एक महीने के लिए यु.एस.ए गए हैं | आप एक महीने के बाद आना |”
बिभूति को चपरासी की बात पर विश्वास नहीं होता,
“ऐसे कैसे अचानक ? कल रात को यही ऑफिस के बाहर ही तो मेरी बात हुई थी और उन्होंने ख़ुद मुझे बोला था आज आकर मिलने के लिए ?”
मुम्बई शहर में एक कहावत है कि चाय से ज़्यादा केतली गरम और इसका उदाहरण चपरासी दे देता है,
“आसिम सर बहुत बड़े आदमी हैं | हर किसी को बताएँगे क्या ? कब-कहाँ जाना है ? आप एक महीने बाद आओ | हमसे क्यों बहस कर रहें हो ?”
ऐसा कहते हुए चपरासी, बिभूति को बाहर जाने का रास्ता दिखाता हैं | बिभूति को चपरासी की बात पर रत्ती भर भरोसा नहीं है | वो ऑफिस के बाहर जाते-जाते भी पीछे मुड़कर केबिन के दरवाज़े की ओर ही देख रहा है और अचानक वो देखता है कि आसिम तो ऑफिस में ही है और वो एक केबिन से दूसरे केबिन में जा रहे हैं| बिभूति तुरंत चपरासी को पीछे धकेलते हुए आसिम के पास पहुँच जाता है और अपना सारा गुस्सा आसिम पर उतार देता है,

"आप होंगे बहुत बड़े आदमी, पर मेरा काम और मेरा समय भी मेरे लिए कीमती है | अगर आपको मुझसे नहीं मिलना था तो साफ़-साफ़ कह देते ? कल रात आपने ही मुझे कहा था, आज सुबह १० बजे मिलने के लिए, तभी मैं यहाँ आया हूँ | आपको मेरा समय बर्बाद करने का कोई अधिकार नहीं है |"
बिभूति इतना गुस्से में है कि उसका पूरा शरीर काँप रहा है और वो दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए आसिम को चेतावनी देता है,
"देखना, कल आप ख़ुद आयेंगे मुझसे मिलने, मेरे समय की भीख मांगते हुए |"
बिभूति तुरंत आसिम के ऑफिस से बाहर चला जाता है | आसिम, बिभूति के इस व्यवहाँर और रूप से भौंचक्के से रह जाते हैं और वहाँ मौजूद बाकी सभी लोग बिभूति को जाते हुए देखते रह जाते हैं |

*

डॉली से फ़ोन पर बात करने के बाद आसिम लगभग एक घंटे बाद यानि कि सुबह ११ बजे उठते हैं | आसिम उठकर पलंग के किनारे पर बैठ जाते हैं और एक मस्त अंगडाई लेते हैं, पर उन्हें अजीब सी बैचेनी महसूस हो रही है | उन्हें लगता हैं कि शायद पिछली रात को ज़्यादा शराब पीने के कारण ऐसा महसूस हो रहा है | वो सीधे नहाने चलें जाते हैं और अब थोडा बेहतर महसूस कर रहे हैं| आसिम होटल के कर्मचारी से मौसंबी का रस मंगाकर पीते हैं पर उसके बाद तो उनका जी मचलना शुरू होता है और वो भागकर बाथरूम में जाकर उल्टी करते हैं | आसिम गोवा में सिर्फ़ पार्टी करने के लिए नहीं आए थे बल्कि वो अगली फ़िल्म की शूटिंग के

लिए सही जगह देखने भी आए थे | होटल के रिसेप्शन पर अपने कमरें की चाबी देकर वो कार में बैठ जाते हैं | कार कुछ ही मिनटों में गोवा की सड़को पर भाग रही है | आसिम अपना ध्यान अपने स्वास्थ्य से हटाने के लिए कार में से गोवा का नजारा देख रहे हैं, पर अचानक उन्हें महसूस होता है कि उनकी तबियत कुछ ज़्यादा ही बिगड़ रही है इसीलिए वो ड्राईवर को निर्देश देकर गोवा के एक जानेमाने डॉक्टर पालिमकर के पास पहुँच जाते हैं | डॉक्टर पालिमकर कुछ ज़रूरी परीक्षण करने के बाद कहते हैं,

"आपके फेफड़े, रक्तचाप, हृदयगति सब कुछ सामान्य है | फ़िलहाल तो मुझे चिंता जैसी कोई बात नहीं लगती | आप नीचे उतर सकते हैं |"

आसिम जो दवाखाने के पलंग पर लेटे हुए थे अब नीचे उतर जाते हैं और डॉक्टर के सामने वाली कुर्सी पर बैठकर कहते हैं,

"सुनकर थोड़ी राहत हुई | वैसे मुझे पेट में दर्द या ऐसा कुछ महसूस नहीं हो रहा बस अजीब सी बैचेनी महसूस हो रही है जो आपको ठीक से समझा नहीं पा रहा हूँ | हाँ, कल रात पार्टी में शराब कुछ ज़्यादा हो गई थी |"

डॉक्टर अपने नोटपेड में कुछ लिखते हुए,

"कभी-कभार मौसम बदलने के कारण ऐसा हो सकता है | वैसे एकाध घंटे में आपके रक्तजाँच की रिपोर्ट आ जाएगी तब तक आप लंच करके आ जाईए |"

आसिम मुस्कुराते हुए वहाँ से खड़े होते हैं और होटल लौट जाते हैं| हालांकि, आसिम का कुछ भी खाने का दिल नहीं कर रहा है| वो बस अपने कमरे में थोड़ी देर आराम करने के बाद दोपहर ३ बजे तक डॉक्टर पालिमकर के दवाखाने पहुँच जाते हैं | दवाखाने

में डॉक्टर मास्करेन्हास पहले से मौजूद हैं | डॉ. पालिमकर दोनों का परिचय कराते हैं | डॉ. मास्करेन्हास के चेहरे पर गंभीर भाव हैं और वो आसिम से बैठने के लिए कहते हैं | डॉ. पालिमकर आसिम से कुछ सवाल पूछते हैं,

"आपने बताया कि, आप अभी तक अविवाहित हैं ?"

"जी |"

"यहाँ गोवा में आपका कोई रिश्तेदार, कोई दोस्त या कोई और जान पहचान का है ?"

आसिम सहज लहजे में कहते हैं,

"नहीं, मैं तो यहाँ किसी को नहीं जानता |"

डॉ. पालिमकर फिर पूछते हैं,

"वैसे आपका घर कहाँ हैं ?"

आसिम को थोडा सा अजीब लगता है,

"बात क्या है ? इतने सारे सवाल क्यों ?"

तब डॉ. मास्करेन्हास कहते हैं,

"आप बहुत बीमार हैं मल्लिकजी |"

आसिम चौंक जाते हैं,

"बीमार ? पर डॉ. पालिमकर ने मुझसे कहा था कि चिंता की कोई बात नहीं हैं |"

तभी डॉ. पालिमकर स्पष्ट करते हैं,

"मैं जानता हूँ कि मैंने कहा था पर रक्तजाँच की रिपोर्ट आने से पहले | प्राथमिक जाँच में मुझे आपकी स्थिति एक़दम सामान्य मालुम हुई थी |"

आसिम दोनों डॉक्टरो की ओर देखकर कहते हैं,

"आप दोनों बहुत गंभीर नजर आ रहे हैं |"

डॉ. मास्करेन्हास हामी में सिर हिलाते हैं | डॉ. पालिमकर बताते हैं कि,

“सामान्य तौर पर हम किसी भी गंभीर बात का खुलासा तब तक नहीं करते जब तक हम ख़ुद आश्वस्त ना हो जाए | आप यह समझ सकते हैं मल्लिकजी ?”

आसिम का धीरज टूट रहा है और चिंता भी हो रही है,

“मैं समझ सकता हूँ पर आख़िर बात क्या है ?”

डॉ. मास्करेन्हास कहते हैं,

“आपकी रक्तजाँच रिपोर्ट से पता चला है कि आपके शरीर में एक अजीब सा विषैला तत्व मौजूद है |”

“विषैला तत्व ?”

“जी | यह एक ज़हर की तरह काम कर रहा है और आपके शरीर में इस हद तक घुल चुका है कि यह आपके लिए जानलेवा साबित होगा क्योंकि यह तत्व आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को आहिस्ता-आहिस्ता कमज़ोर कर रहा है | काश ! ऐसा कुछ उपाय होता जो हम कर पाते |”

आसिम गुस्से से,

“क्या मतलब है आपका ? कर पाते ?”

डॉ. मास्करेन्हास शांती से आसिम को समझाने की कोशिश करते हैं,

“मल्लिकजी, मेरी बात को शांती से सुनने और समझने की कोशिश कीजिए | जो तत्व आपके शरीर में मौजूद है, वो एक विष की तरह हर पल आपके शरीर को कमज़ोर कर रहा है | आपके रक्तजाँच की रिपोर्ट से यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि वो विषैला तत्व वास्तव में क्या है ? तो हम इसका प्रतिरोधक कैसे देदे ?

वैसे भी इस पर कोई प्रतिरोधक काम करेगा या नहीं यह भी तो हमें नहीं पता |"

आसिम गुस्से में कुर्सी से उठकर खड़े हो जाते हैं,

"क्या मज़ाक है यह ? यह सब कहते हुए आपको अजीब नहीं लग रहा ?"

डॉ. मास्करेन्हास, आसिम की मानसिक स्थिति को समझते हुए शांती से जवाब देते हैं,

"मल्लिकजी यह कोई मज़ाक नहीं है बल्कि आपके पास ज़्यादा समय नहीं है |"

आसिम का गुस्सा डर में तब्दील हो जाता है,

"मतलब ?"

डॉ. मास्करेन्हास कहते हैं,

"एक दिन, एक हफ्ता या ज़्यादा से ज़्यादा दो हफ्ते | दरअसल कुछ भी स्पष्ट तौर पर बताना बहुत मुश्किल है, सिवाय इस बात के कि..."

आसिम ज़ोर डालते हुए पूछते हैं,

"कौन सी बात डॉक्टर ?"

"यही कि अब आपके पास और समय नहीं है |"

आसिम ख़ुद को नियंत्रण में करते हुए,

"यह संभव नहीं है | आपसे ज़रूर कहीं ना कहीं कोई बहुत बड़ी भूल हुई है |"

डॉ. पालिमकर, आसिम को बताते हैं,

"डॉ. मास्करेन्हास विष-विज्ञान में बहुत बड़े अधिकारी पद पर कार्यरत हैं |"

डॉ. मास्करेन्हास कहते हैं,

"कोई भूल, कोई गलती नहीं हुई है मल्लिकजी | बात की गंभीरता को समझने की कोशिश कीजिए |"

आसिम दोनों को घूरते हुए कहते हैं,

"आप जानते हैं आप क्या कह रहे हैं ? आप कह रहे हैं कि मैं मर चुका हूँ, लेकिन मैं आपका विश्वास क्यों करू ? मैं तो आपको जानता तक नहीं |"

डॉ. मास्करेन्हास, आसिम को समझाने की एक और कोशिश करते हैं,

"धीरज से काम लीजिए मल्लिकजी | हम आपकी हर संभव मदद करेंगे |"

आसिम बौखलाकर,

"ख़ाक मदद करेंगे ? और वैसे भी पागलो से मदद नहीं लेता मैं, आप लोग पागल हैं, बल्कि बहुत बड़े धोखेबाज़ हो तुम दोनों |"

डॉ. पालिमकर सहानुभूति रखते हुए आसिम से कुछ कहने ही जा रहे होते हैं कि आसिम तुरंत दवाखाने से भाग कर बाहर आ जाते हैं और कार में बैठते ही ड्राईवर को गोवा के सबसे बड़े हॉस्पिटल में लेकर जाने का निर्देश देते हैं | ड्राईवर भी तुरंत कार को चालू करके भगाने लगता है | आसिम बड़े बैचेन हो गए हैं सो अपनी दोनों आँखें बंद कर बैठ जाते हैं |

कुछ ही देर बाद आसिम गोवा के सबसे बड़े और जाने माने हॉस्पिटल में पहुँचकर अपनी सारी जाँच फिर से करवाते हैं | डॉ. भंडारे जो गोवा के एक सुप्रसिद्ध डॉक्टर हैं वो आसिम की रिपोर्ट पढ़ रहे हैं | डॉ. भंडारे के व्यक्तित्व से ही अंदाजा हो जाता है उनके अनुभव और ज्ञान का | सारी रिपोर्ट पढने के बाद डॉ. भंडारे आसिम से कहते हैं,

आसिम बौखलाकर, "ख़ाक मदद करेंगे ? और वैसे भी पागलो से मदद नहीं लेता मैं, आप लोग पागल हैं, बल्कि बहुत बड़े धोखेबाज़ हो तुम दोनों।"

"मैंने अभी-अभी हमारे लैब से आई आपकी रक्तजाँच की रिपोर्ट अच्छी तरह से पढी हैं और यह बात तो सच है कि आपके शरीर में एक विषैला तत्व तो मौजूद है | वो आपके शरीर के महत्वपूर्ण अंगो को शिथिल कर रहा है |"

आसिम अब भी इस बात पर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं | कोई भी कैसे विश्वास कर लेगा अगर उसे यह कह दिया जाए कि वो लगभग मर चुका है और बस कुछ दिनों तक ही साँस चलेगी | यह विचित्र नहीं है क्या ? तो आसिम भी अपना संशय एक बार फिर से दोहरा देते हैं,

"डॉ. भंडारे मुझे कोई कमजोरी महसूस नहीं हो रही, बस पेट में अजीब सी बैचेनी है | क्या आप पुख्ता तौर पर यह बात कह रहे हैं ? मेरा मतलब रिपोर्ट समझने में कहीं कोई भूल तो नहीं हो रही?"

डॉ. भंडारे बताते हैं,

'इस अंजान तत्व की यही खासियत है कि शुरुआत में कुछ बुरा महसूस नहीं होता फिर अचानक से एक दिन या दो दिन.. आपके सारे अंग शिथिल होकर निष्क्रिय हो जाते हैं फिर ज़्यादा से ज़्यादा एक सप्ताह |"

आसिम, डॉ. की बात सुनकर चिंतित हो जाते हैं | डॉ. आगे कहते हैं,

"अगर सही समय पर ही पता चल जाता तो आपके पेट को साफ़ करके बचाया जा सकता था, पर वो विषैला तत्व आपके पूरे शरीर में फ़ैल चुका है | लगभग १२ घंटो से यह तत्व आपके शरीर में है| क्यों, मेरा अंदाज़ा सही है ना ?"

आसिम समझ ही नहीं पाते कि डॉ. उनसे यह क्यों पूछ रहे हैं,

"यह मैं कैसे कह सकता हूँ ?"
डॉ. भंडारे चौंकते हुए,
"आपको नहीं पता कि यह विषैला तत्व आपके शरीर में कैसे पहुँचा?"
आसिम ना में सिर हिलाते हैं |
"आश्चर्य की बात हैं मल्लिकजी | यह कोई दुर्घटना नहीं है | यह तो किसी ने जानबूझकर, आपको किसी ड्रिंक में मिलाकर पिलाया है |"
आसिम के लिए जैसे किसी रहस्यमई कहानी के पन्ने एक-एक कर खुलते जा रहे हो पर अभी तो बहुत कुछ होगा जो शायद आसिम को पता नहीं है | आसिम कहते हैं,
"हाँ वैसे कल रात पार्टी में मैंने शराब तो पी थी |"
डॉ. भंडारे कहते हैं,
"ख़ैर, मैं आपको अभी हॉस्पिटल में दाखिल करने का इंतज़ाम करता हूँ पर उससे पहले मुझे पुलिस को भी सुचित करना होगा, क्योंकि कि यह एक हत्या का मामला है |"
आसिम को समझ ही नहीं आ रहा किस बात पर चौंके किस पर नहीं | सब कुछ बड़ा अजीब सा, बड़ा रहस्यमयी सा और वो भी यु यकायक | आसिम के मुँह से सिर्फ़ इतना ही निकलता है,
"हत्या..."
डॉ. भंडारे, आसिम से कहते हैं,
"जी, आपको इस अहम बात को समझना होगा कि आपकी हत्या की गई है |"
डॉ. भंडारे मेज पर रखें हुए फ़ोन को उठाकर उनके सहायक मि. बांका को अंदर आने के लिए कहते हैं तभी आसिम कुर्सी पर से

उठकर भंडारे के केबिन से भागते हुए बाहर आते हैं | जब ज़िंदगी अचानक एक ऐसे सवाल के सामने खड़ी हो जाए जैसा कि आसिम के सामने है तो उस पल के लिए यह समझना कि क्या करें, क्या नहीं, कोई भी निर्णय लेना बहुत मुश्किल सा हो जाता है | इंसान बस ऐसे सवालों से और ख़ुद से दूर भागना चाहता है | ठीक ऐसे ही आसिम भी अपनी आनेवाली मौत से, अपने डर से दूर भाग रहे हैं | जिस इंसान के दिल में दौलत के, रंगीन शामो के सपने ज़्यादा हो वो कभी भी जल्दी मरना नहीं चाहेगा और आसिम तो अभी भी कुंवारे हैं | ख़ूबसूरत लडकियों के दीवाने हैं लेकिन इस पल में उन्हें किसी भी ख़ूबसूरत लड़की में कोई दिलचस्पी पैदा नहीं हो रही है| सड़क पर भागते हुए, जब एक नौजवान जोड़ा उन्हें दिखाई देता है तब उनकी आँखें भर आती हैं, शायद यही सोचकर कि अगर वो जीवित रह पाते तो डॉली के साथ ऐसे ही... और उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं | आसिम के कानो में डॉ. भंडारे की बाते गूंज रही हैं | वो किसी तरह होटल तक पहुँचते हैं तभी उनके मोबाइल पर डॉली का फ़ोन आ जाता है | फ़िलहाल वो अपने स्वास्थ्य की बात किसी से बताना नहीं चाहते | वो डॉली से भी यही कहते हैं कि थोड़ी देर बाद ख़ुद फ़ोन करेंगे और फ़ोन काट देते हैं | जो इंसान कुछ ही दिनों में मृत्युशैया पर लेटने वाला हो उसे अब किसी भी मखमली बिस्तर पर नींद कैसे आ सकती हैं ? उसे बस डॉक्टर की बातें ही याद आ सकती है | आसिम भी पिछली रात की एक-एक बात, एक-एक घटना को याद करने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे पार्टी में उनसे कौन कौन मिला था ? कहीं उन लोगों में से तो किसी ने ज़हर नहीं पिला दिया ? वो एक-एक कर सारे नाम याद करने की कोशिश करते हैं; शीला, जयकुमार, डोरोथी, उनका

पुराना सचिव जिसे उन्होंने पिछले महीने नौकरी से निकाल दिया था, कहीं उसीने तो बदला लेने के लिए... वो अपने दिमाग पर और ज़ोर डालते हैं कि कौन हो सकता है ? जिसे ऐसे अंजान विष के बारें में पता हो और तभी अचानक...
उन्हें बिभूति का ख्याल आता है कि कहीं यह बिभूति तो नहीं |
"अरे हाँ, वो एक बार ऐसे ही विष और प्रतिरोधक के बारें में बात कर रहा था |"
आसिम को उस रात की एक-एक घटना याद आने लगती हैं जब बिभूति उनसे उनके ऑफिस में मिलने आया था और ऑफिस के बाहर कार पार्किंग में भी ऐसा ही कुछ कह रहा था, तन्हाई के पहले हिस्से में नायक को जो विष दिया गया हैं उसके प्रतिरोधक के बारें में तीसरे हिस्से में बताया है पर पूरा नहीं लिखा गया | आसिम उन यादों से बाहर आते हैं | उनके चेहरे पर एक तड़प, एक आक्रोश सा है कि कैसे कोई नाम या पैसों की ख़ातिर किसी की जान तक ले सकता है |

६. मुठभेड़

बिभूति अपनी बिल्डिंग से नीचे उतर कर कहीं जा रहा है | पीठ पर एक बड़ा सा बैग और हाथ में रोजाना का ऑफिस बैग है | वो जैसे ही बिल्डिंग के बाहर निकलता है उसकी नजर पड़ती है आसिम पर जो फुर्तीले क़दमों से बिभूति की ही ओर आ रहे हैं | बिभूति उनके पहुँचने तक रूक जाता है और उनके नजदीक पहुँचते ही कहता है,

"मैं जानता हूँ कि आपके शरीर में कौन सा विष है |"

आसिम चौंकते हुए,

"तुम कैसे जानते हो यह सब ?"

"ख़ैर, मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही है |"

ऐसा कहकर बिभूति चलने लगता है | आसिम तुरंत बिभूति के क़रीब जाकर उसका हाथ पकडकर उसे रोक देते हैं और पूछते हैं,

"बताओ ? किसने दिया मुझे यह ज़हर ?"

बिभूति सहज भाव से,

"मैं उसका प्रतिरोधक जानता हूँ और मुझे लगता है फ़िलहाल किसने, क्या और क्यों किया यह जानने से ज़्यादा ज़रूरी है इस विष के प्रतिरोधक के बारें में जानना |"

आसिम, बिभूति से प्रतिरोधक देने की विनंती करते हैं | बिभूति, आसिम को याद दिलाता हैं कि उसने कहा था कि एक दिन आएगा जब आसिम ख़ुद हाथ जोड़ते हुए आयेंगे बिभूति के पास, और

इतना कहते ही बिभूति फिर से अपनी राह पर चलने लगता है | आसिम को अहसास होता है कि बिभूति बहुत आगे निकल चुका है और आसिम भी दौड़ते हुए बिभूति के पास जाते हैं और फिर से बिभूति की बांह पकड़कर अपनी तरफ़ खिंचते हैं,
"यह खेल खेलना बंद करो और मुझे वो प्रतिरोधक देदो वर्ना मजबूरन मुझे पुलिस के पास जाना पड़ेगा | मेरे पास समय नहीं है |"
बिभूति, आसिम को उनकी चेतावनी का जवाब देता है,
"अवश्य जाईए, मुझे कोई जल्दी नहीं है |"
आसिम एक आख़िरी प्रयास करते हैं,
"अगर तुमने मुझे प्रतिरोधक नहीं दिया तो मैं सब सच बता दूंगा कि मेरे शरीर में जो ज़हर है उसके प्रतिरोधक के बारें में तुम जानते हो और तुम्हारी पटकथा 'तन्हाई' में भी ऐसे ही ज़हर के बारे में बताया गया है |"
बिभूति मुस्कुराते हुए पूछता है,
"कोई सबूत है आपके पास कि वो पटकथा मेरी है ? कौन सी पटकथा की बात कर रहे हैं आप ?"
आसिम को अहसास होता है कि बिभूति कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं है और वो बिभूति के बनाए षड़यंत्र में फंस चुके हैं | वो बिभूति के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं,
"मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ | मुझे मरने से बचा लो ?"
बिभूति शातिराना अंदाज़ में कहता है,
"ज़िंदगी इतनी सस्ती कब से हो गई कि हाथ जोड़ने मात्र से ही मिल जाए ? मैं भला आपको प्रतिरोधक क्यों दूँ ?"
आसिम को लगता है कि उनकी दौलत से वो सबकुछ हासिल कर

सकते हैं इसीलिए वो कहते हैं,
"तुम्हें जो चाहिए मैं दे दूंगा | बोलो क्या चाहिए तुम्हें ?"
बिभूति अपने ऑफिस के बैग से एक अख़बार का पन्ना निकालता है और एक लेख जिसे बिभूति ने लाल रंग की स्याही से चिन्हित किया है वो लेख आसिम को दिखाता है |
"यह लेख तन्हाई फ़िल्म की पटकथा के विषय में है | देखिए क्या लिखा है ? नई दिशा देनेवाली एक अनोखी पटकथा... आसिमजी क्या आप मेरे मन की टीस को समझ सकते हैं ? क्या आप मीडिया में जाकर कह सकते हैं कि तन्हाई का असली लेखक रिचा सिंह नहीं बल्कि मैं हूँ मैं ? मैं बिभूतिभूषण नाग | नहीं बता सकोगे आसिमजी, कभी नहीं |"
आसिम कहते हैं,
"अगर इसका कोई ठोस सबूत होता तो..."
अब बिभूति की आवाज़ में एक आक्रोश सा है,
"सबूत कैसे होंगे ? जब रिचा और आदी दोनों ने मिलकर सारे सबूत सबकुछ मिटा दिए तो कैसे सबूत ? कौन से सबूत ? जब भी इस फ़िल्म के इश्तेहारो पर नजर पड़ती हैं तो दिल करता है कि वहाँ से गुजरने वाले हर एक इंसान को बताऊ कि मैं, मैं ही हूँ इसका असली लेखक | बचपन से मेरा यही तो सपना था कि एक फ़िल्म लेखक बनु और आप सबने मिलकर उस सपने को मिटा दिया | इसीलिए मैंने भी उस दिन अदालत में यह स्वीकार नहीं किया कि मैं ही इस फ़िल्म की पटकथा का असली लेखक हूँ, क्योंकि इससे अच्छा कोई तरीका ही नहीं था उस आदी को सजा दिलाने का और अब आपकी बारी है | जब कोई सपना टूटता है तो मानो ज़िंदगी छुट गई हो | अब वही पल-पल मरने का अहसास

कैसा होता है वो अब आपको भी पता चलेगा आसिम मल्लिकजी|"
आसिम, बिभूति को समझाने की कोशिश करते हैं,
"पर इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी | तुम मुझे वो प्रतिरोधक देदो और बदले में मुझसे जो चाहो लेलो | भरोसा करो |"
"मेरी दो शर्ते हैं |"
आसिम बिना शर्ते सुने ही हामी भर देते हैं क्योंकि इस वक़्त जिदंगी की जो शर्त लगी है | बिभूति कहता है,
"तन्हाई पटकथा का आख़िरी यानि कि तीसरा हिस्सा अधुरा है उसे फिर से लिखा जाए और इस बार वो मेरी जिदंगी पर आधारित होगा, पर लेखक का नाम रिचा सिंह ही रहेगा |"
"ठीक है और दूसरी शर्त ?"
बिभूति दूसरी शर्त भी बताता है कि,
"२ घंटे में सीएसटी रेलवे स्टेशन पर १ करोड़ रुपये नगद पहुँचाने का इंतज़ाम करो |"
आसिम चौंक जाते हैं,
"एक करोड़ रुपये ? वो भी नगद ? तुम जानते हो क्या मांग रहे हो ? मेरे पास फ़िलहाल इतना नगद नहीं है | वो भी इतनी जल्दी?"
बिभूति अटल मनःस्थिति के साथ,
"ठीक है | २ करोड़ दे दो |"
"यह क्या मज़ाक है ? कुछ तो इंसानियत दिखाओ ?"
बिभूति फिर कहता है,
"३ करोड़ |"
आसिम, बिभूति को समझाने की हर संभव कोशिश करते हैं,
"२ घंटे में कैसे मुमकिन हैं यह ?"

अब बिभूति का भी सब्र टूट जाता है,
“रहने दीजिए, अलविदा |”
बिभूति इतना कहकर तेज़ क़दमों से चलने लगता है | आसिम समझ जाते हैं कि मोलभाव के चक्कर में ज़िंदगी इतनी सस्ती ना हो जाए कि फिर कुछ भी ना बचे | आसिम भागकर बिभूति को रोकते हैं,
“ठीक है, मैं सीएसटी रेलवे स्टेशन पर तुम्हारे १ करोड़ नगद पहुँचाने का इंतज़ाम करता हूँ |”
“नई ज़िंदगी मुबारक हो आसिमजी | ज़िंदगी रही तो ऐसे कई करोडो कमा लेंगे | अब अपना मोबाइल फ़ोन मुझे दीजिए |”
आसिम अपना आईफ़ोन बिभूति को दे देते हैं | बिभूति आईफ़ोन को बंद कर देता है और ख़ुद का साधारण सा फ़ोन आसिम को देते हुए कहता है,
“अब आप डॉलीजी को फ़ोन करके उनसे कहिए कि वो १ करोड़ रुपये नगद लेकर सीएसटी रेलवे स्टेशन पहुँचे और उन्हें बताएं कि आपके आईफ़ोन की बैटरी निम्न रह गई है सो वो आपको इसी मोबाइल पर फ़ोन करके बात कर सकती हैं और हाँ, गलती से भी कोई गलती करने की कोशिश मत कीजिएगा |”
आसिम का खून तो खौल रहा है कि कहाँ यह साधारण सा नौकरीपेशा आदमी और कहाँ मैं | मगर मरता क्या ना करता इसीलिए आसिम, बिभूति को आश्वासन देते हैं कि जैसा बिभूति चाहता है ठीक वैसा ही होगा | दोनों के क़दमों की गति अब एक समान है | कुछ क़दम चलने पर आसिम कहते हैं,
“अब तो मैंने तुम्हारी दोनों शर्तें मान ली हैं अब तो मुझे वो

आसिम समझ जाते हैं कि मोलभाव के चक्कर में जिदंगी इतनी सस्ती ना हो जाए कि फिर कुछ भी ना बचे। आसिम भागकर बिभूति को रोकते हैं, "ठीक है, मैं सीएसटी रेलवे स्टेशन पर तुम्हारे १ करोड़ नगद पहुँचाने का इंतज़ाम करता हूँ।"

प्रतिरोधक देदो |"
बिभूति बिना पैसे लिए भला कहाँ मानने वाला था | यही बात वो आसिम से भी कहता है पर आसिम भी उसे विश्वास दिलाते हैं कि पैसे मिल जायेंगे और उन्हें जल्द से जल्द प्रतिरोधक दे दिया जाए क्योंकि वो प्रतिपल मौत की ओर अग्रसर हैं | बिभूति कहता है,
"क्या आपको यह लगता है कि मैं इस बैग में प्रतिरोधक लेकर मुम्बई की सडको पर घूमता हूँ और फेरीवालो की तरह उसका प्रचार करता हूँ ?"
"मुझे सिर्फ़ जल्द से जल्द प्रतिरोधक की ज़रूरत है | मैं हर मिनट मौत की ओर बढ़ रहा हूँ |"
बिभूति, आसिम को उसके ऑफिस चलकर प्रतिरोधक लेने के लिए कहता है | आसिम के पूछने पर बिभूति बताता है कि उसका ऑफिस बेलार्ड पियर में है | आसिम कहते हैं,
"तो फिर जल्दी करो | मेरी कार से चलते हैं |"
बिभूति कहता है,
"नहीं | हम ट्रेन से जायेंगे | यहाँ से अंधेरी और वहाँ से सीएसटी| तब तक आप तन्हाई का तीसरा हिस्सा भी सुन लेना और तीसरा हिस्सा एक़दम सही होना चाहिए जैसा मैं कहूँगा वैसा ही क्योंकि इस बार कोई गड़बड़ हुई तो यकीन कीजिए आपको दूसरा मौका नहीं मिलेगा |"
आसिम हर कडवे घूँट को पीकर भी शांत हैं क्योंकि ज़हर जो पी चुके हैं | वो बिभूति से कहते हैं,
"तीसरे हिस्से पर तो फ़िल्म अगले साल बनेगी | तुम्हारे पास काफ़ी समय है पटकथा सुनाने का |"
"तब शायद मैं दुबारा न मिल पाऊँगा |"

आसिम पूछते हैं,
"क्यों ? तुम कहीं जानेवाले हो ? और यह इतना बड़ा बैग लेकर कोई ऑफिस जाता है क्या ?"
"मल्लिकजी ना तो यह आपका ऑफिस है ना आप यहाँ के मालिक| आप पहले मेरी पटकथा सुन ले फिर मैं आपको आपका प्रतिरोधक दे दूंगा |"
आसिम, बिभूति की हर बात मानने को विवश हैं पर बारबार बिभूति से एक ही सवाल करते हैं,
"मैं तुम्हारी पटकथा भी ज़रूर सुनूंगा पर मुझे पहले प्रतिरोधक तो देदो | तुम्हारी पटकथा ख़त्म होने तक मैं मर गया तो ? तुम्हें नहीं पता पर मेरे पास इतना समय नहीं है |"
बिभूति चलते जा रहा है और कहता है,
"आप बस मेरे पीछे-पीछे चलिए और मरने का ख्याल अपने दिमाग से निकाल दीजिए | यह भागता हुआ शहर देख रहे हैं आप ? यहाँ सिर्फ़ संघर्ष की लड़ाई में ही हर रोज़ कई बिभूति पैदा होते हैं और मरते हैं | मैं अगर अब तक इस महानगर की जद्दोजहद में, संघर्ष की लड़ाई में बच पाया हूँ तो आप भी बच सकते हैं | अगर आप मेरी पटकथा पूरी होने के पहले ही मर गए तो यह आपकी बदकिस्मती, पर अगर आप जीवित रहे तो आपके पास आपकी संजीवनी यानी कि आपका प्रतिरोधक होगा | आप तय कीजिए आप क्या चाहते हैं ?"
बिभूति अपनी बात कहने के बाद आसिम की प्रतिक्रिया का इंतज़ार नहीं करता और चलते रहता है बल्कि आसिम, बिभूति की बातें सुनकर कुछ पल के लिए वही विचार करते हुए रूक जाते हैं | बिभूति चलते हुए बहुत दूर निकल जाता है और तब आसिम को

अहसास होता है कि वो फिर से बिभूति से पिछड़ गए हैं | वो भागते हुए जाते हैं और बिभूति के क़दमों से क़दम मिला लेते हैं,
"ठीक है | मैं तुम्हारी पटकथा सुनूंगा, अब जल्दी शुरू करो |"
बिभूति बिना आसिम की ओर देखे अपनी बात कहता है,
"कोई सुननेवाला मिल जाए इससे ज़्यादा बड़ी बात किसी भी लेखक के लिए हो ही नहीं सकती |"
बात करते हुए बिभूति का अंदाज़ संजीदा हो जाता है |
"एक फ़िल्म निर्माता के तौर पर आपने कई पटकथाएँ सूनी होगी और उनका आनंद भी लिया होगा पर आज आप पहली बार कोई पटकथा समझेंगे |"
आसिम आश्चर्य से,
"पटकथा समझूंगा ?"
बिभूति आगे कहता है,
"यह एक आम आदमी पर आधारित पटकथा है जिसे आपकी अंग्रेजी भाषा में, आपकी जीवनशैली में कहते हैं - नोबड़ी, यानि कि कोई नहीं | ऐसे आम आदमी पर आधारित पटकथा को समझने के लिए आपको यह समझना होगा कि कैसे ये लाखो आम आदमी हर दिन ऐसे बड़े शहरो में ज़िंदगी के लिए संघर्ष करते हैं | उनके संघर्ष को महसुस करना होगा |"
बिभूति और आसिम चलते-चलते काफ़ी दूर निकल गए हैं, इतने दूर कि जहाँ से चले थे वहाँ से देखने पर चींटियो के समान नजर आए |

अहसास होता है कि वो फिर से बिभूति से पिछड़ गए हैं | वो भागते हुए जाते हैं और बिभूति के क़दमों से क़दम मिला लेते हैं,
"ठीक है | मैं तुम्हारी पटकथा सुनूंगा, अब जल्दी शुरू करो |"
बिभूति बिना आसिम की ओर देखे अपनी बात कहता है,
"कोई सुननेवाला मिल जाए इससे ज़्यादा बड़ी बात किसी भी लेखक के लिए हो ही नहीं सकती |"
बात करते हुए बिभूति का अंदाज़ संजीदा हो जाता है |
"एक फ़िल्म निर्माता के तौर पर आपने कई पटकथाएँ सूनी होगी और उनका आनंद भी लिया होगा पर आज आप पहली बार कोई पटकथा समझेंगे |"
आसिम आश्चर्य से,
"पटकथा समझूंगा ?"
बिभूति आगे कहता है,
"यह एक आम आदमी पर आधारित पटकथा है जिसे आपकी अंग्रेजी भाषा में, आपकी जीवनशैली में कहते हैं - नोबड़ी, यानि कि कोई नहीं | ऐसे आम आदमी पर आधारित पटकथा को समझने के लिए आपको यह समझना होगा कि कैसे ये लाखो आम आदमी हर दिन ऐसे बड़े शहरो में ज़िंदगी के लिए संघर्ष करते हैं | उनके संघर्ष को महसुस करना होगा |"
बिभूति और आसिम चलते-चलते काफ़ी दूर निकल गए हैं, इतने दूर कि जहाँ से चले थे वहाँ से देखने पर चींटियो के समान नजर आए |

७. उम्मीद

आसिम और बिभूति, दोनों रेलवे प्लेटफ़ॉर्म के पूल पर आ पहुँचे हैं| आसिम पूल से नीचे उतरने के दौरान लड़खड़ाते हैं पर बिभूति, आसिम को गिरने नहीं देता | रेलवे प्लेटफ़ॉर्म ऐसी जगह है जहाँ सैकड़ो लोग आपको भागते-दौड़ते नजर आ जायेंगे जैसे कहीं कुछ छुट रहा हो | ऐसे ही एक जवान लड़का एक बूढ़े आदमी से पूल पर चढ़ने के दौरान टकरा जाता है पर उस बूढ़े आदमी से बिना कुछ कहें ही आगे बढ़ जाता है | बूढा आदमी साँसों की ताकत उस जवान लड़के को कोसने में खर्च कर देता है,

"अरे ! पता नहीं कहाँ-कहाँ से चलें आते हैं मुम्बई में ?"

बिभूति की याद ताजा हो जाती है जब उसके पिताजी ने भी ऐसा ही कुछ सवाल किया था ?

"तुम मुम्बई जाकर करोगे क्या ?"

"मैं फ़िल्म की पटकथा लिखने का प्रक्षिक्षण लूँगा और फ़िल्म जगत में एक बहुत बड़ा लेखक बनूँगा |"

पिताजी बिभूति को समझाने की कोशिश करते हैं,

"मुम्बई में पैसा कमाना इतना आसान है क्या ?"

बिभूति ने एक बहुत ही प्यारा-सा, सुनहरे रंग का कुत्ता अपने हाथों में ऐसे पकड़ा है जैसे कोई छोटा सा बच्चा हो | दरअसल

अभी वो छोटा सा पिल्ला ही है, जिसका नाम गोर्की (Gorky) है |
बिभूति पिताजी को समझाने की कोशिश करता है,
“आसान ना सही, पर एक बार कोशिश ज़रूर करूँगा |”
आमतौर पर किसी भी मध्यमवर्गीय पिता को इन लेखन और अभिनय में कभी कोई रूची या कोई भविष्य नहीं दिखता |
“फार्मेसी की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर ? पहले वो पूरी करो फिर जहाँ मर्ज़ी आए पत्थर तोड़ने चलें जाना |”
बिभूति ने जब ठान ही लिया था कि अब सिर्फ़ लेखक ही बनना हैं तो उसे किसी की बातें कहाँ समझ में आने वाली थी और कहाँ सुननी थी | वो पिताजी से कहता है,
“मेरे तीन साल पहले से ही इस फार्मेसी में स्वाहा हो चुके हैं | अब एक भी पल मैं बर्बाद नहीं होने देना चाहता |”
अच्छी खासी पढ़ाई बीच में छोड़ना, जमी-जमाई दवाई की दूकान को आगे बढाने के बजाय मुम्बई जैसे शहरों की ख़ाक छानना यह पिताजी को गंवारा ना था,
“और यह जो दवाईयों की दूकान है इसे कौन सम्भालेगा ?”
बिभूति गुस्से और प्रार्थना, दोनों सुर एकसाथ मिलाकर कहता हैं,
“मैं सारा दिन, सारी ज़िंदगी इस दवाई की दूकान में नहीं गुजारना चाहता | जिसे यह काम पसंद हो वो करें पर मैं नहीं | पिताजी आप एक बार समझने की कोशिश करें कि मेरा मन फार्मेसी या दवाईयों में नहीं लगता |”
तभी जैसा कि आम घरो में होता है बिभूति की माँ भी उस दंगल में शामिल हो गई | भारत के पारंपरिक जीवन में यह आम बात है कि बड़े-बुजुर्ग बिना बच्चो की मर्ज़ी, पसंद जाने आपस में ही शादी-ब्याह का वादा कर देते हैं | बिभूति की माँ कहती है,

"रे बिभू, ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ? हमारा नहीं पर एक बार राधिका के बारें में तो सोच ? उसका क्या होगा फिर ?"
बिभूति समझ नहीं पाता कि फार्मेसी और दुकान के बाद यह नया मोर्चा कैसे खुल गया | कहानी में नया मोड़ !
"राधिका का क्या होगा मतलब ?"
माँ बताती है कि उन्होंने राधिका के माता-पिता को वचन दिया है कि जैसे ही राधिका की पढ़ाई पूरी होती है मतलब राधिका स्नातक कर लेती है तब उसके बाद राधिका और बिभूति की शादी कर देंगे|
बिभूति के लिए तो यह एक और चौंकाने वाली खबर थी,
"माँ, मेरा पूरा ध्यान सिर्फ़ एक फ़िल्म लेखक बनने में ही है और वैसे भी मैंने कोई वादा नहीं किया | शादी और यह सब तो सही समय का इंतजार कर सकते हैं |"
"और राधिका को क्या जवाब दूँ मैं ?"
बिभूति स्पष्ट तौर पर कहता है,
"वही जो सच है और तुम भी यह समझ लो की वो सिर्फ़ मेरी एक अच्छी दोस्त है |"
बिभूति तो बड़ी आसानी से अपना फ़ैसला माँ-बाप को बताकर चला जाता है पर माँ-बाप बैठ कर बस यही सोचते हैं कि अब दिशाहीन भविष्य को सही दिशा कैसे मिलेगी...

*

कॉलेज की इमारत के बाहर ढ़ेर सारी दुपहिया गाड़िया कतारबद्ध खड़ी हैं | कहीं कुछ लड़के अपनी मस्ती में हैं तो कही कुछ युगल जोड़े अपनी दुनिया में खोए हैं | राधिका अपनी एक्टिवा पर बैठी हुई बिभूति से बात कर रही है जो एक्टिवा के पास ही खड़ा है |

आज, राधिका का मिजाज थोडा-सा रूखा है | शायद, अंदर से नाराज है | बिभूति पूछता है,
"फ़ोन क्यों नहीं उठा रही थी मेरा ?"
"क्योंकि मुझे परदेसियो से बात करने में कोई रूची नहीं है |"
"परदेसी मतलब ?"
राधिका ताना मारती है,
"मैं तुम्हारे जितनी अकलमंद ना सही पर इतना तो मैं भी जानती हूँ कि जो लोग एक बार मुम्बई चलें जाते हैं वो वही के होकर रह जाते हैं |"
अब बिभूति को महसूस होता है की राधिका उससे खफा है | वो उसे समझाने की कोशिश करता है,
"मैं मुम्बई अपना भविष्य संवारने जा रहा हूँ पर इसका यह मतलब नहीं है कि मैं भूल जाऊंगा कि मेरा कोई..."
राधिका, बिभूति की बात बीच में ही काटते हुए कहती है,
"कोई दोस्त भी हैं |"
राधिका के दिल को, उसकी भावनाओं को जो ठेस पहूँची है बिभूति को भी इसका अहसास होता है,
"हाँ मेरा मतलब तुमसे ही है और..."
राधिका फिर से बिभूति की बात काटती है,
"ऐसे कई दोस्त मिल जायेंगे तुम्हें मुम्बई में |"
बिभूति, राधिका का ताना समझ जाता है इसीलिए विषय बदलने की कोशिश करता है और उसे बताता है कि मुम्बई में उसके पिताजी के एक दोस्त हैं जो एक दवा बनानेवाली कंपनी में बड़े पद पर कार्यरत हैं और वे बिभूति को उसी कंपनी में नौकरी दिलवा रहे हैं | जिससे वहाँ रहकर रोज़मर्रा के खर्चे भी उठा पाएगा और

साथ ही साथ पटकथा लेखन और साहित्य सीख कर अपने सपने को पूरा कर पाएगा | बिभूति कहता है,

"कल रात मेरी ११:०५ बजे की ट्रेन है मुम्बई के लिए | तुम आओगी ना मुझे विदा करने, मुझे शुभकामनाए देने ?'

राधिका इनकार करते हुए,

"मेरी शुभकामनाए तो हमेशा से ही तुम्हारे साथ हैं और मुझे पूरा भरोसा है कि तुम एक दिन बहुत बड़े लेखक ज़रूर बनोगे, पर इतनी देर रात शायद मैं नहीं आ पाउंगी |"

बिभूति, राधिका से वादा करता है कि वो उसकी शादी में ज़रूर आएगा | बिभूति शायद अप्रत्यक्ष रूप से ही सही पर यह बताना चाहता है कि वो राधिका से शादी नहीं कर सकता | राधिका ने प्रेम किया है, इश्क़ नहीं | हालांकि, दोनों शब्दों का सामान्य अर्थ एक ही है पर प्रेम में एक गहराई है, एक तपस्या है, एक सच्चाई है, एक पवित्रता है जबकि इश्क़ तो वो खुमारी है जो वक़्त के साथ उतर जाती है | राधिका भी अपना फ़ैसला सुनाती है,

"मैं भी वादा करती हूँ कि मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी |"

राधिका जैसे उसी पल उस बिछडन से, उस कमज़ोर पल से दूर चली जाना चाहती हो | वो अपनी एक्टिवा का बटन दबाकर उसे चालू करती है और बिभूति से नजरें मिलाए बिना, पल भर में ही बिभूति की आँखों से ओझल हो जाती है |

*

रेलवे प्लेटफ़ॉर्म एक ऐसी जगह हैं जहाँ आपको सच्ची भावनाओ का सैलाब नजर आ जाएगा | यही वो जगह है जहाँ दिल से

दूर, प्लेटफ़ॉर्म के एक कोने पर जहाँ से बिभूति की झलक मिल सकें पर बिभूति कतरा भर भी ना देख पाए, कुछ ऐसे छिपकर खड़ी है राधिका।

एकदूजे के लिए शुभकामनाए निकलती हैं | एकदूजे यानी कि जो विदा करने आया है वो और जो विदा लेकर जा रहा है वो | सबसे दिलचस्प बात यह है कि प्लेटफ़ॉर्म पर रूकने वाला कोई भी नही है पर दोनों को ऐसा लगता है कि दोनों एकदूजे को छोड़कर जा रहे हो | रात के ११:०० बजे हैं और शायद इसी कारण प्लेटफ़ॉर्म पर बहुत ज़्यादा शोरगुल नहीं है | बिभूति मुम्बई जाने वाली ट्रेन में खिड़की के पास बैठा है और खिड़की के बाहर प्लेटफ़ॉर्म पर बिभूति के माता-पिता, बिभूति के कुत्ते गोर्की को हाथ में लिए खड़े हैं | दूर, प्लेटफ़ॉर्म के एक कोने पर जहाँ से बिभूति की झलक मिल सकें पर बिभूति कतरा भर भी ना देख पाए, कुछ ऐसे छिपकर खड़ी है राधिका | शायद वो नहीं चाहती थी कि बिभूति उसे भीगी हुई पलकों में देखे क्योंकि राधिका यह कैसे देख पाती कि उसका प्रेम, उसका बिभूति उसे हमेशा-हमेशा के लिए छोड़कर चला जाएगा| वैसे भी वो बिभूति को आँसुओ के साथ विदा नहीं करना चाहती थी पर बिभूति की आँखें भी राधिका को ही तलाश रही हैं इसी कारण उसके चेहरे पर एक मायूसी सी है |११ बजकर ०५ मिनट पर ट्रेन की आख़िरी सिटी बजती है और ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफ़ॉर्म से दूर जाने लगती हैं | बिभूति के माता-पिता नम आँखों से हाथ हिलाते हुए बिभूति को विदा कर रहे हैं और तो और गोर्की की आँखों में भी पानी है | बिभूति भी खिड़की से पीछे की और प्लेटफ़ॉर्म पर अपने माता-पिता और अपने प्यारे से गोर्की की एक झलक देखने की कोशिश कर रहा है, साथ ही इस आख़िरी आस में कि राधिका भी वही कहीं खड़ी हो | जब ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म से बहुत दूर निकल कर एक धुंधली आकृति सी हो जाती है तब राधिका जहाँ छिपकर खड़ी थी वहाँ से प्लेटफ़ॉर्म पर आकर ट्रेन के आख़िरी

हिस्से को देखती रहती है। राधिका और बिभूति के माता-पिता प्लेटफॉर्म से बाहर आ जाते हैं और तीनों एक रिक्शे में बैठ जाते हैं।

८. बस स्टॉप

रात ११:३० बजे मोहन पंजाब बार से बाहर आते हुए दिनेश के क़दम लड़खड़ाते हैं और बिभूति, दिनेश को ऑटो में बैठने में मदद करता है | दिनेश के जाने के बाद बिभूति बस पकड़ने के लिए बस स्टॉप की तरफ़ चलना शुरू करता है जो कि कुछ ही दूरी पर है | बिभूति चलते हुए देखता है कि बस स्टॉप से कुछ ही क़दम आगे एक युगल जोड़ा खड़ा है; एक लड़का जो कि मोटरसाइकिल पर बैठा है और जिसकी पीठ बिभूति की ओर है | लड़की मोटरसाइकिल के पास खड़ी है और दोनों में शायद कोई कहासुनी हो रही है | लड़का बहुत ही गुस्से में मोटरसाइकिल चालू करता है और लड़की का पर्स उसके हाथ से छिनकर भाग जाता है | इसी दौरान बिभूति चलते हुए बस स्टॉप पर पहुँच जाता है | वो लड़की ना पर्स बचा पाती है, ना उस लड़के को रोक पाती है और आख़िरकार हारकर बस स्टॉप की तरफ़ आती है |

अँधेरी रेल्वे प्लेटफ़ॉर्म पर ट्रेन का इंतजार करते हुए बिभूति आसिम को बताता है कि,

"इतनी ख़ूबसूरत लड़की मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार देखी थी| कुछ पल तो मैं उसे देखता ही रह गया | एक अजीब सा चुम्बकीय व्यक्तित्व था उस लड़की में जो मुझे उसकी ओर खिंच रहा था | मैं उससे बात करना चाहता था पर मुझ जैसे साधारण सी नाक-नक्श वाले आदमी में इतनी हिम्मत कहाँ थी ? मैंने ऐसा जताने

की कोशिश की जैसे मैंने उसे देखा ही नहीं और सामने सड़क पर देखता रहा |"

आसिम पूछते हैं,

"फिर ?"

बिभूति बताता है कि फिर जैसे कानो में शहद घोल दिया हो ऐसी एक आवाज़ बिभूति के कानो में पड़ती है |

वो लड़की पहली दफा बिभूति से बात करती है और बताती है उसे घर पहुँचने में मदद कि ज़रूरत है क्योंकि उसका पर्स चोरी हो गया है |

आसिम एक बात ग़ौर करते हैं की बिभूति जब भी रिचा की बात करता है तब उसके चेहरे पर वो प्रेम, वो जज्बात उभर कर आ जाते हैं | बिभूति कहता है,

"मैं चाहकर भी अपनी खुशी को, अपनी उत्तेजना को छिपा नहीं पाया | मुझे इस बात से खुशी हो रही थी कि इतनी ख़ूबसूरत लड़की मुझसे मदद मांग रही है |"

लड़की कहती है,

"मेरा नाम रिचा सिंह है और अभी-अभी मेरा पर्स चोरी हो गया है जिसमे मेरा मोबाइल भी था | मेरे पास तो घर जाने तक के पैसे नहीं हैं | अगर किसी तरह मुझे घर पहुँचने में मदद कर देते तो...?"

बिभूति मुस्कुराते हए,

"कोई बात नहीं पर सबसे पहले आपको पुलिस में शिक़ायत दर्ज करवानी चाहिए |"

रिचा तपाक से कहती है,

"नहीं-नहीं | देर रात पुलिस के पास बिलकुल नहीं | एक बार

बिभूति, "मैं उससे बात करना चाहता था पर मुझ में इतनी हिम्मत कहाँ थी ? मैंने ऐसा जताने की कोशिश की जैसे मैंने उसे देखा ही नहीं और सामने सड़क पर देखता रहा।"

पहले भी पुलिस का चक्कर झेल चुकी हूँ |"
बिभूति उसकी परेशानी समझ जाता है,
"ठीक है | पर आप रहती कहाँ हैं ?"
"जी मैं अंधेरी में रहती हूँ |"
तब बिभूति उसे बताता है कि वो भी गोरेगांव ही रहता है, तो वो एक टैक्सी कर लेंगे और रिचा को अँधेरी उसके घर छोड़ने के बाद आगे गोरेगांव के लिए निकल जाएगा | बिभूति और रिचा दोनों टैक्सी में बैठ जाते हैं |

बिभूति, आसिम से कहता है कि,
"टैक्सी में बैठने के बाद मन में ख़ुशी की लहरें दौड़ती रही | मैं उस लड़की के बारें में जानना चाहता था, शायद उसे अपना दोस्त बनाना चाहता था और क़िस्मत भी उस रात मेरे साथ थी क्योंकि अगले ही पल में वो हुआ जिसकी मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता था | उसने मेरे दिल की बात कह दी |"

रिचा, बिभूति से कहती है,
"अगर आप बुरा न माने तो क्या हम कही रूककर कुछ खा सकते हैं ? मुझे बहुत भूख लगी है |"
बिभूति ख़ुशी से,
"मैं भी यही सोच रहा था | मुझे भी बहुत भूख लगी है | हम खाना खाने के बाद कोई दूसरी टैक्सी कर लेंगे |"
बिभूति और रिचा किसी अच्छे से रेस्तरां में बैठते हैं |

"आसिमजी, मैंने ज़िंदगी में पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था | रेस्तरां में बैठे हुए सभी लोगों की नजरें सिर्फ़ रिचा को ही

देख रही थी और जैसे उन्हें मुझसे ईर्ष्या भी हो रही थी कि मेरे जैसा साधारण आदमी इतनी ख़ूबसूरत लड़की के साथ बैठा है |"
बैरा अभी तक उनका खाना नहीं लाया है | बिभूति आगे कहता है,
"जब रिचा को पता चला कि मेरा नाम बिभूतिभूषण नाग है तो वो बोली कि यह बड़े पुराने जमाने जैसा नाम है और यह सुनकर मुझे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई | मैं रिचा के सामने ख़ुद को किसी कबाड़ जैसा समझ रहा था |"
बैरा खाना लेकर आता है और शायद रिचा को भी अपनी गलती का अहसास हो जाता है इसीलिए वो कहती है,
"आजकल के लोगों को अंग्रेजी नाम पसंद हैं | शायद, उन्हें ऐसे नाम से लगता है कि यह सफलता कि निशानी है पर मुझे तो सादगी भरे नाम बहुत पसंद हैं और आपका भी नाम मुझे वाकई अच्छा लगा |"
यह सुनते ही बिभूति का मुरझाया सा चेहरा सूरजमुखी की तरह खिल उठता है | रिचा, बिभूति में दिलचस्पी दिखाते हुए पूछती हैं,
"वैसे आप क्या काम करते हैं ?"
रिचा का हर सवाल बिभूति को उत्साह से भर देता है और बिभूति जैसे किसी देवी के सामने खड़ा हो वैसे शालीनता से अपने बारें में सच कहना चाहता है,
"मैं एक दवाईयों की कंपनी में हिन्दी विभाग में..."
रिचा बीच में ही बिभूति की बात काटते हुए,
"आप नौकरी करते हैं ?"
"हाँ, और आप ?"
रिचा कहती हैं,
"अंदाजा लगाईए ?"

बिभूति के दिल की बात बिभूति की जुबान पर कुछ इस तरह से आती है,
"आप इतनी ख़ूबसूरत हैं | आप ज़रूर कोई नायिका मेरा मतलब किसी फ़िल्म, टीवी में अभिनय या मॉडलिंग करती होगी |"
रिचा तुरंत कहती है,
"बहुत अकलमंद हैं आप तो | मैंने अभी २ महीने पहले ही *'मोंटाज फ़िल्म और टेलीविज़न अकादमी'* से अभिनय का प्रशिक्षण पूरा किया है और फ़िलहाल दो म्यूजिक विडियो भी कर रही हूँ | मेरा सपना है एक मशहूर फ़िल्म नायिका बनने का | मैं क्रिएटिव हूँ और मुझे ऐसे ही लोगों का साथ बहुत पसंद है |"
बिभूति के गले में जैसे कोई ख़ुशी अटक सी गई हो जो आँखों में चमक और होंठो पर बड़ी सी मुस्कान के रूप में रिचा को नजर आती हैं | रिचा पूछती है,
"क्या बात हैं ? आप अचानक इतने खुश क्यों हो गए ?"
बिभूति अपनी उत्सुकता को दबाते हुए कहता है,
"हम तो एक ही हैं... मेरा मतलब मैंने भी 'मोंटाज फ़िल्म और टेलीविज़न अकादमी' से पटकथा लेखन का प्रशिक्षण पूरा किया है और मुझे भी क्रिएटिव लोगों का साथ बहुत पसंद है | हमारी सोच कितनी मिलती है न !"
हालांकि रिचा को इसमें खुश होने वाली ऐसी कोई बात नजर नहीं आती, फिर भी यह जानने के लिए कि बिभूति सच कह रहा है या बाकि लडको की तरह यह भी मौक़ापरस्त है, वो पूछती है,
"सच ? तुमने कब लिया प्रशिक्षण ?"
बिभूति उत्साह के साथ,
"क़रीबन तीन साल पहले |"

"अच्छा, मैंने तो अभी २ महीनों पहले ही प्रशिक्षण पूरा किया है तभी शायद हम मिल नहीं पाए |"
बिभूति तो ऐसे मायूस होता है जैसे कोई सुनहरा अवसर खो दिया हो, वो कहता है,
"मैं एक फ़िल्म लेखक बनना चाहता हूँ पर पैसों की कमी के कारण यह नौकरी कर रहा हूँ |"
जब भी एक ही कश्ती के दो मुसाफिर मिलते हैं तो ख़ुशी का अहसास भी होता है और एकदूजे के संघर्ष का भी | बिभूति के पूछने पर रिचा बताती है कि वो चंडीगढ़ से ताल्लुक रखती है, जहाँ उसके पिताजी रेल्वे में बहुत छोटे से पद पर नौकरी करते हैं| रिचा की माँ गृहणी हैं और रिचा का एक छोटा भाई है जो फ़िलहाल वाणिज्य में स्नातक कर रहा है | अचानक रिचा को बिभूति की बात याद आती है कि वो एक लेखक है | रिचा पूछती है,
"आपने बताया कि आप फ़िल्म लेखक हैं ? आपने कितनी पटकथाएँ लिखी हैं ? मुझे बहुत ख़ुशी होगी आपकी पटकथा पर बनी हुई फ़िल्म देखकर |"
इतना सुनते ही बिभूति अपनी नजरें मेज में गड़ा देता है और उसकी आँखों में एक मायूसी, एक हार साफ झलक रही है | वो बताता है कि अब तक उसकी किसी भी पटकथा पर फ़िल्म नहीं बन पाई है | बिभूति, रिचा को यह जताने के लिए कि वो हार माननेवालो में से नहीं है और साथ ही अपनी हार का कारण भी स्पष्ट करने के लिए रिचा से कहता है,
"मुम्बई आने के बाद शुरू में बहुत कोशिश की थी कि मेरी पटकथा को कोई फ़िल्म निर्माता या निर्देशक़ देखे, पढ़े, फ़िल्म बनाए पर

कोई सफलता हाथ नहीं लगी क्योंकि एक तो मैं मार्केटिंग में इतना अच्छा नहीं हूँ, दूसरा मुझे इतना समय भी नहीं मिल पाता है |"

रिचा सहानुभूति जताते हुए,

"हाँ, नौकरी में ही व्यस्त रहते होंगे |"

रिचा की सहानुभूति पाते ही बिभूति कहता है,

"मैं सोच रहा हूँ कि मेरी पटकथाएँ फ़िल्म निर्माताओं को बेचने की जिम्मेदारी किसी जानकार व्यक्ति को दे दूँ या किसी को यह काम करने के लिए रख लू |"

रिचा कहती है,

"अगर आपको बुरा न लगे तो मैं इसमें आपकी मदद करना चाहूंगी| आपके जैसे अच्छे इंसान की मदद करके मुझे बहुत ख़ुशी होगी और वैसे भी हम एक ही अकादमी के छात्र हैं ना, मोंटाज अकादमी?"

बिभूति बहुत खुश होकर रिचा की ओर देखता है और हामी भरता है | वो मन ही मन यह सोचते हुए कि उसे पटकथा लिखना आया हो या ना आया हो पर मेरी कथा में यह ख़ूबसूरत मोड़ तो मोंटाज के ही कारण आया है और इसीलिए दिल से मोंटाज अकादमी के लिए दुआ करता है |

बिभूति, आसिम से कहता है कि,

"खाना खाने के बाद हमनें दूसरी टैक्सी कर ली | इतने सालो में पहली बार मुझे ख़ुद पर गर्व सा हो रहा था | अच्छा लग रहा था अपने लिए | रिचा ने उस रात मुझे बहुत ख़ास बना दिया था क्योंकि वो ना सिर्फ़ मेरी भावनाओ को समझ रही थी बल्कि मेरी क़ाबिलीयत की कद्र भी कर रही थी |"

टैक्सी रिचा की बिल्डिंग के बाहर आकर रूकती है और रिचा टैक्सी से बाहर उतर कर बिभूति का शुक्रिया अदा करती है, साथ ही, घर में ना बुला सकने के कारण बिभूति से माफी भी मांगती है | मुम्बई में बाहरी राज्यों से संघर्ष करने आए कई युवक या युवतिया ज़्यादातर सामूहिक रूप से एक मकान किराए पर लेते हैं ताकि महंगे किराए का बोझ उठाया जा सकें | रिचा भी दो लडकियों के साथ एक किराए के मकान में रहती है और दोनों लडकियों को देर रात किसी मर्द का आना पसंद नहीं है |

बिभूति अपनी परिपक्वता दिखाते हुए कहता है,

"कोई बात नहीं, आज आ जाता तो दुबारा आने की वजह नहीं बचती | आपसे दुबारा मिलकर और भी अच्छा लगेगा |"

रिचा मुस्कुराते हुए बताती है कि उसे बिभूति के पैसे भी चुकाने हैं तो वो फ़ोन करके ज़रूर मिलेगी |

बिभूति इस पल सातवें आसमान पर ही है क्योंकि रिचा सिंह जैसी अप्सरा बिभूति से प्रभावित हो गई है और बिभूति को पूरा भरोसा है कि अब यह कहानी आगे बढ़ेगी और रिचा सिंह ज़रूर फ़ोन करेगी | वो बड़डपन के साथ कहता है,

"आप पैसों की चिंता छोड़िए और ऐसा समझिए कि मेरी ओर से यह एक छोटी से ट्रीट थी पर हाँ मुझे आपके फ़ोन का इंतजार रहेगा क्योंकि आपने मेरी पटकथाओं को बिकवाने का वादा जो किया है |"

रिचा हामी भरती है और बिभूति से विदा लेती है | रिचा के जाने के बाद टैक्सी भी अपने अगले मुकाम की ओर बढ़ती हुई वहाँ से अदृश्य हो जाती है |

९. पहला प्यार

रात के बाद दिन भी वैसे ही निकला जैसे रोजाना निकलता है | सबकुछ वैसे ही है साधारण, सामान्य | बस, बिभूति का मन सामान्य नहीं है | दस दिन बीत जाने पर भी रिचा का फ़ोन नहीं आता है | बिभूति हर पल, हर लम्हा सिर्फ़ रिचा के बारें में ही सोचता रहता है | उसने आजतक किसी के भी लिए इतनी बैचेनी कभी महसूस नहीं की | रिचा ने बिभूति की पटकथाएँ बिकवाने की बात करके बिभूति के अंदर के लेखक को, उसकी बैचेनी को फिर से जगा दिया है | ऑफिस, बस, सड़क, हर जगह सिर्फ़ रिचा की यादों में खोया हुआ है | वो चाहकर भी रिचा को, उसके साथ बिताए उन लम्हों को नहीं भुला पा रहा | रिचा से मिलने की बैचेनी सता रही है | बिभूति उन लम्हों को, उस अहसास को, उस चुंबकीय आकर्षण को फिर से जीना चाहता है |

बिभूति जिस किराए के फ्लैट में रहता है वो बहुत ज़्यादा बड़ा नहीं है | बिभूति के कमरें में एक पलंग के अलावा अगर कुछ है तो सिर्फ़ किताबें, ढ़ेर सारी किताबे, कागज और फ़ाइलें | इन्ही किताबो के बीच में रहता है बिभूति | एक रविवार की शाम जब बिभूति अपने कमरे में हाथ में किताब लिए रिचा की यादों में खोया हुआ है तभी उसके साथ रहने वाला मुख्य किराएदार और भागीदार रमेश आता है और आते ही रूखेपन से बिभूति से कहता है,

"कितनी बार बोल चुका हूँ कि इन रद्दी के पहाड़ो को फेंक आओ कहीं पर ? अगले रविवार को दो और लड़के इस फ्लैट में हमारे साथ में रहने के लिए आ रहे हैं | वो दोनों बाहर के कमरे में रहेंगे और हम दोनों को मजबूरन इस कमरे में एकसाथ रहना पड़ेगा | रविवार के पहले यह कचरे का ढ़ेर हट जाए तो बेहतर है वर्ना बाद में मुझे मत कहना कि मैंने आगाह नहीं किया था |"
बिभूति, रमेश से बहस नहीं करना चाहता |

"रमेश हमेशा मुझसे बहस करता था और इसी वजह से जल्दी घर लौटने के लिए मेरा मन नहीं करता था |"
आसिम और बिभूति की बातों में ट्रेन भी आ जाती है | आसिम जिन्होंने शायद ही कभी ट्रेन में सफ़र किया होगा, इस भीड़ भरी ट्रेन में चढ़ने के दौरान अपना संतुलन खो बैठते हैं पर बिभूति उन्हें गिरने से बचा लेता है | दोनों प्रथम दर्जे के डिब्बे में ही चढ़े हैं पर मुम्बई की लोकल ट्रेन में सिर्फ़ भीड़ होती है दर्जा नहीं होता | आसिम एक यात्री से थोड़ी जगह देने के लिए कहते हैं और वो यात्री आसिम को ही मुम्बईया हिन्दी में खरी-खोटी सुनाता है,
"इधर हिलने तक का जगह नहीं है | तुमको जगह मंगता है |"
बिभूति और आसिम दोनों किसी तरह भीड़ में से आगे बढ़ते हुए अंदर चले जाते हैं ताकि बैठने की जगह मिल जाए | ट्रेन धक्के खाती हुई, धक्के खिलाती हुई अपनी रफ़्तार पकड़ लेती है | आसिम को लोकल ट्रेन और मध्यमवर्गीय लोगों के बीच बड़ा अटपटा सा महसूस हो रहा है | आसिम के चेहरे को देखकर उनकी असहजता का अहसास बिभूति को हो जाता है और वो इसे ज़ाहिर भी कर देता है,

"मैं जानता हूँ कि आपको इस तरह ट्रेन में, हमारे जैसे लोगों के बीच यात्रा करने की आदत नहीं है पर मेरा तो यह रोज़ का संघर्ष है, थोडा सा सहन कर लीजिए |"
आसिम को किसी भी तरह बिभूति की पटकथा पूरी होने और प्रतिरोधक हासिल करने की बैचेनी है तो वो कहते हैं,
"कोई बात नहीं, तुम पटकथा पूरी करो |"

रिचा से मिलने के बाद लगभग दो सप्ताह बीत जाते हैं पर रिचा का फ़ोन नहीं आता तब आख़िरकार थक-हार कर बिभूति ही उससे मिलने पहुँच जाता है | बिभूति एक दोपहर को, रिचा के फ्लैट पर पहुँचकर उसके दरवाज़े पर दस्तक देता है | जैसे ही रिचा दरवाज़ा खोलकर बिभूति को देखती है तुरंत दरवाज़े को कुछ इस तरह से आधा बंद करके खड़ी हो जाती है कि बिभूति फ्लैट के अंदर कुछ देख ना सके | रिचा कहती है,
"मैं बहुत शर्मिंदा हूँ कि मैं आपको अंदर नहीं बुला सकती, क्योंकि मैंने बताया था ना कि मेरे साथ जो दो लडकियाँ रहती हैं उन्हें किसी भी पुरुष का फ्लैट के अंदर आना पसंद नहीं है और वो दोनों इस वक़्त घर में ही हैं | आप एक काम कीजिए ना, सामने ही एक कॉफ़ी शॉप है आप वही मेरा इंतज़ार करें और मैं ५ मिनट में वहाँ आती हूँ | मेरी बात का बुरा मत मानिएगा, प्लीज़"
बिभूति मुस्कुराते हुए,
"इसमें बुरा मानने वाली क्या बात है ? मैं वही आपका इंतज़ार करता हूँ |"
आख़िरकार आज दुबारा रिचा से मुलाक़ात करने की खुशी में बिभूति दौड़ते-भागते बिल्डिंग से बाहर आता है और तभी देखता

रिचा दरवाज़ा खोलकर बिभूति को देखती है तुरंत दरवाज़े को कुछ इस तरह से आधा बंद करके खड़ी होती है कि बिभूति फ्लैट के अंदर कुछ देख ना सके।

है की उसके एक जूते के फीते खुल चुके हैं तो वो पास ही खड़ी एक मोटरसाइकिल के सहारे अपने फीते कसता है और मोटरसाइकिल में लगे दर्पण में ख़ुद को निहारने के बाद आगे निकल जाता है | यह वही मोटरसाइकिल है जिस पर बैठा आदमी उस रात ११:३० बजे बस स्टॉप के पास रिचा सिंह का पर्स छीन कर भाग गया था पर उस रात बिभूति ना मोटरसाइकिल पर ध्यान दे पाया था ना ही उसे यह पता है कि यह मोटरसाइकिल आदी कोहली की है |

बिभूति कॉफ़ी शॉप में एक कोने की मेज के पास बैठ जाता है | कुछ ही देर में रिचा भी आ जाती है और दोनों साथ-साथ कॉफ़ी पी रहे हैं | रिचा बड़ी मिठास के साथ कहती है,

"मुझे बहुत अच्छा लगा कि आप मुझसे मिलने आए पर आप तो जानते ही हैं मेरी मजबूरी | अगर मेरे पास कुछ पैसे होते तो मैं एक पल के लिए भी इस फ्लैट में इन लड़कियों के साथ नहीं रहती जहाँ दोस्तों को, अपनों को ना बुला सके |"

रिचा के हर शब्द बिभूति के दिल में उसके प्रति सहानुभूति पैदा कर रहे हैं | बिभूति, रिचा को पूछता है कि उसे कितने पैसों की ज़रूरत होगी तब रिचा इंकार करती है कि वो बिभूति से पैसे कैसे ले सकती है | बिभूति हर हाल में रिचा से, उसकी ज़िंदगी से जुड़ना चाहता है, वो कहता है,

"आप मुझे दोस्त कहती हैं तब इतना क्यों सोच रही हैं ? बल्कि मैं ख़ुद भी एक फ्लैट की तलाश में हूँ | दरअसल, मैं जिस किराए के फ्लैट में रहता हूँ वहाँ मेरा कमरा बहुत छोटा है, इसीलिए एक नया फ्लैट तलाश कर रहा हूँ जहाँ मैं अपनी सारी क़िताबें भी रख सकूंगा और जिनके साथ मैं रहता हूँ उनसे दूर, सुकून से अपनी

पटकथाएँ भी लिख सकूंगा |"
रिचा फिर भी आपत्ति जताती है,
"पर फ्लैट तो आपके नाम पर होगा, उसमें भला मैं कैसे रह सकती हूँ ? नहीं, यह तो सही नहीं होगा |"
बिभूति रिचा से जुड़ने का कोई मौका गँवाना नहीं चाहता | उसकी बड़ी इच्छा है कि अब तो रिचा उसके नए फ्लैट में ही रहे तो वो रिचा को समझाने की कोशिश करता है | रिचा से अपनी इच्छा मनवाने की कोशिश करता है,
"इसमें कौन सी बड़ी बात है ? मैं किराएदार आपको बना दूंगा और कॉन्ट्रैक्ट भी आपके नाम से बना देंगे | मुझे तो सिर्फ़ एक अलग कमरा दे देना जहाँ मैं अपनी किताबें रख सकूँ और जब भी फ़ुर्सत हो, आकर अपनी पटकथाएँ लिख सकूँ |"
एक अकेली लड़की के घर अगर कोई पराया मर्द आता-जाता रहे तब पड़ोसी कई तरह की बातें तो करते ही हैं और रिचा भी यही सवाल बिभूति के सामने रखती है तब बिभूति उसे आश्वासन देता है कि वो सिर्फ़ छुट्टी या रविवार के दिन ही आया करेगा | बिभूति आगे कहता है,
"आप बिलकुल चिंता ना करे, मैं तो बस हर हाल में आपको खुश देखना चाहता हूँ |"
अब रिचा को राहत महसूस होती है, वो कहती है,
"ठीक है पर एक शर्त है कि आप मुझे आप नहीं तुम कहकर पुकारोगे क्योंकि मैं आपसे उम्र में बहुत छोटी हूँ |"
बिभूति को शायद इसी मौके की तलाश थी कि यह औपचारिक दूरिया भी मिट जाएँ और दोनों इस बात पर राज़ी हो जाते हैं कि आज से वो एकदूजे को तुम कहकर ही संबोधित करेंगे | रिचा अब

असली मुद्दे पर आती है,
"अब तुम्हारी पटकथाओं को कैसे बेचा जाए यह सब तय करना है और इसके लिए मुझे सारी पटकथाएँ भी पढ़नी होंगीं |"
बिभूति कहता है,
"मुझे लगता है कि हमें *'तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी'* से शुरुआत करनी चाहिए | यह पटकथा शहरी समाज में लोगों के रिश्तो पर आधारित कहानी का पहला हिस्सा है | मुझे अपनी सारी पटकथाओं में से यह बहुत पसंद भी है और मुझे इसके व्यवसायिक तौर पर सफल होने का विश्वास भी है |"
रिचा मुस्कुराते हुए,
"बहुत बढ़िया | फिर तो मैं भी जल्द ही मार्केटिंग का काम शुरू कर देती हूँ |"
बिभूति बताता है कि थोड़ी सी समस्या है और वो यह कि एक तो पटकथा का तीसरा हिस्सा अभी अधूरा है और यह रजिस्टर्ड भी नहीं है | रिचा कहती है,
"जब तक बाकी दोनों पटकथाओं पर फ़िल्म बनेगी तब तक तुम्हारे पास काफ़ी समय होगा तीसरी पटकथा लिखने का और जहाँ तक इन पटकथाओं को रजिस्टर कराने की बात है तो समझो यह ज़िम्मेदारी भी मेरी है, अगर तुम्हें मुझ पर भरोसा है तो ?"
बिभूति तपाक से कहता है,
"कैसी बात कर रही हो तुम ? बिलकुल भरोसा है बल्कि ख़ुद से भी ज़्यादा भरोसा है | अब हमें जल्द ही फ्लैट ढूँढना शुरू कर देना चाहिए |"
रिचा, बिभूति के कानों के पास आकर,
"मेरे ध्यान में एक फ्लैट है |"

बिभूति ने पता नहीं रिचा की बात सुनी भी या नहीं क्योंकि जब कोई बेहद ही ख़ूबसूरत लड़की आपके कानों के पास आ जाए तो होश कहाँ ठहरता है |

*

आसिम ट्रेन की भीड़ में सहज हो चुके हैं | बिभूति आगे कहता है,
"मैंने रिचा से फ्लैट के लिए वादा तो कर लिया पर इतने पैसे आते कहाँ से ?"
आसिम ताना मारते हुए,
"वो तो बड़े आलिशान इलाके में रहती थी | तुम्हें तो बड़ा महंगा पड़ा होगा यह फ्लैट ?"
बिभूति भी स्वीकार करता है कि यह उसकी बेवक़ूफ़ी ही थी जो रिचा को खुश करने की, उसे प्रभावित करने की कोशिश कर रहा था | फ्लैट का किराया ३५ हज़ार रुपये प्रति महीना था और सुरक्षा जमा राशी १ लाख रुपये अलग से | बिभूति कहता है,
"मैंने ११ महीने का किराया एक साथ देने का वादा किया तब जाकर मुझे फ्लैट ३० हजार रुपये प्रति महीने किराए के हिसाब से मिल गया | अब मुझे किसी भी तरह ५ लाख रुपयों की सख्त ज़रूरत थी और मेरे जैसे साधारण नौकरीशुदा आदमी के पास इतने पैसे कहाँ से होते, सो घर से मंगवाने पड़े |"

खड़गपुर में बिभूति के पिताजी, बिभूति की माँ से बहस कर रहे हैं कि ५ लाख रुपये क्यों चाहिए ? अचानक ऐसी भी क्या ज़रूरत आ गई ? माँ समझाती है कि पटकथाओं को बेचने के लिए यहाँ-वहाँ मार्केटिंग करनी पड़ती है बस इसीलिए चाहिए और वैसे भी

एक साल बाद तो लौटा ही देगा | बिभूति के पिताजी गुस्से में उबल कर कहते हैं,
"कुछ नहीं होगा | देख लेना ? वो हमें बेवकूफ बना रहा है | पटकथा बेचने के लिए पैसे, मतलब पैसों की बर्बादी है, बस |"
माँ को तो हमेशा बेटों का ही पक्ष लेना है,
"चाहे जो भी हो, एक ही तो बेटा है हमारा और वैसे भी हमारा जो कुछ भी है वो सब उसका ही तो है |"

आख़िरकार मुम्बई में, किताबों से भरा बिभूति का छोटा सा कमरा खाली हो ही गया और रमेश के चेहरे पर इस विजय की चमक देखी जा सकती है | कौवा जब भी चोंच खोलेगा काँव-काँव ही बोलेगा,
"बहुत ही अच्छा हुआ कि तुमने वो रद्दी किताबें, कागज़ निकाल ही दिए पर और भी अच्छा तो यह होता कि किसी दोस्त के यहाँ रखने के बदले तुम कबाड़ी को बेच देते तो कम से कम हम सबके लिए आज रात की पार्टी का इंतज़ाम तो हो ही जाता |"
रमेश अपनी बकवास करते हुए ठहाके भी मारता है पर रमेश की कड़वी से कड़वी बातें भी बिभूति पर बेअसर हैं क्योंकि बिभूति के दिल-दिमाग में कोई और ही चेहरा है जो कम से कम इस दुनिया में बिभूति के क़ाबिलीयत की कद्र तो करता है और वो है उसके सपनो की रानी, रिचा सिंह |

१०. एक नई शुरुआत

रिचा सिंह ने नए फ्लैट में प्रवेश कर लिया है, जिसका किराया बिभूति ने अदा किया है | अब बिभूति को घर बुलाने में रिचा को कोई तकलीफ़ नहीं होगी | बिभूति आज रिचा के नए फ्लैट पर आता है और दरवाज़े पर दस्तक देता है | रिचा दरवाज़ा खोलती है और प्यार भरी मुस्कान के साथ बिभूति का स्वागत करती है | बिभूति अंदर दाखिल होते हुए,

"आज चेहरा बहुत खिलाखिला सा है ?"

रिचा बड़े उत्साह के साथ,

"हाँ, क्योंकि मैं बहुत खुश हूँ और देखो मैंने इस फ्लैट को कैसे सजाया है |"

एक आलिशान इलाके में तो वैसे भी जो फ्लैट होते हैं उनमे एक अलग ही रौनक होती है और आजकल तो किराएदार सिर्फ़ फ्लैट नहीं बल्कि सारी सुख-सुविधाओं के साथ फ्लैट लेना पसंद करते हैं| जैसे इस फ्लैट में बैठने के लिए आधुनिक गद्देदार सोफे, टीवी व सजावट का सामान रखने के लिए लकड़ी की यूनिट, दोनों कमरों में बड़ा सा पलंग, रसोई में भी फर्नीचर इत्यादि | बिभूति फ्लैट देखते हुए रिचा से माफी माँगता हैं क्योंकि वो सामान लाने-ले जाने के दौरान उसकी मदद नहीं कर पाया था | रिचा कहती है,

"अब ना जाने यह बात तुम कितनी बार बताओगे ? मुझे तो एक-

एक शब्द याद हो गया है कि तुम्हें ऑफिस के ज़रूरी काम से बंगलुरु जाना था जिसे तुम टाल नहीं सकते थे | अब इसमें इतना शर्मिंदा होने वाली कोई बात नहीं है | वो सब छोड़ो और आओ, मैं फ्लैट दिखाती हूँ |"

बिभूति को महसूस होता है कि राधिका की तुलना में रिचा कितनी सुलझी हुई लड़की है | कितना समझती है वो बिभूति को, रिश्तों को | राधिका की तरह वो बिभूति पर हावी नहीं होना चाहती और ना ही बिभूति के काम में कभी कोई दखल अंदाजी करती है | नया फ्लैट देखते हुए जैसे ही बिभूति और रिचा आगे बढ़ते हैं वैसे ही एक कमरे से एक भड़कीले रंग के टी-शर्ट और जीन्स पहने हुए, छः फूट का एक सुन्दर सा नौजवान बाहर आता है | बिभूति उसे अचानक देखकर एक क़दम पीछे हट जाता है | रिचा पहली बार उस नौजवान से बिभूति का परिचय कराती है,

"बिभूति, यह आदी कोहली है जो टीवी, फ़िल्म, म्यूज़िक विडियो में कलाकार भेजने का काम करते हैं जिसे आर्टिस्ट कोऑर्डिनेटर भी कहते है | यह सिर्फ़ मेरे दोस्त ही नहीं मेरे मददगार और मेरे मार्गदर्शक भी हैं | इन्होने मुझे काम दिलवाने में बहुत मदद की है | आज मुम्बई में अगर किसी पर मैं भरोसा कर सकती हूँ तो वो हैं सिर्फ़ आदी कोहली |"

पता नहीं क्यों रिचा की बात बिभूति के दिल पर लग जाती है |

'कोई हक़ ना था तुझपर मेरा
पर तेरे नज़रंदाज़ करने से
कोई और ठिकाना भी ना बचा मेरा'

कुछ ऐसा ही हाल बिभूति के दिल का है | आदी, बिभूति के चेहरे के हाव-भाव पढ़कर तुरंत रिचा की बात काटते हुए कहता है,

"अब मेरी टांग खिंचाई बंद करने की मेहरबानी करोगी ? क्योंकि मुझे पता है कि दोस्ती या भरोसे की बात में मेरा स्थान तो बिभुतिजी के बाद ही आता है ?"

रिचा कनखियों से बिभूति की ओर देखते हुए और मुस्कुराकर कहती है,

"बिभूति तो सबसे ख़ास है, तुम उनकी क़तार में भी नहीं हो |"

आदी और रिचा एकदूजे की टांग खिंचाई में मशगुल हैं और बिभूति तो रिचा के मुँह से अपनी तारीफ़ सुनकर किसी और दुनिया की सैर पर निकल गया है जहाँ सिर्फ़ वो है और उसके साथ उसकी रिचा | तभी रिचा, बिभूति की बांह पकड़ कर बिभूति को उस दुनिया से इस दुनिया में लाती है और दुसरे कमरे में ले जाते हुए कहती है,

"यहाँ आओ, ये देखो, आदी तुम्हारे लिए क्या लाया है ?"

कमरे के अंदर देखते ही बिभूति की आँखे खुली की खुली रह जाती हैं | बिभूति के हाथों से लिखी हुई पटकथाओं की फाइलें बड़े तरतीब से मेज पर रखी हैं | बिभूति की ढ़ेर सारी किताबे काँच की अलमारी में सज रही हैं और फ़ाइलों के पास ही मेज पर एक ख़ूबसूरत सा लैपटॉप रखा हुआ है | एक लेखक के लिए ऐसा कुछ होना बहुत भावुकता का पल होता है,

"कंप्यूटर के इस दौर में शायद ही कोई पढ़ने के लिए क़िताबें खरीदता होगा क्योंकि लोग अक्सर क़िताबें सार्वजनिक जगहों या ट्रेन में अपने अकलमंद होने का दिखावा करने के लिए ही निकालते हैं | रिचा इन क़िताबों को इतना सम्मान देने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया | सच कहूँ तो जब भी हम क़िताबों को छूते हैं तभी हमें इनके वजूद का अहसास होता है और मैं तो इनसे प्रेम करता हूँ|"

रिचा, बिभूति को बताती है कि उसे आदी को धन्यवाद कहना चाहिए क्योंकि उसी ने यह सब किया है और आदी ही है जो बिभूति की पटकथाएँ बिकवाने के लिए ज़मीन-आसमान एक कर देगा | आदी बड़े उत्साह के साथ बिभूति से कहता है,

"दरअसल रिचा आपकी बड़ी इज़्ज़त करती है और जब उसने बताया कि आप एक लेखक हो तभी से मैंने फ़ैसला कर लिया कि रिचा जिनको इतना मानती है उनकी मदद तो मैं ज़रूर करूंगा बल्कि मैंने तो कुछ जान पहचान के फ़िल्म निर्माताओं से बात भी कर ली है |"

रिचा अति उत्साहित होकर बिभूति की बांह थाम लेती है | आदी आगे कहता है,

"उन्हें आपकी पटकथाएँ पढ़नी हैं और इसीलिए हमें सारी पटकथाएँ कंप्यूटर में टाइप करके एक पेनड्राइव के ज़रिए उन्हें देनी होंगी |"

रिचा कहती है,

"इसीलिए आदी को कहकर मैंने उसका लैपटॉप भी मंगवा लिया है ताकि तुम सारी पटकथाएँ उसमे टाइप कर सको |"

बिभूति पूछता है,

"सारी पटकथाएँ ?"

आदी तपाक से जवाब देता है,

"हाँ, क्योंकि हमारा मक़सद है आपकी पटकथाओं पर फ़िल्में बने और अगर फ़िल्म निर्माताओं को यह पटकथाएँ पढने के लिए चाहिए तो हम उन्हें टाइप करके दे देंगे | इसमें हर्ज़ ही क्या है बॉस, रिचा ने बताया कि आप हिन्दी में भी टाइपिंग कर लेते हो?"

बिभूति समझ नहीं पा रहा कि क्या निर्णय ले या क्या जवाब दे,

वो बस इतना ही कहता है,
"ठीक है पर..."
आदी बिभूति की बात काटते हुए,
"बस, फिर तो कोई दिक्क़त ही नहीं होनी चाहिए और वैसे भी मैंने मेरे लैपटॉप में हिन्दी टाइपिंग सॉफ्टवेयर डाल दिया है तो अब तो आप सिर्फ़ जल्द से जल्द काम शुरू कर दो |"
बिभूति के चेहरे के भावों को पढ़कर रिचा कहती है,
"बिभूति मुझे विश्वास है तुम पर, तुम्हारी क़ाबिलीयत पर और मैं तुम्हें कामयाब होते हुए देखना चाहती हूँ | आदी अगर इतनी मदद कर रहा है तो हमें भी उसका साथ देना चाहिए | जैसे मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूँ वैसे ही आदी भी है | हाँ, अगर तुम्हें ही हम पर भरोसा नहीं है तो कोई तुम पर दबाव नहीं डालेगा |"
रिचा की बात पूरी होने तक आदी उस कमरे से बाहर चला जाता हैं और पीछे-पीछे रिचा भी | बिभूति वही खड़े-खड़े सोचता रह जाता है |

लोकल ट्रेन में बिभूति, आसिम से कहता है,
"उस दिन के बाद से रिचा और मेरे बीच नजदीकियाँ बढ़ने लगी थी | अब वक़्त मिलते ही मैं रिचा के फ्लैट पर पहुँच जाता और अपनी पटकथाओं को आदी के लैपटॉप में हिन्दी में टाइप करना शुरू कर देता | रिचा बड़े प्यार से पेश आती थी | मेरे लिए ख़ुद अपने हाथों से खाना बनाती थी | हालाँकि, वो इतनी अच्छी नहीं थी रसोई में पर मुझे तो उसकी हर बात, उसका साथ अच्छा लगता था | मैं उससे यह कहना चाहता था कि मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ पर मेरे दिल की बात कभी मेरी ज़ुबान पर आ ही नहीं पाती थी

और मैं सिर्फ़ आहें भरकर रह जाता | इतनी हिम्मत ही कहाँ थी मुझमे ?”

एक बार बिभूति दिल के हाथों मजबूर होकर प्यार से रिचा का हाथ पकड़ लेता है और शायद रिचा, बिभूति के जज़्बात को समझ भी जाती है पर ऐसे जताती है जैसे उसे कुछ पता ही नहीं चला | बिभूति, रिचा के साथ ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताना चाहता है पर रिचा काम के मामले में बड़ी सख्त है | वो चाहती है कि बिभूति जल्द से जल्द टाइपिंग पूरी करे और इसीलिए वो बिभूति के साथ सिर्फ़ खाना खाते हुए या चाय पीते हुए ही बात करती है और बिभूति को भी सिर्फ़ इसी दौरान बात करने की इजाज़त देती है | अब यह सिलसिला यूँ ही चलता रहता है | जब भी बिभूति को समय मिलता है वो रिचा के फ्लैट पर पहुँच जाता हैं, टाइपिंग करता है | रिचा और बिभूति, दोनों साथ-साथ खाना खाते हैं, चाय पीते हैं और कभी-कभार आदी भी उनके साथ होता है | एक शनिवार की शाम, हमेशा की तरह जब बिभूति, रिचा के फ्लैट पर जाता है और दस्तक देता है तब दरवाज़ा खोलते ही, आकर्षक कपड़ो में रिचा और भी सुंदर लग रही है | बिभूति का दिल तो करता है कि वो रिचा को अपनी बांहों में भरकर उसकी साँसों को महसूस करे पर ना जाने रिचा की क्या प्रतिक्रिया हो यही सोचकर वो कुछ करने की हिम्मत ही

आदी बिभूति की बात काटते हुए, "बस, फिर तो कोई दिक्क़त ही नहीं होनी चाहिए और वैसे भी मैंने मेरे लैपटॉप में हिन्दी टाइपिंग सॉफ्टवेर डाल दिया है तो अब तो आप सिर्फ़ जल्द से जल्द काम शुरू कर दो।"

नहीं जुटा पाता | शायद, रिचा को खोने के डर से | रिचा, बिभूति को देखकर मुस्कुराती है और दूसरे कमरे में चली जाती है | बिभूति भी मन्त्रमुग्ध सा रिचा के पीछे-पीछे उस कमरे में चला जाता है,
"हम कहीं बाहर जा रहे हैं क्या ?"
रिचा कहती है,
"नहीं, मैं एक शूट पर जा रही हूँ और शायद लौटने में काफ़ी देर हो जाए | तुम्हारा खाना रसोई में रखा है और अगर काम करते-करते थक जाओ तो दूध फ्रिज में ही रखा है, चाय बना लेना |"
बिभूति ने कभी शूटिंग नहीं देखी थी और वो भी रिचा के साथ शूट पर जाना चाहता है ताकि रिचा के साथ रह सके, पर रिचा बिभूति को समझाती है कि,
"तुम वहाँ रहोगे तो मेरा काम में ध्यान नहीं लगेगा |"
बिभूति तो आज रिचा के सौन्दर्य से वशीभूत सा हो गया है | वो पूछता है कि,
"ठीक है पर कम से कम मैं तुम्हें टैक्सी से स्टूडियो तक तो छोड़ ही सकता हूँ ?"
रिचा, को बिभूति की जिद्द से चिढ़ हो रही है | वो चेहरे पर सहज भाव रखते हुए थोड़ा सा सख्ती से बिभूति को समझाती है,
"तुम्हें अपनी पटकथाओं की टाइपिंग पूरी करनी हैं ना ? पहले वो सब ख़त्म कर लो | मैं कही भागी नहीं जा रही हूँ और वैसे भी मैं नहीं चाहती कि तुम टैक्सी-ऑटो के पीछे पैसे खर्च करो इसीलिए मैंने आदी को बुला लिया है | वो छोड़ देगा मुझे मोटरसाइकिल से|"
आदी को लेकर बिभूति के मन की भावना बिभूति के चेहरे पर स्पष्ट दिख रही है पर रिचा को पता है कि बिभूति के दिल पर

कैसे मलहम लगाए और इसीलिए रिचा, बिभूति को पास खींचकर उसके गालों पर अपने होठों की छाप छोड़ देती है और यह अहसास कराती है कि आदी के साथ मोटरसाइकिल पर जाने में ऐसा कुछ गलत नहीं है | रिचा, बिभूति को छोटे से बच्चे की तरह समझाते हुए कहती है,
"तुम पहले हिन्दी में टाइपिंग ख़त्म कर लो | एक बार तुम्हारा यह टाइपिंग का काम पूरा हो जाए तब हम कहीं बाहर जायेंगे वक़्त बिताने के लिए | तब तक पैसे भी बचा लो | ठीक है |"

बिभूति ट्रेन के धक्कों के बीच उस चुंबन के अहसास को अब भी महसूस कर सकता है | वो आसिम से कहता है,
"मैं रिचा पर शक़ करने के लिए सारी रात अपने आप को कोसता रहा | उसके एक चुंबन ने मुझे अहसास दिलाया था कि रिचा भी मुझसे कितना प्यार करती थी |"

रिचा अपने पर्स में से एक चाबी निकालकर बिभूति को देती है,
"यह इस घर की डुप्लीकेट चाबी है और जब मैं घर में नहीं हूँ तब भी तुम यहाँ आकर काम कर सकते हो |"
तभी रिचा को आदी का फ़ोन आता है और वो बिभूति से विदा लेकर फ्लैट से बाहर चली जाती है |

बिभूति, आसिम से कहता है कि,
"हिन्दी टाइपिंग तो जैसे मेरे और रिचा के बीच एक दीवार ही बन गई थी | मैंने इसका भी रास्ता निकल ही लिया | मैंने १५ दिनों के लिए ऑफिस से छुट्टी ले ली और अब हर रोज़, दिन-रात टाइपिंग में व्यस्त हो गया | हालाँकि, मैंने रमेश को कभी भी यह पता नहीं

चलने दिया कि मैं छुट्टी पर हूँ क्योंकि मैं हर रोज़ अपने फ्लैट से ऑफिस जाने के लिए ही निकलता था और सीधे पहुँच जाता रिचा के फ्लैट पर |"

रिचा जब शूट पर होती है तब भी बिभूति उसके फ्लैट पर होता हैं, टाइपिंग करते रहता है | अपने खाने के डिब्बे से खाना खा लेता है और जब रिचा घर आती या घर पर होती तब दोनों साथ-साथ खाना खाते हैं, चाय पीते हैं | ऐसे ही शिद्दत से कोल्हू के बैल की तरह लगातार टाइपिंग करते करते वो दिन भी आ गया जब सारी पटकथाएँ हिन्दी लिपि में आदी के लैपटॉप में क़ैद हो गईं यानि कि टाइपिंग पूरी हो गई | बिभूति जीत के अहसास के साथ एक गहरी साँस लेता है |

बिभूति के मोबाइल की घंटी बजती है | दो खिडकियाँ हैं पर दोनों खिड़कियों में बहुत बड़ा अंतर है | एक खिड़की है जिसके पास आसिम बैठे हैं ट्रेन में और दूसरी खिड़की है शीशे चढ़ी वातानुकूलित कार की, जिसमे डॉली बैठी है | यह डॉली का फ़ोन है बिभूति के मोबाइल पर | बिभूति, आसिम को फ़ोन देने से पहले ख़ुद के कान में इयरफ़ोन का एक हिस्सा लगाता है और दूसरा हिस्सा आसिम को देता है ताकि आसिम कोई चालाकी ना कर सके | आसिम, डॉली से बात करते हैं और डॉली के पूछने पर बताते हैं कि वो लोकल ट्रेन में है, जिसपर डॉली का चौंकना तो स्वभाविक ही है | आसिम डॉली के सवाल को टालते हुए डॉली से पैसों के इंतज़ाम के बारे में पूछते हैं तब डॉली कहती है,
"हाँ, पैसों का इंतज़ाम हो गया है और मैं सीएसटी प्लेटफ़ॉर्म पहुँचने वाली हूँ |"

“ठीक है, मैं तुमसे बाद में बात करूँगा |”
इतना कहकर आसिम फ़ोन रख देते हैं | बिभूति मुस्कुराते हुए,
“बड़ा ख्याल रखती है आपका | उन्हें भी गोवा ले जाना चाहिए था अपने साथ |”
आसिम, बिभूति को बताते हैं कि डॉली को फ़िल्म जगत में कोई रूची नहीं है और वैसे भी आसिम काम के सिलसिले में गए थे | बिभूति व्यंग्य कसता है,
“कमाल है ! उन्हें आपके फ़िल्म के काम में कोई दिलचस्पी नहीं है फिर भी आप उनसे शादी कर रहे हो | शायद वो बहुत बड़े फ़िल्म निवेशक़ की बेटी है, इसीलिए ? शादी के बाद तो आपके पास बहुत पैसा होगा | कितने अक्लमंद हैं आप |”
आसिम को बिभूति की ये सब बातें पसंद नहीं आती | आसिम नाराज़गी जताते हुए बिभूति को सावधान करते हैं,
“तुम डॉली को अपनी बकवास से दूर ही रखो | मैं उससे शादी कर रहा हूँ क्योंकि मैं प्यार करता हूँ उससे और ख़ुद से भी ज़्यादा यकीं मुझे उसपर है | मैं मानता हूँ कि मैं तुम्हारी दुनिया के लोगों जैसा नहीं हूँ | सोया हूँ कई लड़कियों के साथ पर प्यार सिर्फ़ एक ही लड़की से किया है और वो है मेरे कॉलेज की स्वीट हार्ट - डॉली| इसीलिए उससे शादी कर रहा हूँ | ख़ैर, यह तुम्हारी समझ के बाहर है और हाँ वो रिचा सिंह जैसी तो बिलकुल नहीं है |”
“रिचा सिंह...”
यह कहकर बिभूति अपने ख्यालों में खो जाता है |
बिभूति अब काफ़ी बदला-बदला सा है | वो ढीलाढाला अंदाज़ नहीं, वो फ़ीका लिबास नहीं बल्कि कुछ-कुछ आदी जैसा दिखने की कोशिश कर रहा है | बिभूति अपनी स्कूटी पर, रिचा को पीछे

बिठाकर कहीं ले जा रहा है | आज रिचा ने वही कपड़े पहने हैं जो अदालत में दिखाईं गई तस्वीर में हैं |

बिभूति, आसिम को बताता है कि उसने अदालत में कभी भी यह ज़ाहिर नहीं होने दिया कि रिचा और उसका रिश्ता दोस्ती से कुछ ज़्यादा था,
"वो मेरे दिल के बहुत क़रीब थी क्योंकि उसने मेरी ज़िंदगी में एक रौनक सी लाई थी | उसके साथ बिताए हर लम्हे मेरे लिए यादगार हैं और मैं हमेशा हर पल भगवान से यही प्रार्थना करता था कि वो मुझे छोड़कर कभी ना जाए |"

"बिभू, ध्यान से | मुझे डर लग रहा है |"
स्कूटी चलाते समय रिचा बार-बार बिभूति से कहती है | तभी बिभूति को अचानक एक मर्दानी आवाज़ भी सुनाई देती है,
"और कहाँ जा रहे हो तुम दोनों ?"
आदी, जो कि मोटरसाइकिल पर ठीक बिभूति के पीछे था, इनके बराबर आ जाता है | आदी की शक्ल देखते ही बिभूति के चेहरे का नक्शा ही ख़राब हो जाता है | बिभूति आदी को बताता है कि उसे चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, वो दोनों किसी निजी काम से बाहर जा रहे हैं | बिभूति किसी तरह आदी से पीछा छुड़वाना चाहता है | आदी भी जानबूझकर ताना मारता है,
"क्यों नहीं, ज़रूर जाईए | मैं वैसे भी आप दोनों के बीच कबाब में हड्डी नहीं बनूंगा |"
तभी रिचा हस्तक्षेप करती है,
"इसमें हड्डी वाली कोई बात नहीं है बल्कि तुम भी चलो हमारे साथ |"

"अब रिचाजी का आदेश तो मानना ही पड़ेगा |"
तभी पहियों के घर्षण की आवाज़ आती है जो कि बिभूति द्वारा स्कूटी को अचानक ब्रेक लगाने से आई है | रिचा ख़ुद को संभालते हुए,
"क्या हुआ ?"
"लाल बत्ती |"
शायद बातें करते समय लाल बत्ती पर तीनों का ही ध्यान नहीं गया | आदी भी तुरंत मोटरसाइकिल को ब्रेक मारता है पर आदी को ब्रेक मारने में थोड़ी देर हो ही गई | आदी के आगे चल रहे रिक्शे से आदी की मोटरसाइकिल टकरा जाती है | रिक्शेवाला तुरंत बाहर निकलता है और आदी व रिक्शेवाले के बीच तू-तू मैं-मैं की शुरुआत हो जाती है जो कि जल्द ही हाथापाई में बदल जाती है | बिभूति को यह सब लड़ाई-झगड़ा बिलकुल पसंद नहीं है | वो रिचा से इसकी शिक़ायत करता है,
"मुझे यह सड़कछाप इंसान बिलकुल पसंद नहीं है | जब देखो शराब में धुत्त रहता है और तुम्हें क्या ज़रूरत थी उसे हमारे साथ चलने का न्योता देने की ?"
रिचा को यह बात अखरती है,
"मत भूलो कि हमारी पटकथा को बेचने के लिए हमें उसकी ज़रूरत है | बोलो, हाँ या ना ? उसकी शिक़ायत करने के बजाय उसे इस झगड़े से छुड़वाओ |"
प्यार भी वो बीमारी है जिसमे आदमी अपनी मर्ज़ी से ज़्यादा दूसरे की मर्ज़ी के लिए जीता है |

*

धूल भरी सड़क से दूर, कानों में गूंजते संगीत वाली एक रंगीन जगह जिसे लोग डिस्कोथेक भी कहते हैं, डिस्कोथेक के एक कोने में बिभूति, रिचा और आदी बैठे हुए हैं | आदी अपनी शेखी बघारते हुए कहता है,
"बिभुतिजी, सिर्फ़ आपकी वजह से वो रिक्शेवाला बच गया, नहीं तो आज मैं उसका मुँह उसके रिक्शे जैसा कर देता |"
आदी अपने हाथ में जो व्हिस्की का ग्लास है उससे एक और घूँट पीता है | रिचा बियर पीते हुए आदी की बहादुरी की कहानी सुन रही है | वही बिभूति कोल्डड्रिंक से अपने अंदर के गुस्से को, गरमी को, जो आदी के प्रति बिभूति के मन में है, शांत करने की कोशिश कर रहा है | बिभूति को यह बात बहुत खल रही है कि रिचा, आदी की प्लेट से चिकन लोलीपोप खा रही है | बिभूति को ऐसा लगता है कि वो आदी से हार गया है रिचा को जीतने और उसे हासिल करने के मामले में | बिभूति बैरे से एक खाली ग्लास मंगवाता है और रिचा के बियर की बोतल से अपने लिए ग्लास में बियर डालता है ताकि वो रिचा की पसंद जैसा बन सके, आदी जैसा बन सके और रिचा के दिल को जीत सके|
लेकिन, यहाँ भी एक रोड़ा है, वो है आदी | क्योंकि आदी, बिभूति को बीच में टोककर, दिखाता है कि ग्लास में बियर कैसे भरी जाती है | बिभूति, रिचा को उसकी प्लेट से मूंगफली खाने के लिए कहता है और रिचा भी एक-दो दाने खाकर बिभूति का दिल रख ही लेती है | कितनी दयनीय स्थिति है | बिभूति, रिचा के साथ उसकी तरह बियर तो पी रहा है पर बिभूति के दिल में समंदर की लहरों की तरह एक अजीब सी बैचेनी हो रही है |

*

आज समंदर भी शायद किसी असमंजस में है तभी ऊंची-ऊंची लहरों को किनारे पर फेंक रहा है | बिभूति और रिचा अक्सर समंदर किनारे इसी बड़ी सी चट्टान पर घंटो तक बैठा करते हैं | बिभूति के मन में यही कश्मकश है कि वो इस दोस्ती के रिश्ते को एक प्यार भरे रिश्ते में, जीवन भर के साथ में बदलना चाहता है और अब तक यह रिश्ता उस राह पर बढ़ ही नहीं पाया है | रिचा को खो देने की घबराहट से बिभूति अंदर ही अंदर परेशान रहने लगा है और आज बिभूति ने ठान ही लिया है कि आज इस दोस्ती को ख़त्म करके एक नए रिश्ते को जन्म देगा |

"रिचा... बोलो ना ?"

रिचा हँसकर पूछती है,

"क्या बोलूँ ?"

"यही कि, तुम मेरे बारे में क्या सोचती हो ?"

रिचा को अंदाज़ा ही नहीं है कि बिभूति ने यह सवाल क्यों किया है | वो सहज भाव से कहती है कि वो बिभूति को एक बहुत ही अच्छा इंसान समझती है | उसका जवाब बिभूति की हौसलाअफज़ाई करता है और बिभूति आख़िरकार वो बेशकीमती प्रस्ताव रिचा के सामने रख ही देता है,

"तो क्या तुम मेरी जीवनसंगिनी बनोगी ?"

जैसे अचानक से चलती हुई गाड़ी को किसी ने रोक दिया हो, बहती नदी को किसी ने थाम लिया हो, वैसे ही रिचा, जो लहरों के संगीत का आनंद ले रही थी किसी ने जैसे उस संगीत को बंद कर दिया| रिचा पहले तो चौंकते हुए नाराज़गी के साथ बोली,

"क्या ?"

फिर स्थिति को सँभालते हुए बोली,

"पहले तुम एक मशहूर लेखक तो बन जाओ | जिस काम के लिए, जो सपना लिए मुम्बई आए हो उसे तो पूरा कर लो, फिर सोचेंगे|"
पर बिभूति के मन में शहनाई का पहला सुर उमड़ा,
"इसका मतलब अगर मैं मशहूर लेखक बन जाता हूँ तो..."
यह हड्डी तो गले में ही फंस गई | कुछ ऐसा ही अहसास रिचा के मन में हो रहा है | उसने बिभूति की गाड़ी को अपने अनुसार मोड़ा और बोली,
"ठीक है, सोचेंगे ना... देखो न अँधेरा हो गया है | चलो घर चलते हैं | कल सुबह ७ बजे शूट है और तुम्हें भी तो ऑफिस जाना है?"
ऐसा कहकर रिचा उठ जाती है और बिभूति की आँखों के सामने आहिस्ता-आहिस्ता सूर्यास्त हो जाता है |

*

बिभूति ऑफिस के काम में व्यस्त है तभी राधिका का फ़ोन आता है | बिभूति, राधिका से उसका हालचाल पूछता है पर राधिका सीधे मुद्दे पर आती है,
"तुमने अपनी पटकथा 'तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी' को बेच दिया और मुझे बताना भी ज़रूरी नहीं समझा ?"
"कौन करता है यह सब बकवास तुमसे ? मुझे ऐसा मज़ाक बिलकुल पसंद नहीं है |"
राधिका का स्वर भी थोड़ा-सा ऊंचा है,
"एक काम करो, इस महीने की फ़िल्म वर्ल्ड की नई पत्रिका देखो जिसमे एक मुख्य लेख में छपा है कि बॉलीवुड निर्माता आसिम मल्लिक एक नई लड़की रिचा सिंह को उसी की लिखी हुई पटकथा

'तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी' पर बन रही फ़िल्म में बतौर लेखिका और नायिका बॉलीवुड में उतार रहे हैं |"

अब बिभूति चौंकता है,

"क्या कहा ? कौन है लेखक ?"

"रिचा सिंह |"

इतना सुनकर ही बिभूति के चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है | राधिका गुस्से में है, वो आगे कहती है,

"और तुमने, अपनी पटकथाएँ बेचने के लिए उस लड़की पर भरोसा किया था, क्यों ?"

बिभूति के शब्दों में जान नहीं हैं,

"नहीं... मेरा मतलब हाँ |"

राधिका बताती है कि पत्रिका में एक तस्वीर छपी है जिसमे आसिम मल्लिक, रिचा सिंह और आदी कोहली हैं | वो बिभूति पर नाराज़गी व्यक्त करतीं है |

"तुम तस्वीर देखकर ही जान जाओगे कि वो कितनी शातिर और घटिया लड़की है | दोस्त समझते हो ना तुम उसे और उसने इस फ़िल्म के बारे में तुम्हें बताया भी नहीं |"

लेखक होने के बावजूद आज बिभूति के पास कुछ कहने को शब्द नहीं है, वो बस इतना ही कहता है,

"मैं बाद में बात करता हूँ | कहीं जाना है काम से |"

इतना कहकर बिभूति फ़ोन काट देता है | बिभूति जिस कॉपी पर लिख रहा है उसे दोनों हाथों से बंद करता है |

लिफ़्ट का दरवाज़ा खुलते ही आदी और रिचा मज़ाक मस्ती करते हुए बाहर आते है | आदी फ्लैट के दरवाज़े की चाबी निकालता है और फ्लैट का दरवाज़ा खोलता है | जैसे ही वो अंदर जाते है उन्हें

अहसास हो जाता है कि बिभूति अंदर है क्योंकि बिभूति के कमरे की बत्ती जल रही है और रोशनी बाहर आ रही है | आदी और रिचा दोनों बिभूति के कमरे की तरफ़ धीरे-धीरे बढ़ते हैं | बिभूति मेज के पास बैठा है और उसकी गोद में फ़िल्म वर्ल्ड पत्रिका पड़ी हुई है | आज पहली बार रिचा को बिभूति की आँखों में देखने की हिम्मत नहीं हो रही पर आदी स्थिति को सँभालने की कोशिश करता है,

"यह देखो, तुम बिभुतिजी को खुशखबरी देकर चौंकाना चाहती थी और उन्होंने हमें ही चौंका दिया |"

रिचा बिना एक पल गवाय बिभूति की कुर्सी के पास आकर ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ जाती है और बिभूति का हाथ अपने हाथ में ले लेती है,

"नाराज़ होंगे न मुझसे ? मैंने इतनी बड़ी बात तुमसे अब तक क्यों नहीं बताई ? पर मैं सच में चाहती थी कि एकबार सबकुछ निश्चित हो जाए फिर यह खुशखबरी तुम्हें दूँ | पता है, बिभू, आदी तुम्हारी पटकथाओं को लेकर ना ज़ाने कितने फ़िल्म निर्माताओं से मिल चुका था पर फिर भी कोई सफलता नहीं मिली | मुझसे भी जो बन सकता था मैंने भी हर संभव कोशिश की पर कुछ हाथ नहीं लगा | मुझसे यह भी सहन नहीं हो रहा था कि तुम फ्लैट का किराया और बाकी खर्चे उठाने के लिए दिन-रात कितनी मेहनत कर रहे हो..."

रिचा कनखियों से आदी को देखती है और अपने आँसुओ को पोंछती हुई आगे कहती है,

"मुझे दिन-रात बस तुम्हारा ही ख्याल रहता था | मैं चाहती थी कि हमारे पास अच्छा ख़ासा पैसा हो ताकि हम दोनों साथ रह

सके| मैं जानती हूँ कि तुमने मुझे अपनी तकलीफ़ के बारे में कभी नहीं बताया पर मैं महसूस कर सकती थी कि तुम्हें पैसों की कमी के कारण कितनी परेशानी हो रही है |"

रिचा की भावनाएँ और आँसू दोनों एकसाथ बह रहे हैं और आदमी अगर पत्थर का भी हो तो औरत के आँसुओ से पिघल ही जाता है और फिर बिभूति तो रिचा से प्रेम करता है | रिचा आगे कहती है,

"तभी मुझे आसिम मल्लिकजी की याद आई जिनसे मैं एक दोस्त के ज़रिए कुछ पार्टियों में मिल चुकी थी और वो मुझसे बहुत प्रभावित भी थे | उन्होंने तो मुझसे वादा भी किया था कि अगर मेरे पास मेरी लिखी हुई कोई पटकथा होगी तो वो उसपर ज़रूर फ़िल्म बनायेंगे पर उस वक्त तो मेरे पास कोई पटकथा नहीं थी| जब आदी ने भी हाथ खड़े कर दिए कि उससे कुछ नहीं हो सकता और मुझे भी हमारी पटकथाओं को बेचने का कोई और रास्ता नहीं सुझा तो फिर मैंने आख़िर हिम्मत करके आसिमजी को फ़ोन कर ही दिया |"

बिभूति के मन के कागज़ पर राधिका ने जो कुछ लिखा था वो अब मिटने लगा है और रिचा की बाते छपने लगी है | रिचा आगे बताती है,

"मैंने आसिमजी को उनका वादा याद दिलाया तो वो तुरंत राज़ी हो गए, बस उनकी एक ही शर्त थी कि पटकथा मेरी ही लिखी हुई हो | मुझे उस वक़्त कुछ समझ नहीं आ रहा था |"

रिचा फिर से अपनी आँखें पोछती है और आदी बस दर्शक की तरह इस दृश्य के मज़े ले रहा है |

"बिभू मैं इस मौके को गंवाना नहीं चाहती थी | मैंने यही सोचा कि हम दोनों तो एक ही हैं और यह हमारी ही पटकथा, हमारी ही

फ़िल्म, हमारी ही खुशिया हैं | यही सोचकर मैंने उनसे कह दिया कि मैं ही तन्हाई की लेखिका हूँ और तुम तो जानते हो ना बिभू, मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दे सकती पर अगर तुम कहो तो मैं अभी आसिमजी को फ़ोन करके सब सच सच बता देती हूँ |"
रिचा, बिभूति की गोद में सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगती है और इक्कीसवी सदी के प्रेमी बिभूतिभूषण नाग का हृदय परिवर्तन हो जाता है | वो बड़े प्यार से उसका चेहरा अपने हाथों में लेकर उसके आँसू पोछता है | आदी, रिचा की तकलीफ़ और दर्द देखता रह जाता है | बिभूति भी सहमती जताते हुए बड़े प्यार से रिचा से कहता है,
"हाँ रिचा | मुझे इस बात की ख़ुशी है कि मेरी पटकथाएँ फ़ाईलो में पीली पड़ने की बजाय उन पर फ़िल्म बनेगी | मुझे इस बात का ज़रा भी गम नहीं है कि मेरी लिखी हुई पटकथा में बतौर लेखक तुम्हारा नाम हैं क्योंकि हम एक ही तो हैं |"
आदी छत की और देखकर चैन की सांस लेता है तभी बिभूति को कुछ याद आता है,
"अरे हाँ, मेरे हाथों से लिखी हुई पटकथाओं वाली फ़ाइलें और लैपटॉप नहीं दिख रहे ? कहाँ रखे हैं ?"
आदी तुरंत कहता है,
"वो फ़ाईलें तो हमने फाड़ कर फेंक दीं |"
बिभूति की अमानत स्वाहा हो गई |
"फ़ेंक दी ?"
बिभूति बस इतना ही पूछ पाता है कि आदी तुरंत सफाई देता है,
"सारी पटकथाएँ तो अब लैपटॉप में सुरक्षित हैं तो उन फ़ाईलो और कागजों के ढ़ेर की कोई ज़रूरत नहीं थी |"

रिचा भी आदी की बात का समर्थन करती है,
“वो फ़ाइलें कितनी पुरानी और गंदी हो गई थी और देखो अब यह मेज कितनी सुंदर दिख रही है |”
आदी आगे कहता है,
“बस, अब फ़िल्म शूटिंग शुरू हो जाए, पैसे मिल जाए और सबसे अहम बात यह है कि रिचा की पटकथा मेरा मतलब आपकी लिखी हुई जो रिचा के नाम से है, उस पटकथा पर न सिर्फ़ फ़िल्म बन रही है बल्कि आसिमजी तो तन्हाई के बाकी के दोनों हिस्सों पर भी फ़िल्म बनाने को राज़ी हो गए हैं | कोई दिक्क़त तो नहीं है न बिभूतिजी ?”
बिभूति बड़े गर्व से,
“जब तक रिचा खुश है तब तक कैसी दिक्क़त ?”
यह सुनते ही रिचा खुश होकर बिभूति से लिपट जाती है | आदी कहता है,
“अब तो इस बात पर एक जश्न होना चाहिए पर हाँ इस बार पार्टी का खर्चा मैं उठाऊंगा |”
आदी की बात सुनकर रिचा की आँखों में एक गुमान भरी चमक आ जाती है | माहौल में खुशियों का संगीत बजता है |

११. धोखा

एक बार जब देर रात को बिभूति ऑफिस से अपने किराए के फ्लैट में लौटता हैं तब राधिका का फ़ोन आता है | राधिका को यह बात बिलकुल अच्छी नहीं लगती कि बिभूति, रिचा को इस फ़िल्म की पटकथा के लिए बतौर लेखिका का नाम देने पर राज़ी हो गया | राधिका के पूछने पर बिभूति इसका कारण बताता है,
"रिचा मुझे बॉलीवुड में स्थापित होने में मदद कर रही है और वैसे भी क्या हम इन सबके बारे में बाद में बात कर सकते हैं ? क्योंकि मैं बहुत थक चुका हूँ यह सब सुन सुनकर ?"
राधिका, बिभूति को याद दिलाती है कि बिभूति की नज़र में शायद वो ग़लत हो पर क्या उसे इतना भी पूछने का अधिकार नहीं है ? उसने भी तो बिभूति के साथ इस पटकथा को लिखने में कितनी मेहनत की थी | यह सुनकर बिभूति चिढ़ जाता है और कहता है, "बड़ी मेहरबानी की, पर धन्यवाद | और हाँ, मैं अपना अच्छा बुरा समझ सकता हूँ |'
बिभूति झुंझलाकर फ़ोन बंद कर देता है | कहते हैं कि समय पंख लगा कर उड़ता है | देखते ही देखते कब एक साल बीत गया पता ही नहीं चला |
राधिका आज भी बिभूति को फ़ोन करती रहती है | उसे चिंता है बिभूति की | अब तो राधिका की बात सुनते सुनते अचानक बिभूति

का गुस्सा फूट पड़ता है |
"एक साल हो गया है और तुम्हारी सुई उन्ही घिसीपीटी बातों पर अटकी हैं ? वही शिकायतें | अगर मुझसे कोई परेशानी हैं तो मुझे फ़ोन ही मत करो |"
राधिका के दिल को धक्का सा लगता है,
"इतने सालों के रिश्ते को भुला दिया तुमने ? तुम्हें क्यों दिखाईं नहीं देता कि रिचा सिर्फ़ तुम्हें इस्तेमाल कर रही है ? तुम्हारे दिल-दिमाग पर क़ाबू कर दिया है उस लड़की ने ?"
राधिका अपने दिल का दर्द बयाँ करती है पर बिभूति के कान और मन राधिका को कहाँ सुन पाते हैं |

बिभूति, आसिम से कहता है,
"मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं था कि राधिका क्या कह रही है बल्कि उस रात उसका दिल दुखाने के बावजूद मैं ख़ुद को आज़ाद महसूस कर रहा था |"
कहते कहते बिभूति फिर से अतीत में चला जाता है,

"रिचा को हर बार बीच में लाने की कोई ज़रूरत नहीं है | वो तुमसे हर मामले में बेहतर है, महत्वकांक्षी है | तुम्हें मेरी माँ बनने की कोई ज़रूरत नहीं है |"
राधिका को ऐसा महसूस हो रहा था कि आज वो बिभूति के बजाय किसी अजनबी से बात कर रही है क्योंकि जिस बिभूति ने कभी राधिका से ऊंची आवाज़ में बात तक नहीं की वो आज ऐसी बातें कर रहा है | फ़ोन पर बातें करते करते बिभूति बाहर जाने के लिए तैयार हो रहा है | राधिका अंदर से बहुत टूट चुकी है,
"तुम ऐसे कभी नहीं थे | इन सबकी वजह भी वो लड़की है..."

तभी बिभूति फ़ोन ही बंद कर देता है और राधिका वहाँ सिर्फ़ 'हेलो-हेलो' करती रह जाती है |

ट्रेन की खिड़की से बाहर देखते हुए बिभूति, आसिम से कहता है, "राधिका ही मेरी सबसे पुरानी और बेहद क़रीबी दोस्त थी | हालाँकि, वो रिचा जितनी ख़ूबसूरत तो नहीं थी पर एक समझदार दोस्त तो बन ही सकती थी | मेरा गुस्सा करना भी जायज़ था क्योंकि मैं रिचा के बिना एक पल भी नहीं रह सकता था और मुझे पूरा अधिकार था यह चुनने का कि मैं किसके साथ रहूँ या किसके साथ नहीं | उस दिन शाम को जब मैं रिचा के फ्लैट पर पहुँचा और मेरे पास जो डुप्लीकेट चाबी थी उसीसे दरवाज़ा खोलकर अंदर चला गया | मैं रिचा को यह खुशखबरी देना चाहता था कि मैंने फ़ैसला कर लिया है रिचा से शादी करने का और अपने माता-पिता को भी यह आख़िरी फ़ैसला सुनाने का, फिर चाहे वो स्वीकृती दे या नहीं |"
कहते-कहते यकायक अतीत की यादें बिभूति को गुमसुम कर देती हैं और उसकी आँखों में अतीत की एक-एक घटना उभर आती है|

बिभूति, रिचा के कमरे की और चुपके से बढ़ता है | कमरे का दरवाज़ा अंदर से बंद नहीं है और अंदर से संगीत की आवाज़ आ रही है | बिभूति धीरे से दरवाज़े को ढकेलता है और रिचा को चौंकाने के बदले अंदर का नज़ारा देखकर वो ख़ुद ही चौंक जाता है | आदी और रिचा पलंग पर अंतरंग अवस्था में एकदूजे से लिपटे हुए हैं | बिभूति तुरंत ख़ुद को दीवार के पीछे छिपा देता है पर उसके दिल में उसने जो दुनिया बसाई थी और इस लम्हे

ट्रेन की खिड़की से बाहर देखते हुए बिभूति, आसिम से कहता है, "मैं रिचा को यह खुशखबरी देना चाहता था कि मैंने फ़ैसला कर लिया है रिचा से शादी करने का और अपने माता-पिता को भी यह आख़िरी फ़ैसला सुनाने का, फिर चाहे वो स्वीकृती दे या नहीं।"

में जिस तरह से वो धराशाई हुई है, उसकी तकलीफ़, उसका दर्द वो नहीं छिपा सकता | बिभूति के लिए जैसे सबकुछ ख़त्म हो गया है और इस दुनिया में वो बिलकुल अकेला रह गया है | परंतु, अभी जो देखा वो काफ़ी नहीं था | आदी और रिचा दोनों मस्ती कर रहे हैं और साथ ही साथ बिभूति का मज़ाक भी उड़ा रहे है | बिभूति दोनों की बातें सुनता हैं और रिचा के मुँह से अपनी शिक़ायत सुनकर भौचक्का रह जाता है | रिचा, आदी के बालो में हाथ घुमाते हुए शिक़ायत करती है,

"तुम्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता होगा क्योंकि मुझे उस बिभूति को झेलना पड़ता है | मैं इन देसी गंवार लोगों को खूब समझती हूँ | इन्हें वक़्त बिताने के लिए जवान लडकियाँ चाहिए होती हैं पर यह भूत थोडा सा अलग है | वो मरा जा रहा है मुझसे शादी करने के लिए | पर बस, मैं अब और रासलीला नहीं रचा सकती उसके साथ और कुछ भीं करके जल्द से जल्द यह नाटक बंद कराओ |"

रिचा की यह लीला देखकर, बिभूति का चेहरा आँसुओं से गीला हो जाता है | आदी हँसते हुए कहता है,

"जो भी हो पर जिस तरह से, डेढ़ साल से उस पागल प्रेमी को संभाल रही हो उससे यह तो साबित होता है कि तुम कलाकार तो कमाल की हो | कभी-कभी तो मैं भी सोच में पड़ जाता हूँ कि कही मेरी रिचा किसी और के प्यार में तो नहीं पड़ गई | बस १५ दिन और वर्ना सारी योजना पर पानी फिर जाएगा |"

रिचा गुस्से से,

"तुम्हारी योजना के चक्कर में वो मेरे साथ परिवार योजना तक पहुँच चुका है | पिछली बार तो उसने मेरे होठों पर चुंबन... उसकी जुर्रत कैसे हुई ऐसा करने की ? ना चाहते हुए भी मुझे उसके

सामने मुस्कुराना पड़ता है | आदी, मैं अब और उसकी लैला नहीं बन सकती | बस, बहुत हो गया |"
आदी, रिचा को समझाता है,
'रिचु, बात को समझो | अगर कही कुछ गड़बड़ हो गई और आसिमजी को पता चल गया तो वो भड़क जायेंगे | एक बार फ़िल्म को पर्दे पर आ जाने दो बस फिर बियर की मक्खी की तरह उसे निकाल कर फेंक देना | मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता |"
"बियर नहीं, दूध की मक्खी की तरह बिभूति को अपनी ज़िंदगी से निकाल कर फेंक दूंगी |"
दोनों हँसने लगते हैं | बिभूति भला अब इससे ज़्यादा क्या बेईज्जत होता | क्रोध और दर्द में वहाँ से तुरंत चला जाता है पर जाते जाते उसके हाथ से कमरे के दरवाज़े को धक्का लग जाता है |
"कुछ सुना तुमने ? शायद कोई था ? कहीं बिभूति तो नहीं ? मैं देखता हूँ अभी..."
आदी तुरंत पलंग से नीचे उतर कर बाहर आता है | फ्लैट के मुख्य दरवाज़े तक आकर देखता है और फिर गुस्से में रिचा के कमरे में लौटता है,
"बेवकूफ़... तुमसे हज़ार बार कहा था कि उस बिभुतिये से फ्लैट की डुप्लीकेट चाबी ले लो |'
रिचा जब पूछती है कि क्या वो बिभूति ही था तब आदी का पारा सातवें आसमान पर पहुँच जाता है,
"हाँ, वही था और अगर मेरा खेल ख़राब हुआ तो तुम्हारा खेल ख़त्म कर दूंगा, मार डालूंगा तुम्हें | समझी ?"
रिचा ने आदी को इतना गुस्से में पहली बार देखा है | वो बहुत डर जाती है |

"मैंने कहा था ना तुमसे कि हमें चौक्कना रहना होगा ? पर नहीं, बाज़ारू हरकतों से बाज़ नहीं आती तुम | बोलो ?"
आदी गुस्से में रिचा की नक़ल करते हुए,
"आदी मेरी जान, कहाँ हो ? तुम्हारी याद आ रही है | आओ ना मेरे पास | तुम्हारे पास ? देख लिया पास आने का नतीजा ?"
रिचा डरते हुए आदी से हाथ जोड़कर माफ़ी माँगती है और उसको मनाने की कोशिश करती है |

*

बिभूति के तो हाथ पैर ही जैसे सुन्न पड़ गए हों और बस एक लाश की तरह वो सड़क पर चल रहा हो |

वो आसिम से कहता है,
"तब मुझे अहसास हुआ कि राधिका कितनी सही थी | मैं रिचा के हाथों की कठपुतली बन गया था और इस वजह से मुझे अपने आप पर बहुत गुस्सा आ रहा था बल्कि अपने आप से नफ़रत सी हो रही थी |"

रास्ते पर चलते चलते बिभूति को अचानक आदी की बात याद आती है कि अगर आसिमजी को पता चल गया तो वो भड़क जायेंगे |

बिभूति, आसिम से कहता है,
"तभी मुझे यह उपाय सुझा कि आपसे मिलकर सारी सच्चाई बता दूँ |"

आसिम को चक्कर आ रहे हैं, वो ट्रेन की खिड़की पर सिर टिकाते हैं |
"आप सो रहे हैं ?"
"मैं सो नहीं रहा, मुझे चक्कर आ रहे हैं पर मैं सुन रहा हूँ | आगे बोलो |"
बिभूति आगे कहता है,
"जैसा कि मैं उस रात को आपसे मिलने भी आया था पर आपने आदी को बुला लिया और उसने मुझे सच बताने ही नहीं दिया | कार पार्किंग में भी आपने वादा किया तो वादानुसार मैं अगले दिन ठीक समय पर आपके ऑफिस पहुँच गया था पर आप जानबूझकर मुझसे नहीं मिले | डेढ़ साल पहले जबसे मैं रिचा से जुड़ा तबसे लगातार मूर्खता के सारे कीर्तिमान तोड़ने के बाद, अंदर से इतना टूट गया था कि मेरे पास एक ही रास्ता बचा था, पुलिस |"

*

बिभूति पुलिस थाने के बाहर पहुँच चुका है | जैसे ही वो पहला क़दम अंदर रखता है, उसके मोबाइल की घंटी बजती है और वो फ़ोन उठाता है | दिनेश गुप्ता सभागृह में है और बिभूति से पूछता है कि वो कहाँ हैं सुबह से ? बिभूति उसे टालना चाहता है पर दिनेश शायद बहुत गुस्से में है,
"सारे ज़रूरी काम छोड़कर सीधे ऑफिस पहुँचो | सर सुबह से तुम्हें ढूंढ रहे हैं और ऊपर से तुम्हारा मोबाइल भी बंद था | वो सारा गुस्सा मुझ पर उतार रहे हैं | युएसए नासा से भारत के ही एक बहुत बड़े वैज्ञानिक डॉ. मेहर्नोश देबू के साथ हमारी विशेष चर्चा होनेवाली है | वो शीतनिद्रा की प्रक्रिया पर बात करेंगे | कल

चेयरमैन सर को इसका हिन्दी अनुवाद देना है इसीलिए मुझपर मेहरबानी करो और एक घंटे में सभागृह पहुँचो |"
बिभूति ने आज तक ऐसी असमंजस की स्थिति, ऐसी बैचेनी कभी महसूस नहीं की | वो दो पल के लिए अपनी आँखें बंद कर देता है |
बिभूति रात को अपने फ्लैट में है और डॉ. मेहर्नोश द्वारा 'मानव को शीतनिद्रा में भेजने के लिए वैज्ञानिकों की भविष्य की योजनाएँ, इत्यादि पर दिए गए भाषण का हिन्दी में अनुवाद कर रहा है |

बिभूति, आसिम से कहता है,
"मैं लाख कोशिशे करने के बावजूद भी अपने काम में ध्यान नहीं दे पा रहा था क्योंकि मुझे बारबार रिचा का ख्याल परेशान कर रहा था | मैं केवल एक बार उससे मिलकर कुछ सवाल पूछना चाहता था | मुझे यह यकीं था कि रिचा ने मेरे साथ कोई विश्वासघात नहीं किया बल्कि वो ज़रूर उस पियक्कड़ आदी के दबाव में यह कर रही थी | मै सिर्फ़ एक बार रिचा से अकेले में मिलकर सच्चाई जानना चाहता था | मैं इसी बारें में सोचता रहा और मुझे पता ही नहीं चला कि कब मैं अपने फ्लैट से निकला और रिचा की बिल्डिंग तक पहुँच गया|"

बिभूति जब अपने ख्याल से निकल कर बाहर आता है और देखता हैं कि वो रिचा की बिल्डिंग के बाहर खड़ा है और इतनी रात को चौकीदार भी कहीं नज़र नहीं आ रहा, ना ही आदी की मोटरसाइकिल दिख रही है तब बिभूति चुपचाप रिचा की बिल्डिंग के अंदर चला जाता है |

१२. बदला

बिभूति, रिचा के फ्लैट के बाहर पहुँच कर अपने बटुए में से डुप्लीकेट चाबी निकालता है और उससे चुपचाप दरवाज़ा खोलता है ताकि कोई आहट न हो | वो धीरे धीरे रिचा के कमरे की ओर बढ़ता है पर मन में एक अनजाना डर भी है कि इस बार भी आदी और रिचा एकसाथ ना हो या ऐसी स्थिति में ना हो कि बिभूति बर्दाश्त भी ना कर सके इसीलिए वो आहिस्ता-आहिस्ता कमरे की ओर बढ़ते हुए दरवाज़े से कमरे में झांकता है | रिचा पलंग पर पेट के बल लेटी हुई है यानि कि उसकी पीठ दरवाज़े की तरफ़ है |
बिभूति, रिचा को किसी के साथ मोबाइल पर बात करते हुए सुनता है,
“तू चिंता मत कर यार | आदी हमेशा पीने के बाद शेर बन जाता है और बड़ी बड़ी बातें चालू हो जाती हैं पर सच में तो वो एक मच्छर भी नहीं मार सकता |”
तभी बिभूति के हाथ से दरवाज़े पर हल्की सी आहट होती है और रिचा को लगता है कि आदी घर आ गया है इसीलिए वो बिना पीछे मुड़े फ़ोन पर कहती है,
“आदी आ गया है | अमृता मैं तुमसे बाद में बात करती हूँ | ठीक है |”
रिचा फ़ोन काट देती है और पीछे मुड़कर बिभूति को अचानक इतनी देर रात कमरे में देखते ही डर जाती है | बिभूति पलंग की

रिचा बिना पीछे मुड़े फ़ोन पर कहती है, "आदी आ गया है। अमृता मैं तुमसे बाद में बात करती हूँ। ठीक है।"

ओर बढ़ने लगता है, आज उसकी आवाज़ में रूखापन है,
"तुम तो हमेशा से आदी को ही प्यार करती थी ? बोलो?"
रिचा तुरंत उठकर पलंग के एक ओर बैठ जाती है और रूखेपन से ही जवाब देती है,
"प्यार सोच समझ कर नहीं किया जाता |"
"बिलकुल सच कहा तुमने | तुम उस आदी जैसे घटिया इंसान से प्यार नहीं कर सकती | तुम सिर्फ़ उसके आकर्षण में थी | वो निहायती बुरा इंसान है और उसने तुम्हें भी अपने जैसा कर दिया है | मैं जानता हूँ कि तुम उससे छुटकारा पाना चाहती हो पर उससे डरती हो | कभी-कभी तो मेरा दिल करता है कि मैं ही उसे मार डालूँ |"
रिचा ने बिभूति का यह अजीब रूप पहले कभी नहीं देखा, एक भयानक, विकृत, रहस्यमई रूप | वो ख़ुद को बड़ा कमज़ोर महसूस कर रही है, फिर भी वो हिम्मत करके पूछती है,
"यहाँ क्यों आए हो ?"
बिभूति, रिचा की आँखों में घूरते हुए,
"मैं जानता हूँ रिचा कि हक़ीक़त में तुम सिर्फ़ मुझसे प्यार करती हो, बस आदी से डरती हो | अब आदी से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है | चलो शादी कर लेते हैं |"
रिचा का दिल तो कर रहा होगा कि बिभूति का मुँह तोड़ दे पर वो अकेली लड़की, इसीलिए अपने डर और गुस्से को टालते हुए बिभूति को फुसलाने की कोशिश करती है,
"पर तुम्हारे घरवाले तो राधिका से तुम्हारी शादी करवाना चाहते हैं?"
रिचा के प्रेम में पागल बिभूति झुंझलाकर कहता है,

"अब मैं तुम्हारे बिना एक पल भी अपनी ज़िंदगी की कल्पना नहीं कर सकता | यह मेरी ज़िंदगी है और मुझे संपूर्ण अधिकार है अपना जीवनसाथी चुनने का | मेरा यही आख़िरी फ़ैसला घरवालों को भी बता दूंगा फिर चाहे वो राज़ी हो या ना हो पर शादी तो अब सिर्फ़ तुम्हीं से करूंगा |"
रिचा पलंग पर थोड़ी सी पीछे खिसक जाती है और तकिये में अपना मुँह छिपा लेती है | बिभूति देखता है कि रिचा सिसकिया ले रही है | वो भी पलंग पर उसके पास बैठ कर उसके कंधे पर अपना हाथ रख देता है | बिभूति से रिचा का यह हाल देखा नहीं जाता वो उसे शांत करने की कोशिश करता है,
"रिचा मैं तुम्हारी भावनाओ को समझता हूँ | हम सब जाने अनजाने कितनी ही गलतियाँ करते हैं और वैसे भी जो कुछ हुआ मुझे उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता | हम नए सिरे से ज़िंदगी की शुरुआत करेंगे और देखना तुम भी उस आदी को आसानी से भुला सकोगी | हम अब शादी कर लेंगे | बस रिचा , अब रोना बंद कर दो |"
रिचा अपने चेहरे से तक़िया और कंधे पर से बिभूति का हाथ झटकते हुए कहती है,
"मैं रो नहीं रही बल्कि तुम पर हँस रही हूँ बेवकूफ आदमी |"
बिभूति आश्चर्यचकित होकर तुरंत पलंग से नीचे उतर जाता है और रिचा को देखता रहता है | रिचा कहती है,
"तुमने बेवकूफी में भी एक कीर्तिमान बनाया है जो शायद ही कभी कोई तोड़ पाएगा |"
बिभूति को यह सुनकर एक सदमा-सा पहुँचता है,
"रिचा यह कैसी बात कर रही हो ?"
रिचा, आज अपने दिल की भड़ास निकाल ही देती है,

"जब से तुमसे मिली हूँ, मैं तुम्हारे मुँह पर हँसना चाहती थी | तंग आ गई थी तुम्हारी प्रेम-कहानी से |"
बिभूति सोच भी नहीं सकता था कि रिचा के मन में उसके लिए इतनी नफ़रत है |
"और क्या कहा तुमने ? तुम आदी को मारोगे ? सिर्फ़ सोच के देख लो वो तुम्हारे शरीर की एक-एक हड्डी गिना देगा तुम्हें | असली मर्द है वो | तुम मुझसे शादी करोगे, तुम ? चले जाओ यहाँ से अपनी यह गंवार सी सूरत लेकर | अभी के अभी निकल जाओ मेरे घर से |"
रिचा की एक-एक बात बिभूति के आत्मसम्मान पर, हर उस अहसान पर जो बिभूति ने किये थे, एक तमाचा है | बिभूति की नस-नस में एक पागलपन, एक तड़प सी है और वो रिचा की और बढ़ रहा है | रिचा, बिभूति को उसके पास ना आने के लिए चेतावनी देती है पर बिभूति का पागलपन अब हर पल बढ़ता जा रहा है | बिभूति अपने होश में नहीं है | रिचा से प्यार करने वाला बिभूति शायद रिचा को यह महसूस कराना चाहता है कि जब विश्वासघात होता है तो कितनी तकलीफ़ होती है | अपमानित व मानसिक रूप से खंडित बिभूति पागलपन में तकिया उठाकर रिचा का मुँह दबाने लगता है | वो रिचा का मुँह बंद करना चाहता है ताकि रिचा अब बिभूति के लिए ऐसी कड़वी बातें ना कर सकें |
जीवन में अगर एकाएक आँखों के आगे अँधेरा छा जाए और आस पास की हवा रूक जाए तो जो घुटन, जो बैचेनी महसूस होती है उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ इस वक़्त रिचा को हो रही है, वो साँस नहीं ले पा रही है | रिचा मदद के लिए चिल्लाने की कोशिश करती है | प्यार और विश्वासघात की यह जद्दोजहद जारी है | बिभूति के

हाथ कभी दर्द से मजबूर होकर रिचा का मुँह दबाए रखना चाहते हैं तो अगले ही पल बिभूति का प्यार उन्हें रोक लेता है | तभी अचानक बिभूति को अपनी गलती का अहसास होता है और वो तकिया छोड़ देता है पर फिर पता नहीं क्या होता है कि फिर से तकिया पकड़ कर रिचा का मुँह दबाने की कोशिश करने लगता है| रिचा के फेंफड़ो में ऑक्सीजन की मात्रा घटती जा रही है | उसकी आँखों में आँसू आ गए हैं और आँखें लाल हो गई हैं | यह सब देखकर बिभूति का दिल पसीजता है और उसका प्यार जीत जाता है | बिभूति तकिये को छोड़ देता है और वहाँ से जाने लगता है क्योंकि उसे डर है कि शायद अगली बार बिभूति का प्यार बिभूति को रिचा का मुँह दबाने से रोक ना पाए | कमरे से बाहर जाते-जाते बिभूति आख़िरी मर्तबा रिचा को देखता है | रिचा साँस लेने की कोशिश कर रही है | एक-एक साँस को अपने दिल तक, फेफडों तक पहुँचाने की जी तोड़ कोशिश |

बिभूति तुरंत रिचा के फ्लैट से निकल कर बाहर आ जाता है | वो घबराता और हांफ़ता हुआ बिल्डिंग से नीचे आता है और तभी देखता है कि आदी नशे में धुत्त, बिल्डिंग के चौकीदार के सहारे रिक्शे से उतर रहा है | बिभूति तुरंत वही कार पार्किंग में छिप जाता है | चौकीदार, आदी को लिफ़्ट तक पहुँचने में मदद करता है और यह मौक़ा देखकर बिभूति चुपचाप बिल्डिंग से बाहर निकल जाता है | जैसे-तैसे अपने फ्लैट पर पहुँचते ही बिभूति को राधिका का ख्याल आता है कि उससे बात करे, क्योंकि हो ना हो पर इंसान की अंतरात्मा सच्चे प्यार को पहचानती है | बिभूति ने रिचा से चाहे कितना ही गहरा इश्क़ क्यों ना किया हो पर राधिका के निस्वार्थ सच्चे प्रेम का अहसास हमेशा से ही बिभूति के दिल को

था | इस समय राधिका ही वो इंसान है जो बिभूति को भटकने से, बिखरने से बचा सकती है | यही सोच कर बिभूति भी राधिका से बात करके अपने दिल का बोझ हल्का करना चाहता है | बिभूति को मालूम है कि राधिका ने हमेशा उसे सही रास्ता दिखाया है, उसका साथ दिया है और हमेशा बिभूति का भला चाहा है | बिभूति मोबाइल में देखता है कि रात के क़रीबन १:३० बज चुके हैं पर उसे विश्वास है कि राधिका इस समय भी उससे बात करने से इंकार नहीं करेगी | राधिका को फ़ोन लगाते ही बिभूति का दर्द उसके आँसू बनकर सबकुछ बयां कर देते हैं | राधिका, बिभूति को हौसला देती है कि गलतिया तो सबसे होती हैं और सबकी तरह बिभूति भी एक इंसान ही है | यह दुनिया ज़्यादातर शातिर और धोखेबाज़ो से भरी पड़ी है | बिभूति आज चुपचाप राधिका की बात सुन रहा है और राधिका का एक-एक शब्द बिभूति के टूटे हुए दिल पर मलहम का काम कर रहा है | राधिका, बिभूति को सांत्वना देते हुए कहती है,

"इसमें कोई शक़ नहीं कि तुम एक अच्छे इंसान हो, बस तुमसे इंसानों को पहचानने में ग़लती हो गई थी | पर अब, जब तुम्हें सच का पता चल गया है तो सब ठीक हो जाएगा, क्योंकि अच्छे लोगों के साथ अंत में अच्छा ही होता है और मैं हूँ ना तुम्हारे साथ, मैं सब ठीक कर दूंगी |"

"राधिका...मैंने तुम्हें कितनी तकलीफ़ पहुँचाई है | माफ़ कर सकोगी मुझे ?"

बिभूति के इन शब्दों ने मुम्बई और खड़गपुर, दोनों जगहों पर सावन की झड़ी लगा दी | ऐसा लगता है जैसे दोनों के जीवन में अब खुशियाँ लौट आईं हों |

*

आसिम ट्रेन की खिड़की पर अपना सिर टिकाए बिभूति की बातें सुन रहें हैं | बिभूति आगे कहता है,

“उस रात के बाद पहली मर्तबा मुझे यह अहसास हुआ कि वो खड़गपुर वाला बिभूति, वो आँखों में सपने लेकर, सैकड़ो मील दूर अपने शहर से मुम्बई शहर आया, वो लेखक बिभूति इस मायावी दुनिया में कही खो गया है | मुझे लगा कि मैं हूँ ही नहीं | मैं तो मर चुका हूँ और मेरे अंदर के लेखक को मारनेवाले लोग थे रिचा, आदी और आप | जब शीतनिद्रा यानि कि हाइबरनेशन का अनुवाद कर रहा था तब मुझे लगा कि मुझे अपने अंदर के लेखक के क़ातिलों से बदला लेना होगा और उन्हें भी पल-पल मरने का अहसास कराना होगा और उसी पल मैंने यह तय कर लिया था कि मैं दुनिया के सामने कभी भी यह ज़ाहिर नहीं होने दूंगा कि *‘तन्हाई - लोनली इन अ क्राउडेड सिटी’* का असली लेखक मैं ही हूँ|”

बिभूति कहता रहता है और आसिम थके हुए तन-मन से उसे सुनते रहते हैं |

१३. मिश्रण

बिभूति अब फिर से सामान्य दिनों की तरह ऑफिस जाना शुरू कर देता है | दोपहर का समय है | बिभूति के ऑफिस में एक अन्य केबिन में डॉ. मेहर्नोश ऑफिस के कुछ लोगों के साथ मानवीय शीतनिद्रा के लिए मिश्रण तैयार करने के बारे में चर्चा कर रहे हैं| बिभूति डॉ. मेहर्नोश के केबिन के दरवाज़े के पास खड़ा होकर उनकी बातें सुन रहा है |

"इस मिश्रण का ५ मिलीलीटर, एक इंसान के मेटाबॉलिज़्म को धीमा करके शीतनिद्रा में डाल सकता है | इसका असर मात्र ७२ घंटो तक ही रहेगा और उसके बाद वो इंसान फिर से सामान्य हो जाता है |"

डॉ. मेहर्नोश को महसूस होता है कि कोई केबिन दरवाज़े के पास खड़ा है | वो बिभूति को देखकर पूछते हैं,

"जी कहिए ?"

तब बिभूति वहीं खड़े-खड़े कहता है,

"चेयरमैन साहब ने आपके लिए यह फ़ाइल भिजवाई है |"

"शुक्रिया, वही पास वाली मेज पर रख दो |"

दरवाज़े के पास एक छोटी-सी मेज है जिसपर वो मिश्रण भी रखा हुआ है | बिभूति फाइल को मेज पर रखने के दौरान मिश्रण को ग़ौर से देखता है और फिर वहाँ से चला जाता है |

*

आसिम और बिभूति की ट्रेन पटरियों पर दौड़ती हुई सीएसटी रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर आ जाती है | दोनों ट्रेन से उतरते हैं | प्लेटफ़ॉर्म पर भीड़ है पर सीएसटी रेलवे स्टेशन इतना विशाल है कि उसमे भीड़ भी थोड़ी-सी महसूस होती हैं | आसिम की आँखों में नींद उतर आई है | बिभूति, आसिम की ओर देखकर व्यंग्य भरे अंदाज़ में कहता है,

"आपको मुझपर गुस्सा तो बहुत आ रहा होगा कि आपको आम आदमियों की तरह यात्रा करवाई ? आपका क़ीमती समय बर्बाद किया |"

आसिम को बिभूति की हमदर्दी से कोई मतलब नहीं है,

"अपनी कहानी पूरी करो और मुझे मरने से पहले वो प्रतिरोधक दे दो |"

बिभूति, आसिम को कहता है,

"आप यह चिंता छोड़ दीजिए कि आपको कुछ होगा | राधिका हमेशा कहती है कि अच्छे लोगों के साथ हमेशा अच्छा ही होता है|"

आसिम, बिभूति से पूछते हैं,

"क्या राधिका जानती है कि रिचा की हत्या तुम्हारे हाथों से हुई है?"

बिभूति, आसिम की बात पर बिना ग़ौर किए बताता है,

"नहीं, उसे नहीं पता और वैसे भी अब मैं उसका और दिल दुखाना नहीं चाहता |"

आसिम बिभूति की ओर देखकर,

"क्या तुमने मुझे रिचा के बारे में सबकुछ सच-सच बताया है ? कभी सोचा है कि कल जब सच सामने होगा तब राधिका को

कितना दुःख होगा ?"
बिभूति को अचानक अहसास होता है कि उसने अनजाने में क्या कह दिया | वो तुरंत कहता है,
"कौन सा सच ? आप क्या बात कर रहे हैं ? वैसे भी रिचा का हत्यारा आदी इस वक़्त जेल में बंद है | उसी ने रिचा का खून किया है और क्या डॉलीजी को पता है कि आप रिचा जैसी कईयों के साथ..."
आसिम का चेहरा फ़ीका पड़ जाता है,
"नहीं |"
"तो बस, अपना मुँह बंद ही रखिए |"
आसिम, बिभूति से एक और महत्वपूर्ण सवाल करते हैं,
"तुम्हें नहीं लगता कि तुम अपने ज़िंदगी की सबसे बड़ी भूल करने जा रहे हो ?"
बिभूति चौंकते हुए,
"क्या मतलब ?"
आसिम समझाते हैं,
"अगर तन्हाई का तीसरा हिस्सा तुम्हारी ज़िंदगी पर बनता है तो पुलिस का शक़ यकीं में बदल जाएगा कि रिचा की हत्या तुम्हारे हाथों से हुई है |"
बिभूति आत्मविश्वास से कहता है,
"आपको मेरी कहानी बड़ी अजीब लग रही होगी पर ज़िंदगी कभी कभी हमारी कल्पना से भी ज़्यादा अजीब होती है | इस दुनिया के लिए तन्हाई का तीसरा हिस्सा मेरी ज़िंदगी पर आधारित पटकथा नहीं है बल्कि यह तो ख़ुद रिचा सिंह ने अपनी हत्या से पहले लिखी है | यह बात आप ख़ुद अदालत में स्वीकार चुके हैं और

कॉन्ट्रैक्ट के बकाया १८ लाख रुपये गोवा में पत्रकारों के सामने उसके माता-पिता को भी दे चुके हैं |"

आसिम समझ चुके हैं कि बिभूति कोई साधारण लेखक नहीं है, वो कहते हैं,

"मैं जानता था कि उस दिन अदालत में तुम झूठ बोल रहे थे कि तुम तन्हाई के असली लेखक नहीं हो |"

बिभूति के चेहरे पर एक जीत की खुशी है |

"अगर आप जानते थे तो फिर अदालत में आपने सच क्यों नहीं बोला ?"

आसिम और बिभूति प्लेटफ़ॉर्म पर चलते हुए आगे बढ़ रहे हैं और आसिम कहते हैं,

"आदी जैसे दो कोड़ी के आदमी से मेरा कोई रिश्ता या दोस्ती तो थी नहीं | वो सिर्फ़ कामकाज के सिलसिले में मुझसे जुड़ा हुआ था| सच पूछो तो मैं उससे बहुत तंग आ गया था | और तो और मेरी कंपनी की साख पर बन आई थी | जब उसे गिरफ़्तार किया गया तो अंदर ही अंदर मुझे बहुत ख़ुशी हुई |"

बिभूति कहता है कि

"मैंने अदालत में कभी यह सच नहीं स्वीकार किया की मैं तन्हाई का असली लेखक हूँ क्योंकि मुझे आदी से बदला लेने का इससे अच्छा मौका कभी नहीं मिल सकता था |"

अचानक आसिम की तकलीफ़ बढ़ जाती है और उनके क़दमों की गति बहुत मंद पड़ जाती है | वो गहरी साँस लेने की कोशिश करते हैं |

"तुम्हीं ने मुझे ज़हर दिया है ना ?"

बिभूति भी रूक जाता है,

"हाँ, यह आसान तो नहीं था पर मैं ही हूँ इसके पीछे |"

*

बिभूति चेयरमैन को मानवीय शीतनिद्रा का हिन्दी अनुवाद सौंपने के लिए उनके केबिन में जाता है और चेयरमैन के कहने पर बैठ जाता है | तभी दरवाज़े पर एक दस्तक होती है | डॉ मेहर्नोश जो कि चेयरमैन से विदा लेने के लिए आए हैं, क्योंकि वो आज युएसए लौट रहे हैं और लगभग एक महीने के बाद भारत में लौटकर आयेंगे | चेयरमैन बिभूति को बैठे रहने का इशारा करके ख़ुद डॉ. मेहर्नोश को बाहर तक छोड़ने जाते हैं |

सीएसटी रेल्वे स्टेशन पर आसिम किसी तरह बिभूति के क़दम से क़दम मिलाकर चलने की कोशिश कर रहें हैं | बिभूति उत्सुकता के साथ बताता है,
"आसिमजी शायद क़िस्मत भी मेरा साथ दे रही थी | जिस मौके की मुझे तलाश थी वो मौका मुझे यूँ, इतनी जल्दी, इतनी आसानी से मिलेगा, सोचा भी नहीं था | वो मिश्रण चेयरमैन की मेज पर ठीक मेरे सामने था और मैंने भी बिना एक पल गँवाए अपने बैग से इंजेक्शन निकाला और पलक झपकते ही उसे इंजेक्शन में भरा और फिर लिख दी आपकी क़िस्मत|"
आसिम चौंकते हुए,
"फिर भी तुमने यह सब किया कैसे ?"
बिभूति बताता हैं कि उस रात गोवा के शंगरीला होटल में जब सभी शराब और मस्ती में डूबे हुए थे तब उसने बैरे को जो

बिभूति उत्सुकता के साथ बताता है, "आसिमजी, शायद क़िस्मत भी मेरा साथ दे रही थी। जिस मौके की मुझे तलाश थी वो मौका मुझे यूँ, इतनी जल्दी, इतनी आसानी से मिलेगा, सोचा भी नहीं था।"

मेहमानों की ख़ातिरदारी में अति-व्यस्त था, उसे आसिम का आधा भरा हुआ व्हिस्की की ग्लास दिया और आसिम को देने के लिए कहा |

"बैरे ने एक पल भी नहीं सोचा कि किसको क्या दे रहा है, बस जो मैंने कहा वो उसने कर दिया और आपको भी डोरोथी की ज़ुल्फों के अलावा फ़ुर्सत कहाँ थी कुछ सोचने की ? उसके अगले ही दिन मैं मुम्बई लौट आया |"

बिभूति मुस्कुरा रहा है पर उसकी मुस्कान के साथ उसकी आँखों का रंग मेल नहीं खा रहा, आँखों में एक शातिर इंसानों वाली चमक है |

१४. प्रतिरोधक

आसिम का स्वास्थ्य हर पल गिरता जा रहा है | वो बिभूति के कंधे के सहारे खड़े होने की कोशिश करते हैं ताकि गिर न जाए | दोनों एक खाली बेंच पर बैठ जाते हैं | आसिम को प्लेटफ़ॉर्म पर आने वाली आवाजें, लोगों की चहल-पहल कुछ महसूस नहीं हो रही| वो कंपकपाते होठों से बिभूति से कहते हैं,

"प्रतिरोधक..."

बिभूति, आसिम का आईफ़ोन अपनी जेब से निकालकर उसे चालू करता है और डॉली के मोबाइल पर एक संदेश भेजने के बाद फिर से आईफ़ोन बंद कर देता है |

डॉली भी सीएसटी रेलवे स्टेशन पहुँच चुकी है | वो अपने मोबाइल में आसिम का संदेश पढ़ती है कि *'महिला शौचालय में बुर्के में एक महिला होगी जिसके पास एक छोटा-सा सफ़ेद बैग होगा उसे पैसों वाला बैग देकर तुरंत प्लेटफ़ॉर्म ६ की आख़िरी बेंच पर आ जाओ|'* बिभूति बेंच पर से उठने लगता है तब आसिम जो शायद मौत के बहुत क़रीब पहुँच चुके हैं बिभूति से प्रतिरोधक माँगते हैं | बिभूति एक सुकून भरी साँस लेकर उठता है और आसिम को ५ सेकंड तक देखता है और फिर जाते जाते कहता है,

"प्रतिरोधक ! वो तुम्हारे ही अंदर मौजूद है |"

आसिम को प्लेटफ़ॉर्म पर आने वाली आवाज़ें, लोगों की चहल-पहल कुछ महसूस नहीं हो रही / वो कंपकपाते होठों से कहते हैं, "प्रतिरोधक..."

इतना कहकर बिभूति, आसिम के कोट की जेब में आसिम का आईफ़ोन डालता है और आसिम को उसी हाल में बेंच पर बैठा हुआ छोड़कर आगे बढ़ जाता है | आसिम, बिभूति से कुछ कहना चाह रहे हैं पर उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है |

डॉली महिला शौचालय में एक बुर्के वाली लड़की जिसके पास छोटा-सा सफ़ेद रंग का बैग है उसे पैसों वाला बैग देने के बाद भागती हुई प्लेटफ़ॉर्म ६ की आख़िरी बेंच के तरफ़ आती है | यहाँ बेंच पर आसिम बेहोश पड़े हैं पर इससे पहले कि वो बेंच से गिर जाते तब तक डॉली पहुँच जाती है और मदद के लिए आस-पास से गुज़र रहे यात्रियों को आवाज़ देती है | सभी को यही लगता हैं कि शायद आसिम को दिल का दौरा पडा है और इसीलिए वे आसिम को हॉस्पिटल पहुँचाने का इंतज़ाम करते हैं | दूर से सीएसटी मेन प्लेटफ़ॉर्म के किनारे पर खड़े होकर बिभूति अपना साधारण सा फ़ोन निकालता है और किसी को फ़ोन लगाता है |

*

आज से पाँच साल पहले, बिभूति का फ़ोन उठाकर माँ कहती है,

"चलो, भगवान की दया से तुम राज़ी-खुशी मुम्बई पहुँच गए | अब अपना ध्यान रखना और समय-समय पर हमें फ़ोन करते रहना |"

बिभूति की आँखों में मुम्बई आने का उत्साह साफ़ झलकता है, तभी माँ बिभूति के पिता को फ़ोन दे देती है |

"अच्छा, शर्मा अंकल को फ़ोन किया तुमने ?"

बिभूति बताता है कि उसकी बात शर्मा अंकल से हो गई है और वो कुछ ही देर में बिभूति को लेने के लिए सीएसटी रेल्वे स्टेशन आने वाले हैं | बिभूति आगे कहता है,

“आपलोग मेरी बिलकुल चिंता मत करना और देखना मैं मुम्बई से बहुत सारे पैसे लेकर लौटूंगा |”
बिभूति अपनी यादों में ही खोया हुआ है तभी आज के ज़माने की एक हसीन लड़की, आँखों पर काला चश्मा लगाए, हवा में लहराते बाल और हाथों में डॉली का दिया हुआ ट्राली वाला सूटकेस खींचते हुए बिभूति के बिलकुल क़रीब से गुज़र जाती है और ११ बजकर ०५ मिनट की हावड़ा जानेवाली ट्रेन के टू-टायर एसी डिब्बे के दरवाज़े के सामने खड़ी हो जाती है | एक कूली जो लड़की के आगे आगे चल रहा था जिसके हाथों में एक बड़े बैग के साथ एक छोटा-सा सफ़ेद बैग भी है वो उस एसी डिब्बे में अंदर चला जाता है | कूली के पीछे-पीछे वो लड़की भी दरवाज़े के भीतर चली जाती है | लड़की के हाथ में एक टिकट है, वो ध्यान से डॉली वाले बैग को बर्थ के नीचे ठीक से रखती है और इत्मिनान से खिड़की के पास बैठ जाती है |
कुछ समय बाद सीएसटी मेन प्लेटफ़ॉर्म पर हावड़ा एक्सप्रेस के छूटने की घोषणा होती है | बिभूति अपना फ़ोन अपनी जेब में रख देता है | थोड़ी ही देर में ट्रेन छूट जाती है और भक-भक करके पटरियों पर दौड़ने लगती है | कुछ ही देर में बिभूति ट्रेन के अंदर आकर उस लड़की के पास बैठ जाता है | दोनों एकदूजे को देखकर मुस्कुराते हैं | लड़की अपना चश्मा उतर देती है | दोनों की आँखों में एक तस्सली सी है जैसे अपनी कोई खोई हुई चीज़ आज दुबारा मिल गई हो | लड़की बिभूति के कंधे पर अपना सिर रख देती है और बिभूति भी पीछे सुकून से अपना सिर टिकाकर कहता है
“चलो राधिका, घर चले |”

*

एक हसीन लड़की, आँखों पर काला चश्मा लगाए, हवा में लहराते बाल और हाथों में डॉली का दिया हुआ ट्राली वाला सूटकेस खींचते हुए बिभूति के बिलकुल क़रीब से गुज़र जाती है।

एक छोटे से मॉनिटर पर आड़ी-तिरछी लेकिन सामान्य गति से भागती हुई रेखाए बताती हैं कि हृदय अब सामान्य रूप से काम कर रहा है | हॉस्पिटल के अति-दक्षता वाले कक्ष में आसिम एक पलंग पर लेटे हुए है और डॉली पास ही, एक बिना हाथ वाली कुर्सी पर बैठी है | आसिम अब धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं | डॉक्टर अंदर आते हैं,

"कमाल की बात है ! कल जब आपको यहाँ लाया गया था तो हमें लगा था कि आप मुश्किल से कुछ ही दिन जी पायेंगे पर अब देखिए बिना किसी दवाई या प्रतिरोधक के आप बिलकुल स्वस्थ और सामान्य हो गए हैं |"

आसिम को ख़ुशी भी है, हैरानी भी,

"वैसे डॉक्टर आपको मेरे खून में कुछ नहीं मिला ?"

"कल कुछ अनजान सा तत्व तो मिला था पर वो जैसे ख़ुद ब ख़ुद खून में घुल गया है और रिपोर्ट्स देखने के बाद मैं पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि अब चिंता की कोई बात नहीं है |"

तब आसिम को बिभूति की बात याद आती है जो सीएसटी रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर आख़िरी बार उसने कही थी,

"मैंने आपको जो दिया वो विष जैसा है ही नहीं | बस, उसने आपके मेटाबॉलिज़्म को धीमा कर दिया और आपको लगा कि आप मर रहे हो | घबराईये मत, इसका असर ७२ घंटो तक ही रहेगा | ना मेरे पास कोई प्रतिरोधक है, ना आपको उसकी ज़रूरत हैं | प्रतिरोधक ! वो तुम्हारे ही अंदर मौजूद है |"

आसिम मुस्कुराते हैं,

"मुझे पता है डॉक्टर कि प्रतिरोधक मेरे ही अंदर मौजूद है |"

डॉक्टर भी मुस्कुराते हुए,
"यह तो बहुत अच्छी बात है पर मुझे यह जानना था कि यह जो अनजान सा तत्व था यह आपके शरीर में पहुँचा कैसे ?"
तब आसिम बताते हैं,
"वो तो पहले से ही मेरे अंदर मौजूद था और अब मुझे मेरे दोस्त को धन्यवाद देना होगा |"
डॉ. चुटकी लेते हुए,
"अब जल्द ही आपको हॉस्पिटल से छुट्टी देनी पड़ेगी वर्ना उस अनजान तत्व के असर से आप दार्शनिक बन जायेंगे |"
डॉक्टर, डॉली की ओर देखकर,
"चिंता की कोई बात नहीं है | मल्लिकजी बिलकुल ठीक हैं |"
आसिम खुलकर मुस्कुराते हैं | डॉली, डॉक्टर को धन्यवाद देती है और डॉक्टर के बाहर जाते ही आसिम, डॉली का हाथ अपने हाथ में लेकर डॉली को जी भरकर देखते हैं |
"अब मैं जहाँ भी जाऊंगा तुम्हारे साथ जाऊंगा |"
डॉली, आसिम के हाथ को चूमते हुए पूछती है,
"पर वो दोस्त कौन है ?"
आसिम मुस्कुराते हैं और कहते हैं,
"तुम उसकी तस्वीर कभी भी पेज थ्री पर नहीं देखोगी क्योंकि वो कोई नहीं हैं, जस्ट - नो बडी |"
दोनों एकदूजे को देखकर मुस्कुराते हैं |

१५. डुप्लीकेट चाबी

आख़िरकार सबकुछ सही हो गया | जीवन में मुस्कान लौट आई, रोशनी लौट आई, सिवाय इस तहखाने के जहाँ आदी कोहली बंद है | वो इस भयानक से, काले कारागार में मकड़ी के जालों से बातें कर रहा है,

"इन साले सुस्त, पागल, बेवकूफ लोगों ने मुझे यहाँ क़ैद कर रखा है और असली गुनहगार तो पता नहीं कहाँ मज़े मार रहा होगा | अरे कोई है ? मुझे इंसाफ कौन देगा..."

आदी की चींख़े, उसका पागलपन यूँ ही कई दिनों तक, कई महीनों तक बरक़रार रहता है और देखते ही देखते २ साल बीत जाते हैं |

*

इन दो सालो मैं सिर्फ़ तारीख़ें नहीं बदली बल्कि जिंदगियाँ भी बदल चुकी हैं | राधिका, अब कुमारी राधिका से श्रीमती बिभूति बन चुकी हैं | वो खड़गपुर में ही अपने घर में आज का अख़बार पढ़ रही है और उसकी नज़र पड़ती है एक ख़ास समाचार पर - दिवंगत नायिका और लेखिका रिचा सिंह की याद में 'तन्हाई - द फाइनल चैप्टर' फ़िल्म आज पूरे भारत में प्रदर्शित हो रही है | राधिका पता नहीं क्यों उत्साहित हो जाती है और बिभूति को फ़ोन करती है | बिभूति, खड़गपुर में ही एक तालाब के किनारे बैठा हुआ है और गोर्की के

बिभूति, गोर्की के साथ खड़गपुर में ही एक तालाब के किनारे बैठा हुआ है और पानी में अपने अतीत को देख रहा है।

सुनहरे से बालों में हाथ घुमाते हुए पानी में देख रहा है | बिभूति के मोबाइल की घंटी बजते ही बिभूति पास रखी एक गेंद को हवा में उछालता है और बिभूति का सुनहरे बालो वाला गोर्की तुरंत गेंद की दिशा में भागते हुए जाता है | बिभूति मोबाइल फ़ोन उठाते ही यह सवाल सुनता है,

"आज का अख़बार पढ़ा तुमने ?"

बिभूति पूछता है राधिका को कि ऐसी क्या ख़ास बात है तब राधिका बताती है,

"आज *'तन्हाई - द फाइनल चैप्टर'* फ़िल्म प्रदर्शित हो रही है |"

बिभूति मुस्कुराते हुए,

"अच्छी बात है |"

बिभूति अपने ख्यालो में खो जाता है | थोड़ी देर बाद वो फ़ोन रखकर अपने बटुए से रिचा के फ्लैट की डुप्लीकेट चाबी निकालता है और उसे देखकर मुस्कुराता है | एक गहरी सांस और सुकून के साथ चाबी को तालाब के बीचो-बीच पानी में फेंक देता है और चाबी के साथ रिचा, रिचा से जुडी हुई हर बात, हर याद, बिभूति का अतीत, सबकुछ पानी की गहराई में समा जाता है |

<u>उपन्यासकार के विषय में</u>

अतनु बिस्वास जी, जो दो दशकों से फ़िल्म और टेलीविज़न जगत से जुड़े हुए हैं और इस दौर में बासु चटर्जी के सहायक भी रहे | इन्होने निर्देशक़ संजय लीला भंसाली, जॉय अगस्टाइन और शशी रंजन के साथ भी काम किया है |

अतनु बिस्वास जी दूरदर्शन के लिए अनुपम खेर द्वारा निर्मित एक यात्रा कार्यक्रम का निर्देशन कर चुके हैं | सब-टीवी के लिए प्रतिदिन आने वाला कार्यक्रम "मिस्टर और मिसेस वर्मा की रसोई" का निर्देशन किया है | स्टार प्लस के लिए बालाजी टेलीफ़िल्मस द्वारा निर्मित "कसौटी ज़िन्दगी की" में भी सहायक निर्देशन किया है | पर्यावरण पर आधारित सिद्दार्थ काक द्वारा निर्मित कार्यक्रम "भूमी" का निर्देशन किया है | राजश्री के पोर्टल राजश्री-डॉट-कॉम के लिए शोर्ट फ़िल्मस का निर्देशन भी कर चुके हैं और 'इन-मुंबई चैनल' के प्रोग्रामिंग विभाग में भी कार्य कर चुके हैं |

अतनु बिस्वास जी ने पुणे के नेस वाडिया कॉलेज से पढ़ाई पूरी करने के बाद "भारतीय फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान", पुणे (ऍफ़.टी.आई. आई. के नाम से प्रचलित) से फ़िल्म निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया|

अतनु बिस्वास जी, *"मोंटाज फ़िल्म व टेलीविज़न अकादमी"* के मुख्य संस्थापक और प्रधानाचार्य भी हैं जहाँ वो फ़िल्म निर्देशन, पटकथा लेखन और अभिनय की बारिकियाँ सिखाते हैं |

अतनु बिस्वास जी को 'निर्देशक़ की सर्वश्रेष्ठ प्रथम गैर - कथा चित्र' श्रेणी में उनकी पहली फ़िल्म *"ए लिटिल वार"* (३५ एमएम, ३२ मिनट्स, हिन्दी) के लिए "रजत कमल" राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है ।

आजकल वे एक फ़ीचर फ़िल्म पर कार्य कर रहे हैं ।